



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी त्रैमासिक पत्रिका

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चवालीसवां अंक अप्रैल-जून, 2023

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124





लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चवालीसवां अंक

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका
(अप्रैल-जून, 2023)

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
नई दिल्ली-110124



सरकारी कामकाज हिंदी में करना
कोई बहुत मुश्किल काम नहीं है।

आप शुरू तो कीजिए धीरे-धीरे
आपको लगने लगेगा ये तो बहुत
ही आसान है।





लेखापरीक्षा प्रकाश

एक सौ चवालीसवां अंक (अप्रैल-जून, 2023)

अनुक्रमणिका

	पृ.सं.		पृ.सं.
पत्रिका परिवार एवं संपादकीय	5	5. मन प्रफुल्लित रहे सदा	21
पाठकों के नाम संदेश	6	<i>प्रशांत प्रखर</i>	
आपके पत्र	7	6. ममता की मूरत 'माँ'	25
		<i>डॉ. लाखा राम</i>	
		7. श्री राधा-कृष्ण की लीला और कृपा में भेद	29
		<i>योगेश कुमार मिश्र</i>	
1. स्वभाषा में आत्मनिर्भरता	11	8. कुछ देकर, कुछ पाना मूर्खता नहीं	34
<i>संजीव कुमार</i>		<i>सुश्री वी. चित्रा</i>	
2. मंत्र	14	9. राजभाषा हिंदी और अमृतकाल	36
<i>श्रीमती राजश्री के. शाह</i>		<i>दया सागर</i>	
3. राम सुजस सुखमूल	17	10. हमारा परिचय : एक सनातन	39
<i>सुभाष चंद यादव</i>		कालखंड गणना	
4. एक भारत — श्रेष्ठ भारत का राष्ट्रीय	20	<i>कृष्ण मुरारी जयपुरियार</i>	
एकीकरण में महत्व			
<i>शिवम गुप्ता</i>			

पृ.सं.		पृ.सं.		
11.	ताज के अलावा भी बहुत कुछ दर्शनीय है आगरा में ललित कुमार वर्मा	42		
12.	जिन खोजा तिन पाया पवन कुमार	48		
कहानी				
13.	संताप अमरेंद्र कुमार चौधरी	50		
14.	किस्सा—कहानी विभास चंद्र	52		
15.	सौतेला सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'	62		
यात्रा वृत्तांत				
16.	राजगीर पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत श्री नीतीश कुमार	76		
		कविताएँ		
		17.	वक्त का तकाजा धर्मवीर भारती	82
		18.	चैम्बर से बुलावा श्याम दत्त मिश्रा	83
		19.	पगली—दीवानी मेहरबान सिंह नेगी	84
		20.	गज़ल रामानंद शर्मा	85
		21.	अपने जीवन की गिनती करें एन. मोहनप्रिया	86
		22.	आपकी हंसी गोविन्द कुमार	87
		23.	प्रियतम जितेन्द्र कुमार गंगवार	88
		24.	माँ सुश्री ज्योति यादव	89



स्वत्वाधिकार

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

प्रकाशन

“लेखापरीक्षा प्रकाश”

(त्रैमासिक हिंदी पत्रिका)

प्रकाशक

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
का कार्यालय, नई दिल्ली-110124

एक सौ चवालीसवां अंक

(अप्रैल-जून, 2023)

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री गिरीश चंद्र मुर्मू

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संरक्षक

सुश्री रीमा प्रकाश

अपर उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक

संपादक मण्डल

प्रधान संपादक

श्री भवानी शंकर

महानिदेशक (राजभाषा)

संपादक

श्री अनिल कुमार पिलानी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सहायक संपादक

सुश्री मीनाक्षी

सहायक प्रशासन अधिकारी

श्री हीरा बल्लभ भट्ट

सलाहकार

रचना चयन समिति

श्री अनिल कुमार पिलानी

वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी

सुश्री मीनाक्षी

सहायक प्रशासन अधिकारी

सुश्री रेखा

सहायक प्रशासन अधिकारी

मुद्रक : आकांक्षा इम्प्रेसंस

जी-194, बवाना इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

संपादकीय



आपकी अपनी त्रैमासिक पत्रिका ‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ का एक सौ चवालीसवां (अप्रैल-जून, 2023) अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस पायदान पर पहुंचने में हमें अपने विभागीय रचनाकारों का पूर्ण सहयोग मिला और हमें पूरी आशा है कि आगे भी निरंतर सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

भाषा संप्रेषण का एक सशक्त माध्यम है। यह एक ऐसी विधा है जो वक्ता की हृदयगत भावनाओं को मधुर बना कर दूसरों के सामने प्रकट करती है। ‘रस्किन’ का कथन है कि अन्तरात्मा का उत्थान तथा उसे कलात्मक और आनन्दमय अभिव्यक्ति प्रदान करना ही भाषा का उद्देश्य होना चाहिए। सरल और सुबोध भाषा में अपने विचार प्रकट करना अपेक्षित होता है ताकि श्रोता उसे सरलता से समझ सके। इसके लिए यह आवश्यक है कि भाषा के प्रति लचीला दृष्टिकोण हो। अन्य भाषाओं की शब्दावली तथा रोजमर्रा में प्रयुक्त होने वाले शब्दों का समावेश उदार दृष्टिकोण से किया जाना चाहिए। आम बोल-चाल की भाषा के सरल हिंदी प्रयोग से हिंदी को अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। इस दिशा में फिल्म जगत का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मनोरंजन का एक सुलभ साधन होने से भारतीय फिल्में लोकप्रिय हैं क्योंकि इनमें प्रयुक्त कथोपकथन, कहानी तथा संगीत तीनों ही आम बोलचाल की हिंदी भाषा में होता है। अहिंदी भाषी क्षेत्रों में भी ये फिल्म अत्यंत लोकप्रिय हैं। सरल हिंदी का प्रयोग होने के कारण भारत के हर घर में आज सरल हिंदी बोली और समझी जा रही है।

देश की संस्कृति की पहचान मातृभाषा से ही है। भाषा मात्र शब्द क्रीड़ा नहीं है अपितु यह तो अभिव्यक्ति का ऐसा संप्रेषण है जिसमें कथनी और करनी का कोई भेद नहीं होता है। ऐसी अभिव्यक्ति जिसका सामाजिक सरोकार हो और जिसका रिश्ता आदमी के सुख-दुख से जुड़ा हो। जीवन में आ रहे बदलावों के संकेत भी भाषा से ही मिलते हैं।

राष्ट्रीय एकता और सरल हिंदी प्रयोग का एक सशक्त माध्यम संगीत एवं रचनाएं हैं। सरल हिंदी में राष्ट्र प्रेम, देशभक्ति के गीतों एवं कविताओं द्वारा जनता में राष्ट्रीय एकता की भावना, सहयोग और सामुदायिक विकास का संदेश अत्यंत सहजता से प्रचारित और प्रसारित होता है।

अंत में मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि अपनी प्रतिक्रिया व रचनाएं प्रेषित कर इस पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास में लगातार अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर इसे सुशोभित करते रहें।

आपका शुभाकांक्षी

भवानी शंकर

प्रधान संपादक

नई दिल्ली

अस्वीकरण — पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

पाठकों के नाम संदेश

प्रिय पाठकवृंद,

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ चवालीसवां (अप्रैल-जून, 2023) अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। रचनाकारों ने अपनी नवीनतम सरस कविताओं व सरल रचनाओं में समेटे अविरल भावों के माध्यम से अपने बहुमूल्य विचार आप तक पहुँचाए हैं।

हम तो रचनाकारों व पाठकों के मध्य एक कड़ी का कार्य करते हैं। जैसे रचनाकारों की रचनाओं को पाठकों तक पहुँचा देते हैं वैसे ही पाठकों की प्रतिक्रिया 'आपके पत्र' स्तम्भ में सम्मिलित कर रचनाकारों तक पहुँचा देते हैं। रचनाकारों की सुन्दरतम कृतियों की प्राप्ति से जितनी प्रसन्नता की अनुभूति होती है उतनी प्रबुद्ध पाठकों की दक्ष लेखनी से निकली भाषा शैली, शब्द चयन, रसों व अभिव्यक्तियों की कुशलता भी प्राप्त होती है। आपकी कविताओं, कहानियों व लेखों की समीक्षा अभिव्यक्त करता है कि किस तरह की रचनाएं पाठकों को आकर्षित करती हैं। इसी क्रम में आपसे प्राप्त पत्रों में शामिल भावों व अभिव्यक्ति से रचनाकारों को उत्साहवर्धक ऊर्जा प्राप्त होती है, जिससे हम इस पत्रिका को आपके समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास कर पाते हैं।

यदि आपको लगता है कि रचना में बार-बार सुधार कर उसे और भी सुन्दर बनाया जा सकता है ताकि रचनाओं को और प्रभावकारी बनाया जा सके और पाठकगण के अर्न्तमन में भावों और अभिव्यक्तियों को पहुँचाया जा सके। भाषा द्वारा रचनाकार अपने विचारों को आदान-प्रदान करता है। अपनी बात को कहने के लिए और दूसरे की बात को समझने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है।

मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद क्योंकि आप जैसे सुधी पाठकों के निरंतर प्रयास से विभागीय पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का उद्देश्य पूर्ण हो रहा है।

जय हिन्द – जय भारती

नई दिल्ली

आपका शुभाकांक्षी
(अनिल कुमार पिलानी)
संपादक

आपके पत्र

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ बयालीसवें अंक की ई-पत्रिका की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक हैं। श्री संदीप कुमार द्वारा रचित ‘लोकतंत्र : एक आदर्श विचार’, श्री ललित कुमार वर्मा की ‘केदारनाथ व अन्य केदारों के दर्शन’, श्री आकाश त्रिवेदी जी की कविता ‘मेरा पेट मेरी शान’ तथा श्री कुमार भास्कर द्वारा रचित ‘चलो कुछ पेड़ लगाएं’ सर्वाधिक रोचक एवं सराहनीय हैं। आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)
पश्चिम बंगाल, कोलकाता

इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है।

‘लेखापरीक्षा प्रकाश’ के एक सौ बयालीसवें अंक की ई-संस्करण अग्रेषित करने हेतु सहर्ष धन्यवाद। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं हमारे भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग के सदस्यों की सृजनात्मकता को बढ़ावा देता है। सभी रचनाएं सुरुचिपूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत लुभावना है एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियां, कविताएं, गजलें एवं यात्रा वृत्तांत भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। कार्यालय में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों के छायाचित्रों से पत्रिका की शोभा बढ़ी है। इस पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले पदाधिकारियों एवं संपादक मंडल को बधाइयाँ एवं उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

निदेशक (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
चेन्नै

पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रयोग में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की ई-संस्करण प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु सादर आभार। मुख्यालय कार्यालय से प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' विविध विषयों को समेटे हुए गागर में सागर के समान है। पत्रिका में समाविष्ट रचनाएं एक से बढ़कर एक हैं। पत्रिका के इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाएं स्तरीय, समसामयिक, ज्ञानवर्धक एवं रुचिकर हैं। श्री मेहरबान सिंह नेगी का लेख 'लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता', लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग तथा उसके कार्मिकों की कर्मनिष्ठा की यशगाथा का उल्लेख करता श्री वेद प्रकाश फोन्दणी का लेख 'ऑडिट वीर', सुश्री सं.ग. श्रीमती का लेख 'लेखापरीक्षा तथा उसका महत्व' श्री विनोद कुमार शर्मा का लेख 'हिंदी के लिए सकारात्मकता भावना की आवश्यकता', डॉ. लाखा राम का लेख 'आजादी का अमृत महोत्सव : स्वप्न और चुनौतियां', श्री ललित कुमार वर्मा का यात्रा वृत्तांत लेख 'केदारनाथ व अन्य केदारों के दर्शन' तथा मोटे अनाज की विशेषताओं पर प्रकाश डालता श्रीमती मोनिका चौहान का लेख 'मोटा अनाज (मिलेट्स)' विशेष रूप से सराहनीय एवं संग्रहणीय हैं। कहानियों में सुश्री सोनिया बाफिला की लेखनी से प्रस्तुत कहानी 'आशीर्वाद' प्रेरणादायक है। कविताओं में सुश्री पूनम शर्मा द्वारा रचित कविता 'इस समय में उस समय की बात नहीं', पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता को द्योतित करती श्री कुमार भास्कर की कविता 'चलो

कुछ पेड़ लगाएं', श्री प्रवीण सोनी की कविता 'सदाचार' तथा श्री नवीन 'एकांत' दैया की कविता 'आजादी की कहानी' विशेष प्रशंसनीय हैं। पत्रिका का प्रकाशन हिंदी के प्रयोग में वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसके सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी (प्रशासन)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)-II

मध्य प्रदेश, ग्वालियर

पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की प्राप्ति हुई, पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुन्दर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट 'ऑडिट वीर' श्री वेद प्रकाश फोन्दणी, 'मोटा अनाज (मिलेट्स)' श्रीमती मोनिका चौहान, 'मेरा पेट मेरी शान' श्री आकाश त्रिवेदी, और 'आजादी की एक कहानी' श्री नवीन दैया जैसी रचनाएं उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक और संग्रहणीय हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति की गहनता समाहित है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (रा.भा.अनु.)

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)

राजस्थान, जयपुर

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ बयालीसवे अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हि.क.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी।

हिंदी त्रैमासिक पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका प्रेषित करने हेतु सादर आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, रोचक एवं पठनीय हैं। छायाचित्रों के समावेश ने पत्रिका को अत्यधिक अलंकृत किया है, विशेष रूप से पत्रिका का पृष्ठ कवर। पत्रिका में सुश्री मीना भारद्वाज का लेख 'जीवन में सफलता के लिए ध्यान देने योग्य बातें', श्री धर्मवीर भारती की

'गज़ल' और सुश्री वंदना एस. की रचना 'चेहरे' विशेष अच्छे लगे। उम्मीद है कि यह पत्रिका आगे भी अपने रोचक विषयों से पाठकों का ज्ञानवर्धन एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सार्थक मंच उपलब्ध कराती रहेगी। पत्रिका के संपादक मंडल के सभी सदस्यों एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
ओडिशा, पुरी

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी अति मनमोहक हैं। श्री मेहरबान सिंह नेगी की 'लोक प्रशासन में पारदर्शिता की आवश्यकता', श्री विनोद कुमार शर्मा की 'हिंदी के लिए सकारात्मक भावना की आवश्यकता', डॉ. प्रवीण सोनी की 'सदाचार' तथा श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया की 'आंखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका (भाग-5)' रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

त्रैमासिक हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं प्रभावशील, रोचक एवं उच्चकोटि की हैं जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आपकी यह पत्रिका राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए अत्यंत सराहनीय प्रयास है, जिसकी निरंतर प्रगति एवं सफलता के लिए पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई।

उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सदैव की भांति पठनीय, प्रभावशाली, रोचक, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक हैं।

'लेखापरीक्षा प्रकाश' का एक सौ बयालीसवां अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं सदैव की भांति पठनीय, प्रभावशाली, रोचक, प्रेरणादायी और ज्ञानवर्धक होती ही हैं। इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाओं के मध्य छायाचित्र अत्यंत सार्थक हैं। इस पत्रिका में विशेषकर 'मोटा अनाज (मिलेट्स)' अंतर्राष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष के उपलक्ष्य पर परिचयात्मक, सुंदर और प्रासंगिक लेख है, ऑडिट वीर तथा सभी ऑनलाइन निबंध अच्छे, लेखापरीक्षा तथा उसका महत्व सटीक परिपूर्ण और अभ्यासपूर्ण है, हिंदी के लिए सकारात्मकता की भावना की आवश्यकता विचारों का सही प्रगटीकरण है, जीवन में सफलता के

लिए ध्यान देने योग्य बातें नई पीढ़ी के जीवन को दिशादर्शक होगी, साथ ही कहानियों में 'आशीर्वाद', 'मनसुख का दुर्भाग्य', कविताओं में 'सदाचार', 'मेरा पेट मेरी शान', व्यंगात्मक परंतु सोचने को मजबूर करती है, 'आजादी की कहानी'। श्री कमलजीत सिंह रामुवालिया जी का प्रवास वर्णन श्रृंखला के अंतिम कड़ी में 'आँखों देखी बाबा आदम की धरती : अफ्रीका' भाग-5 में उनके अनुभव काफी रोचक हैं। पत्रिका के निरंतर श्रेष्ठ प्रकाशन एवं संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाइयां। पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु कार्यालय की ओर से हार्दिक बधाइयां। पत्रिका के निरंतर प्रगति हेतु कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (रा.भा.अधि.)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
महाराष्ट्र, नागपुर

पत्रिका गागर में सागर भरने का कार्य करती है।

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा प्रकाश' के एक सौ बयालीसवें अंक की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानप्रद, मनोरंजक तथा रुचिकर हैं। सुश्री पूनम शर्मा द्वारा रचित 'इस समय में उस समय की बात नहीं' श्री धर्मवीर भारती द्वारा रचित 'गजल', सुश्री आरती शर्मा द्वारा रचित 'लेखापरीक्षा पैरा में उपयुक्त पैरा शीर्षक का महत्व' और अन्य सभी रचनाएं भी बहुत अच्छी लगी। पत्रिका गागर में सागर भरने का कार्य करती है। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत सुंदर एवं उत्कृष्ट है।

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)
महाराष्ट्र, मुम्बई

स्वभाषा से आत्मनिर्भरता



संजीव कुमार

वरिष्ठ अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

राष्ट्र आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, इस महोत्सव को मनाते हुए हमें राष्ट्रीय प्रतीकों एवं प्रसंगों को मजबूती देने की जरूरत है। इस दौर में यदि हमें पूर्ण आत्मनिर्भरता का संकल्प पूरा करना है तो हिंदी की अनिवार्यता देश के हर क्षेत्र में तीव्र गति से बढ़ाए जाने की आवश्यकता है क्योंकि हिंदी न सिर्फ स्वाभिमान का प्रतीक है बल्कि यह आत्मनिर्भरता का सशक्त आधार भी है। देश की एकता और अखंडता को बनाए रखने एवं आजादी दिलाने में हिंदी का बड़ा योगदान रहा है। यह हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है कि वर्तमान में हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। देश से बाहर करोड़ों लोग हिंदी भाषा का उपयोग कर रहे हैं तथा विश्व के

सैकड़ों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है। सांस्कृतिक और पारंपरिक महत्व को समेटे हुए हिंदी अब विश्व में लगातार अपना फैलाव कर रही है। विश्वस्तर पर प्रतिष्ठा प्राप्त कर रही हिंदी को देश में दबाने की नहीं, बल्कि ऊपर उठाने की आवश्यकता है। इंटरनेट के इस युग ने हिंदी को वैश्विक धाक जमाने में नया प्लेटफार्म उपलब्ध कराया है। सूचना और प्रौद्योगिकी के इस युग में हिंदी में उपलब्ध बौद्धिक संपदा का डिजिटलीकरण किया जा रहा है जिससे समस्त नागरिकों के लिए ज्ञान के स्रोत आसानी से उपलब्ध हो रहे हैं।

देश की आजादी के पश्चात 14 सितंबर 1949 को भारतीय संविधान सभा ने देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी को अंग्रेजी के साथ

राष्ट्र की आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया था। तत्कालीन प्रधानमंत्री ने 1953 से सम्पूर्ण भारत में 14 सितंबर को प्रतिवर्ष हिंदी दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की। हिंदी सम्पूर्ण देश में सांस्कृतिक और भावात्मक एकता स्थापित करने का प्रमुख साधन है। भारत का परिपक्व लोकतंत्र, प्राचीन सभ्यता, समृद्ध संस्कृति तथा अनूठा संविधान विश्व भर में एक उच्च स्थान रखता है, उसी तरह भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक हिंदी को विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। शासन में हिंदी को राजभाषा के रूप में विकसित करने का संवैधानिक और नैतिक उत्तरदायित्व सभी शासकीय कार्मिकों का बराबर रूप से बनता है। तभी सरकारी कार्यालयों, अदालतों और सचिवालयों के

कामकाज में हिंदी की अपेक्षित गति से प्रगति होगी।

जनमानस की समस्याओं के प्रभावी निराकरण हेतु उस राष्ट्र की बोली और समझी जाने वाली भाषा जब एक होती है, तभी राष्ट्र का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है, एवं जनमानस खुशहाल रहता है। वर्तमान में हिंदी मात्र प्रशासन की ही भाषा नहीं बल्कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भाषा भी बन गई है। वित्त और कारोबार के क्षेत्र में भी हिंदी की जड़ें मजबूत हुई हैं। एक समय था जब हिंदी अंग्रेजी के पीछे चल रही थी। परंतु हिंदी के प्रगतिशील गुण ने इसके महत्व को बहुत अधिक बढ़ा दिया, जिसे हिंदी का विकास कहा जा सकता है। इसके लिए हिंदी भाषी लोगों की तरह हिंदीतर प्रदेशों के लोगों की महत्ती भूमिका रही है। किसी भी देश की उन्नति सही दिशा में हो तो उस देश की राजभाषा तथा मातृभाषा की अनदेखी करना मुश्किल होता है अर्थात् देश के विकास के साथ अपनी भाषा का भी विशेष महत्व है। दूसरे शब्दों में हिंदी का विकास भारत के अपने विकास पर निर्भर है। वैश्विक बाज़ार में अगर भारत की भूमिका बढ़ेगी तो निश्चित रूप से हिंदी का क्षेत्र भी बढ़ेगा। इसमें कोई संदेह

नहीं है कि हिंदी अपनी सीमाओं से बाहर आ चुकी है। यह अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की भाषा बन रही है। हिंदी राजभाषा से एक नई वैश्विक भाषा के रूप में बदल रही है। कंप्यूटर और मोबाइल के आ जाने के बाद पूरे विश्व में सूचना क्रांति आ गई। लोग घर बैठे ही इंटरनेट पर विश्व की कहीं की भी जानकारी प्राप्त करने लगे हैं। शुरुआत में कंप्यूटर और इंटरनेट केवल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध थे, लेकिन विश्व में हिंदी की बढ़ती प्रतिष्ठा/मांग को ध्यान में रखते हुए अब फेसबुक, गूगल सर्च और ट्विटर ने हिंदी को विशेष महत्वपूर्ण स्थान दिया है।

भाषा का व्यावहारिक होना अत्यंत आवश्यक है। यदि भाषा व्यावहारिक नहीं है तो उसका प्रचार-प्रसार व विकास असफल हो सकता है। हिंदी के अलावा जिन भाषाओं के शब्दों का प्रचलन आम लोगों के बीच सामान्य हो गया है, उन शब्दों को देवनागरी स्वरूप में अपनाने/समाहित करने में कोई समस्या नहीं होनी चाहिए। हिंदी भाषा ने इसे बखूबी किया और आगे भी करती रहेगी। उदाहरणतः रेल को 'लोहपथ-गामिनी' और लिवर को 'यकृत' कहने की कोई जरूरत नहीं होनी चाहिए। भाषा जितनी सहज, सरल

और सुगम होगी उसका विकास उतनी तेजी से बढ़ेगा। सोचने की प्रक्रिया अपनी मातृभाषा में ही होती है, इसलिए नेल्सन मंडेला ने कहा था — यदि आप किसी व्यक्ति से उसकी भाषा में बात करते हो तो वह बात उसके दिमाग में जाती है। अनुसंधान अपनी भाषा में हो तो देश की ज्यादा से ज्यादा युवा पीढ़ी की ऊर्जा का प्रयोग देश की प्रगति में किया जा सकता है। भाषा एक बुनियादी चीज है, जो लोगों को सांचे में ढालती है। यदि औद्योगिक एवं प्रौद्योगिकी का विकास और इनकी जानकारी जन-जन तक पहुंचानी है, तो देश की भाषा ऐसी हो जो इन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व पूरी शक्ति से कर सके। हिंदी ही वह भाषा है जिसमें वे सभी गुण विद्यमान हैं, जो एक प्रगतिशील भाषा में होने चाहिए। इस दिशा में वर्तमान में किए जा रहे प्रयास उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं, लेकिन इनको तीव्र गति दिए जाने की आवश्यकता है।

हिंदी के संबंध में महात्मा गांधी जी की अन्तर्वेदना को समझना होगा, जिसमें उन्होंने कहा था कि भाषा संबंधी आवश्यक परिवर्तन अर्थात् हिंदी को लागू करने में एक दिन का विलंब भी सांस्कृतिक हानि है। 'मेरा तर्क है कि जिस प्रकार हमने

अंग्रेज लुटेरों के राजनैतिक शासन को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया, उसी प्रकार सांस्कृतिक लुटेरे रूपी अंग्रेजी को भी तत्काल निर्वासित करें।' हिंदी विश्व की एक प्राचीन, समृद्ध तथा महान् भाषा होने के साथ ही हमारी राजभाषा भी है, यह हमारे अस्तित्व एवं अस्मिता की भी प्रतीक है, यह हमारी राष्ट्रीयता एवं संस्कृति की भी प्रतीक है। महात्मा गांधी ने सही कहा था कि 'राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है।' आजाद भारत के पचहत्तर वर्षों में भी हम हिंदी को उसका गरिमापूर्ण स्थान न दिला सके, यह विडम्बनापूर्ण एवं हमारी राष्ट्रीयता पर एक गंभीर प्रश्नचिह्न है। हिंदी के प्रति दर्द एवं संवेदना, सरकार से जुड़े हर व्यक्ति के साथ-साथ जन-जन की भी होनी चाहिए। हिंदी के लिए दर्द, संवेदना एवं अपनापन जागना जरूरी है। हम स्वभाषा को सम्मान देने के छोटे-छोटे प्रयासों द्वारा समाज में बड़े परिवर्तन ला सकते हैं, जो आने वाले समय में हिंदी के विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हिंदी को प्रतिष्ठापित करने एवं सांस्कृतिक सुरक्षा के लिए अनेक व्यक्तियों ने व्यापक प्रयत्न किए। हमें इन प्रयत्नों को असफल नहीं होने देना चाहिए।

राष्ट्र के लिए जब तक हिंदी की उपेक्षा जैसे निजी-स्वार्थ को त्यागने की भावना पुष्ट नहीं होगी, तब तक राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक उन्नयन एवं सशक्त भारत का नारा सार्थक नहीं होगा। हिंदी को सम्मान एवं सुदृढ़ता दिलाने के लिए केंद्र के साथ-साथ प्रांतों को भी संकल्पित होना होगा। हिंदी के प्रति संकीर्णता न राष्ट्रीय एकता के हित में है और न ही प्रांतों के हित में। हिंदी भाषा का मामला भावुकता का नहीं, ठोस यथार्थ का है, राष्ट्रीयता का है।

प्राचीन काल से आज तक हिंदी ने देश को एक सूत्र में बांधा है। हिंदी संपूर्ण भारत को समृद्ध एवं आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है क्योंकि हिंदी देश की सर्वाधिक बोली एवं समझी जाने वाली भाषा है। अनेक विदेशी कंपनियों ने इसकी लोकप्रियता को देखते हुए हिंदी साइट शुरू की हैं। सभी मिलजुल कर हिंदी के उत्थान और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण हेतु प्रयास कर रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग धंधों को और अधिक विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं। इन सब उद्देश्यों की पूर्ति तभी संभव है, जब हर क्षेत्र

जन-जन की भाषा हिंदी को साथ लेकर चलेगा। हिंदी के विकास के बिना देश का विकास होना असंभव है और बिना विकास किए कोई भी देश आत्मनिर्भर नहीं बन सकता। देश को आत्मनिर्भर बनाने में हिंदी की अहम भूमिका है। यह सच है कि हिंदी को मान-सम्मान दिए बिना देश का विकसित और आत्मनिर्भर बनना असंभव है। ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों द्वारा बनाए गए सामानों और उसकी आमदनी से आए पैसों से परिवारों का खर्च चलाने को ही आत्म-निर्भरता कहा जाता है। कुटीर उद्योग या घर में बनाए गए सामानों को आस-पास के बाजारों में बेचा जाता है, अन्य जगहों पर भी इनकी मांग को बढ़ाने के लिए प्रचार-प्रसार महत्वपूर्ण होता है। हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जिसे देश के हर कोने का व्यक्ति अच्छे से बोलता और समझता है। यह प्रचार-प्रसार हिंदी के द्वारा ही संभव है। इस प्रकार हम अपने परिवार से गांव, गांव से जिले को एक-दूसरे से जोड़कर देखें तो हिंदी संपूर्ण राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाने में अपना योगदान देती है और इस तरह से हम देश को आत्मनिर्भर भारत के रूप में देख सकते हैं।

मंत्र



श्रीमती राजश्री के. शाह
पर्यवेक्षक
कार्यालय महालेखाकार (ले. एवं हक.)
गुजरात, राजकोट-360001

हमारा भारत देश धर्म धुरंधर है। लगभग हर एक मानव धर्म में श्रद्धा रखता है और अपनी दिनचर्या में धार्मिक क्रिया को स्थान देने वाला है। हमारे देश में हिंदू संप्रदाय में ही अलग-अलग धर्म का अस्तित्व है। हमारे वेद-उपनिषदों या धार्मिक ग्रंथों के अनुसार मनुष्य का अवतार 84 लाख बार जन्म लेने के पश्चात् मिलता है और मनुष्य अवतार से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

हमारे देश में कई अवतार हुए जैसे कि राम, कृष्ण, बुद्ध, शंकर, महावीर आदि जिन्होंने कठिन तप साधना करके अपने अवतार को सार्थक किया और वेद-उपनिषद, गीता और आगम (जैन ग्रंथ) जैसे पुस्तकों की भेंट दी और उस पुस्तक में दर्शाए गए पथ पर चलने

को कहा। हमारे देश में लाखों साधु संत हैं, वह इन महापुरुषों के बताए गए मार्ग पर चल रहे हैं। वह सब धार्मिक ग्रंथों का गहन अभ्यास करके हमें उपदेश देते हैं और मोक्ष प्राप्ति के लिए हमें राह दिखाते हैं।

मोक्ष प्राप्ति के लिए अलग-अलग धर्म में अलग-अलग पूजा-पाठ करना, दुर्गम जगहों की यात्रा करना या फिर गुफा में रहना, तप करना ये सभी पुण्य कमाने के रास्ते हैं। मगर ये सब रास्ते कठिन हैं, राग-द्वेष पर विजय पाने का एक सरल और आसान आलंबन है 'मंत्र'। हमारे देश में कई मंत्र हैं जैसे कि राम-राम सबसे सरल, ऊँ नमः शिवाय, गायत्री मंत्र, नवकार मंत्र, आदि मंत्र की साधना दो तरह से होती है – मंत्र लेखन एवं मंत्र जाप।

मंत्र लेखन से मंत्र जाप ज्यादा आसान है। अनपढ़ और बच्चे से बूढ़े तक हर एक मनुष्य कभी भी, कहीं भी, सोते वक्त, जागते समय, यहाँ तक कि चलते-फिरते भी मंत्र जाप कर सकते हैं। मंत्र जाप दो तरीके से होते हैं – 1. मन में किसी मंत्र का जाप करना। ये सभी के कल्याण के लिए होता है। 2. दूसरा समूह जाप – वह लोक-कल्याण या विश्व-कल्याण के लिए आयोजित किया जाता है। कभी कोई प्राकृतिक आपदा – अकाल या फिर कोरोना जैसी महामारी जहाँ कुदरत हमसे रुठती है तो मंत्र जाप के आलंबन से हम ईश्वर की सहायता मांगते हैं। कई मंदिरों में भी निश्चित समय पर लोग इकट्ठा होकर मंत्र जाप करते हैं।

मंत्र जाप माला से भी किया जाता है। हिंदू धर्म में मंत्र जाप के लिए

तुलसी, रुद्राक्ष, मोती और स्फटीक की मालाओं का प्रयोग किया जाता है, और यदि हम गौर करें तो सभी मालाओं में मणके 108 ही होते हैं। शास्त्रों में 108 संख्या का अत्यधिक महत्व माना जाता है। एक मत के अनुसार 108 मणकों का संबंध व्यक्ति की साँस से है जैसे कि स्वस्थ व्यक्ति दिन और रात के 24 घंटों में लगभग 21600 बार साँस लेता है, उसमें से रात के 10800 निकाल दें तो दिन के 10800 बनते हैं। शास्त्रों के अनुसार मनुष्य को दिन में 10800 बार ईश्वर को स्मरण करना चाहिए लेकिन इतना कर पाना संभव नहीं हो पाता इसलिए दो शून्य को हटाकर जप के लिए 108 की संख्या शुभ मानी गई है। जिसके कारण माला में मणकों की संख्या भी 108 होती है।

दूसरा मत है कि ज्योतिषशास्त्र के अनुसार समस्त ब्रह्मांड को 12 भागों में बांटने पर आधारित 12 राशि की संख्या दी गई है और 9 ग्रह हैं तो उसका गुणांक 108 आता है।

तीसरा मत है कि जैन धर्म के अनुसार 4 कषाय (क्रोध, मान, माया, लोभ) x 3 कारण (मन, वचन, काया) x योजना के 3 चरण (योजना, प्राप्ति, प्रारंभ) x 3

निष्पादन के तरीके (स्वयं करना, करवाना या करने के लिए प्रेरित करना) इन सबका गुणांक 108 होता है। इनके अलावा सभी धर्म में भिन्न-भिन्न मान्यता होती है।

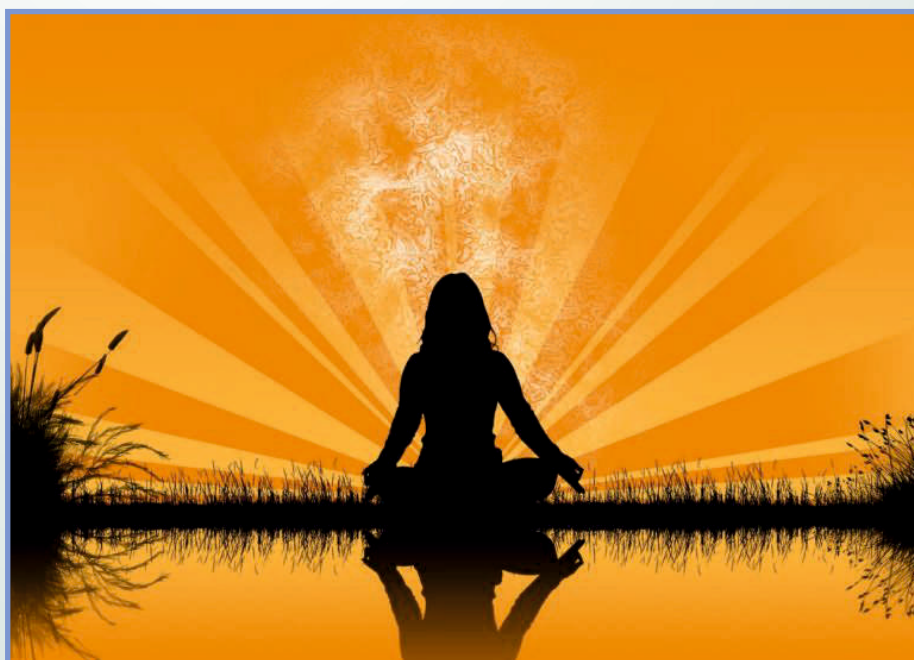
पुराने जमाने में मंत्र-साधना करके देवी-देवता को प्रसन्न किया जाता था। ऐसा हमने पढ़ा या अपने माता-पिता से सुना है। पत्थर पर राम-राम लिखकर बड़ा सा पुल बना दिया यह भी मंत्र साधना ही तो है। श्रीकृष्ण की लीला को कौन नहीं जानता, भक्त के हृदय में श्रीकृष्ण नहीं श्रीकृष्ण के हृदय में भक्त रहते थे। मीरा जी को कौन नहीं जानता। वे तो श्रीकृष्ण की दीवानी थी, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण करती रहती थी।

मंत्र जाप के कई फायदे भी हैं जैसे –

मन की एकाग्रता — मंत्र जाप से हमारा चंचल मन एक जगह पर स्थिर और केंद्रित (एकाग्र) हो जाता है। एकाग्रता से मानसिक शक्ति बढ़ती है।

मन की शांति — मंत्र जाप का सीधा असर हमारे मस्तिष्क में होता है। हमारा मन शांत होता है और मानसिक बल से व्यक्ति खुद को स्वस्थ तथा शक्तिशाली महसूस कर सकता है।

गुण प्राकट्य — मंत्र जाप में इतनी शक्ति होती है कि मनुष्य में छिपे दुर्गुणों का अंत हो जाता है और आत्मिक गुण प्रगट होते हैं।



चमत्कार — मंत्र जाप के प्रयोग से चमत्कार के बारे में हमारे वेद-उपनिषदों और आगमों में उल्लेख है। मैं धर्म और कर्म से जैन हूँ तो मैं जैन धर्म में नवकार मंत्र के जाप से हुए चमत्कारों के दो-तीन उदाहरण देना चाहूँगी।

मंत्र जाप से सकारात्मक ऊर्जा प्रकट होती है और एक ही जगह बैठ के मंत्र जाप करने से वह जगह जाप से प्रभावित हो जाती है। उदाहरण के लिए —

खून के इलज़ाम में आजीवन कैद की सजा पाए हुए खूंखार कैदी को एक जगह ले जाया जाता है, जहाँ जैन साधु रोज नवकार मंत्र का

जाप करते थे। वह जगह मंत्र जाप से इतनी प्रभावित व पवित्र हो गई थी कि वो कैदी भी नवकार मंत्र बोल पड़ा और धीरे-धीरे उसमें सकारात्मकता आ गई तथा उसके स्वभाव में सात्विकता आने लगी।

एक युवक जैन साधु को अपने घर साथ ले गए क्योंकि उसकी माँ बीमार थी लेकिन उसने कहा महाराजश्री मेरे घर आकर एक चमत्कार देखिए। महाराजश्री उस युवक की माँ को दर्शन देने गए क्योंकि माँ को लकवा मार गया था। कुछ बोल नहीं पाती थीं। लेकिन बेटे के कहने पर 68 अक्षर का नवकार मंत्र बिना रुके बोल गई। महाराजश्री भी आश्चर्यचकित

हो गए। बेटे ने कहा कि मेरी माँ 40 साल से नवकार मंत्र का जाप कर रही है, तो यह है नवकार मंत्र के जाप का चमत्कार। सुना है कैंसर जैसी घातक बीमारी हो वह भी नवकार मंत्र के जाप करने से ठीक हो जाती है।

मनुष्य अपने जीवन में अनेक दुखों, तकलीफों, हताशा का अनुभव करता है। इन सबसे मुक्ति या तो राहत की अद्भुत शक्ति मंत्राक्षरों एवं मंत्रोच्चारण में होती है। ईश्वर के प्रति अखंड विश्वास और अपने-अपने धर्म के प्रति श्रद्धा से मंत्र जाप किया जाए तो निश्चित ही सुखद फल मिलता है।



राम सुजस सुखमूल



सुभाष चंद यादव
हिंदी अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
तमिलनाडु, चेन्नई

ईश्वर के नाम के स्मरण पर विचारकों और संतों का सदा से विशेष जोर रहा है। उपनिषद् और अन्य धार्मिक ग्रन्थ भी इसी विचार को प्रस्तुत करता है। जब—जब मानव समाज और मानव जीवन खतरे में पड़ा अथवा धर्म का क्षरण चरम पर पहुँचा तो प्रभु किसी न किसी रूप में प्रकट हुए ही हैं। इसी का यशोगान कर प्रभु का स्मरण करना भक्तों का भक्तिभाव है। ईश्वर के प्रकट जीवन चरितों और उनके गुणों का बखान अलग—अलग तरीके से गाया है। अतः रामकथा नामक हरिगाथा को भी भक्तों ने प्रभु का लीलागान बतलाकर अलग—अलग तरीके से गाया है। अब तक इतने अवतार हुए हैं कि उन सब के चरित्र का गान किया जाए तो अनेक कल्प लग जाएँगे लेकिन प्रभुगाथा और यशोगान पूर्ण नहीं हो पाएगा। हरि के विविध अवतारों का यशोगान अलग—अलग है लेकिन अंतिम रूप से वो परब्रह्म (राम) का ही भजन कर रहे होते हैं —

हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।
रामचंद्र के चरित सुहाए।
कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए।।

मानस / 1 / 139 / चौ.3

वस्तुतः रामगाथा लोककल्याण में जिए एक महान व्यक्तित्व का गान है जो सृष्टि में अनुपम ध्वनि—नाद क्षमता से सम्पन्न है। उसका ध्यानमात्र जीव की मनोदशा और सामाजिक स्थिति को उन्नत दशा की तरफ उन्मुख कर देता है। राम का ध्यान सृष्टि की अगोचर प्राकृतिक शक्तियों को उत्प्रेरित करता है और जीव को सदोन्मुख करता है। चूँकि दुख व्यक्ति के पुरुषार्थ को जगाकर जीवन को गति प्रदान करता है। रामकथा पुरुषार्थ को जगाने वाली मानवता की परिक्रमा है और साथ ही कर्म, त्याग और भक्ति की त्रिवेणी भी है। राम जीवन को उच्च से उच्चतम स्तर पर उठाकर इसे सुंदर से सुंदरतम बनाते हैं।

मानव में शिवजी कहते हैं कि हे पार्वती! जिनकी कृपा से सब प्रकार का संशय और भ्रम मिट जाता है, वही कृपालु रघुनाथ हैं। जिनका आदि अंत किसी ने नहीं पाया। वेदों ने अपनी बुद्धि से अनुमान करके इस प्रकार बताया है कि वह ब्रह्म बिना ही पैर के चलता है, बिना कान के ही सुनता है, बिना हाथ के विभिन्न प्रकार के काम करता है, बिना मुँह के ही सभी रसों का आनंद लेता है और बिना वाणी के ही अनन्य वक्ता है। जिसका वेद और महर्षि वर्णन करते हैं तथा मुनि

जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम हैं।

जेहि इमि गावहिं बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान।
सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान॥

तुलसीदासजी ने रामगाथा के प्रभाव को यह कहकर व्यक्त किया है —

‘बरनउ रघुबर बिमल जसु जो दायक फल चारि’।

और बालकाण्ड में कहा है ‘रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ’ फिर एक जगह बालकाण्ड में कहा गया है ‘बरनउ रघुबर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ’।

श्रीराम संसार को मार्ग बताने वाले व्यक्तित्व हैं। उनका जन्म नकारात्मक शक्तियों के उन्मूलन के लिए हुआ था। राम ने आरंभ में दुखों का वरण किया ताकि प्रजा सुखी रहे। उनसे दूसरों का दुख नहीं देखा गया तो उन्होंने वनवास का वरण किया। जहाँ उन्होंने रावण नामक पैतरेबाज और यातनादायी सत्ता का मार्ग अवरुद्ध किया तथा वनवासियों के जीवन स्तर को मानवाधिकारों के स्तर तक उन्नत किया जिनकी उन्नति में रावण नामक निरकुंश और हाहाकारी सत्ता प्रमुख बाधा बनी हुई थी। रावण प्रणेत है लूट-खसोट और राक्षसी चिंतनधारा का, जिसके जहाँ मानव जीवन और दबे-कुचले असंगठित जीवन का कोई मोल नहीं था और उनके धार्मिक अधिकारों का कोई रक्षक नहीं था। वहाँ सत्य वही था जो रावण सत्ता उद्घोषित करती थी, वहाँ कानून वही है जो रावण के हित में था। वनवासियों की आबरू का कोई महत्व नहीं था रावण सत्ता में। सीताहरण वन्यजीवन में नारी जीवन की घोर असुरक्षित अवस्था को उजागर करता है। नारी हरण वन और रावण सत्ता में एक सामान्य घटना थी। राम

अपने युग के प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने नारी रक्षा के लिए वानरों और वनवासियों को संगठित कर नारी जीवन के मोल और उसकी संप्रभुता का सम्मान करने का विचार प्रवाहित कर एक स्थापित, अहंकारपूर्ण, निरकुंश, दुर्गम और दुर्जेय सत्ता को धराशाही किया। इसलिए तुलसीदास जी श्रीरामजस को वो सत्संग कहते हैं जिससे प्राप्त सुख की कोई तुलना नहीं है। स्वर्ग और मोक्ष के सब सुखों को तराजू के एक पलड़े में रखा जाए, तो भी वे सब मिलकर दूसरे पलड़े पर रखे हुए सुख के बराबर नहीं हो सकते, जो क्षण मात्र के राम-भजन (सत्संग) से प्राप्त होता है —

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

(मानस/5/दोहा-4)

सम्पूर्ण भगवद्गाथा एक चमत्कारिक प्रभाव छोड़ने वाला उपाय है। यह महामंत्र है। इसी महामंत्र को शिवजी जपते रहते हैं जिसके प्रभाव से उनके गले में धारण किया हुआ कालकूट विष भी उनके लिए अमृत बना हुआ है और उनकी तपोस्थली काशी को मुक्तिदायनी की शक्ति प्राप्त हुई है। तभी तुलसी कहते हैं —

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जलजान॥

(मानस/5/दो.60)

वो श्री रघुवीर का नाम ही है जिसके प्रभाव से पानी में पाषाण भी तैर जाता है। पत्थर और पानी की प्रकृति विरुद्ध है लेकिन राम नाम का प्रभाव उस विरुद्ध स्वभाव में भी सामंजस्य बिठाने में सक्षम है और पत्थर का भी पानी में तैरना संभव हो पाता है। ऐसे राम के

नाम को छोड़कर यदि कोई किसी और का स्मरण या वंदन करता है तो वो मतिमंद अर्थात् मूर्ख ही कहा जा सकता है —

श्री रघुबीर प्रताप ते सिंधु तरे पाषाण ।
ते मतिमंद जे राम तजि भजहिं जाइ प्रभु आन ॥

(मानस/5/दो.3)

इसी महत्व के कारण कहा गया है कि नाम महिमा में संसार में जितनी भी नाम शक्तियों का शोध हुआ है अथवा श्रुति अर्थात् वेद अथवा धर्म-ग्रंथों ने एक से बढ़ाकर एक नाम गिने हैं लेकिन उनमें से राम का नाम ही सर्वाधिक शक्तिशाली, सम्पूर्ण कल्याण का हेतु है अतः वही स्मरणीय है —

जद्यपि प्रभु के नाम अनेका ।
श्रुति कह अधिक एक तें एका ॥
राम सकल नामन्ह ते अधिका ।
होउ नाथ अघ खग गन बधिका ॥

(मानस/3/41/चौ.4)

राम अनादि है और वे ही अवध के स्वामी के रूप में प्रकट हुए हैं अतः उनका कथारूपी जसगान का वेद व वेदज्ञ अनेक प्रकार से वर्णन करते हैं, मुनि जिसका ध्यान धरते हैं, वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी, अयोध्या के स्वामी भगवान राम रूप में प्रगट हुए हैं। प्रभु राम रघुनाथजी का चरित्र बड़ा ही विचित्र है, उसको पहुँचे हुए ज्ञानीजन ही तत्व से समझ पाते हैं। जो मंदबुद्धि हैं, वे तो विशेष रूप से मोह के वश होकर हृदय में कुछ दूसरी बात ही समझ बैठते हैं। राम की कथा हाथ की सुंदर ताली है जो संदेह दूर कर देती है। इसे आदर से सुनो। हर्ष, शोक, ज्ञान, अज्ञान और अभिमान — ये सब जीव के धर्म हैं। राम तो व्यापक

ब्रह्म, परमानंदस्वरूप, परात्पर प्रभु और पुराण पुरुष हैं। इस बात को सारा जगत जानता है। यह जगत प्रकाश्य है और राम इसके प्रकाशक हैं। वे माया के स्वामी और ज्ञान तथा गुणों के धाम हैं। जिनकी सत्ता से, मोह की सहायता पाकर जड़ माया भी सत्य-सी भासित होती है। राम की कथा कलियुग के पापों को हरने वाली, कल्याण करने वाली और बड़ी सुंदर है। (रामकथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ)

इतना ही नहीं वे कहते हैं कि राम की कथा कामधेनु के समान है जो सेवा करने से सब सुखों को देने वाली है, और सत्पुरुषों के समाज ही सब देवताओं के लोक हैं, ऐसा जानकर इसे कौन न सुनेगा —

रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि ।
सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥

(मानस/1/113)

अतः राम का यश ही वह परम शक्ति है जो सुख का मूल है। जीव की अनेक अवस्थाएँ कही गई हैं। देह में उसकी अलग व्यवस्था और स्थिति है तो देहातीत होने पर जीव की स्थिति अलग होती है। जीव किसी भी स्थिति में हो यदि उसकी मनोवृत्ति राम सृजस में रही है तो वह माया का प्रेरण सदैव सुखमूल स्थिति में ही रहेगा। ऐसा ही यहाँ तुलसीदास जी व्यक्त करते हैं जब वे मानस में कहते हैं कि राम का सुंदर यश कलियुग के पापों का नाश करने वाला, संशय का शमन करने वाला और सुख का मूल है जो लोग इसे आदरपूर्वक सुनते हैं, उन पर राम प्रसन्न रहते हैं —

कलिमल समन दमन मन राम सृजस सुखमूल ।
सादर सुनहिं जे तिन्ह पर राम रहहिं अनुकूल ॥

(मानव/3/दो.6/(क))

एक भारत – श्रेष्ठ भारत का राष्ट्रीय एकीकरण में महत्व

श्री शिवम गुप्ता
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-II)
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी
लेखापरीक्षा भवन, चेन्नै-600018

भारत पश्चिमी राष्ट्रीयता की कल्पना से भिन्न एक महाद्वीपीय विविधता वाला देश है। यह विविधता न केवल भौगोलिक है अपितु नृजातीय भी है। यह उत्तर में बर्फ से ढके हिमालय से लेकर, दक्षिण के सागर तटों तक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र की उपजाऊ घाटी क्षेत्र से लेकर पश्चिम में थार रेगिस्तान तक फैला है।

इस महाद्वीपीय देश में 1700 से अधिक भाषायें बोली जाती हैं जिन पर निर्भर इनकी अपनी-अपनी सांस्कृतिक चेतना है, फिर भी हम एक राष्ट्र और इसकी विरासतों को साझा करते हैं तो इसका आधार है भारत के लोगों, इसके राज्यों और अन्य इकाईयों के बीच में बंधुत्व का भाव। यह वही बन्धुत्व का भाव है जिसे संविधान की प्रस्तावना में व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता तथा अखंडता सुनिश्चित करने वाला माना गया है।

आजादी के 75 वर्षों के बाद भी आज का भारत सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय तथा समता को कतार में खड़े अंतिम व्यक्ति और अंतिम क्षेत्र तक पहुंचाने में चुनौतियों का सामना कर रहा है, तो इसका कारण है राष्ट्र की इकाईयों के तौर पर नागरिकों तथा संस्थाओं में बंधुता का अभाव। यह इस विचार का अभाव है कि भारत के प्रत्येक नागरिक और नागरिकों के लिए स्थापित की गई प्रत्येक संस्था के हित आपस में अनिवार्य तौर पर जुड़े हैं।

बंधुत्व के विचार को जन-मन में पिरोने और राष्ट्रीय एकता को एक जन आंदोलन बनाने हेतु माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी जी द्वारा राष्ट्रीय एकता दिवस के पर्व पर 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' के संकल्प को लेने का आग्रह किया गया। इसके अंतर्गत देश का एक राज्य हर साल एक दूसरे राज्य की विरासत जैसे

सांस्कृतिक, परम्परा, भाषा साहित्य, व्यंजन, त्यौहार आदि को समझने तथा साझा करने का प्रयास करेगा। यही अपेक्षा राज्य के अन्य संस्थानों तथा निजी संस्थानों से भी की गई है।

अनंत भौतिक संसाधनों और मानवीय क्षमता से समृद्ध हमारे देश को उसका विश्व में उचित स्थान अगर प्राप्त नहीं हो सका है तो इसके कारण है 130 करोड़ नागरिकों के पास साझा हितों और साझा राष्ट्रीय उद्देश्यों की चेतना का अभाव। इसी कारण हम अपने संसाधनों का राष्ट्रीय हित में उपयुक्ततम उपयोग नहीं कर सके हैं। सांस्कृतिक एकता वह बंध है जो नागरिकों को संपूर्णता में राष्ट्र के हितों और उद्देश्यों को जोड़कर राष्ट्र की समस्त शक्तियों को श्रेष्ठ भारत के उद्देश्य की ओर उन्मुख कर सकता है, और एक भारत श्रेष्ठ भारत का संकल्प इसी की ओर एक सकारात्मक प्रयास है।

मन प्रफुल्लित रहे सदा



प्रशान्त प्रखर

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा
पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर

ईश्वर की मुझ पर असीम कृपा है। जीवन में सुख भी आए और दुःख भी। दुःख में तो सुमिरन हुआ ही, सुख में भी मन से सदाचार का भाव कभी निकल नहीं पाया। नफरत, घमंड, घृणा, ईर्ष्या जैसे नकारात्मक भावों की नैया मेरे मन के समुद्र में डूबकर रह गई। मन के नियंत्रण से ये भाव यदि कभी छिटककर निकले भी तो भी अंत में विजय हमेशा अच्छे विचारों की ही हुई। ये सब मेरे मन की सोच है, असल बात तो पाठक वृन्द मेरी रचना का संपूर्ण सार आत्मसात करने के बाद ही बता सकेंगे। अतः इसका निर्णय मैं उन्हीं पर छोड़ता हूँ। यह रचना करने का विचार यूँ ही मेरे मन में नहीं आया। मेरे निकट संबंधियों एवं मित्रों में से कुछेक की अकाल मृत्यु के बाद मेरा मन व्यथित था। इनमें से कुछ बीमारी के कारण काल का ग्रास बने तो एकाध ने तो स्वयं ही अपना प्राणान्त कर लिया। तब मुझे एक मित्र ने अपनी भावना को कागज के कैनवास पर उकेरने को कहा। जो बीमारी से मरे उनमें से कईयों की जिजीविषा तो चरम बिंदु पर पहुँच चुकी थी परंतु जीवन का मौका उन्हें नहीं मिल पाया। उनका कोई दोष तो न था लेकिन वे जिन्दगी को भरपूर ढंग से जी नहीं पाए, ऐसा मुझे प्रतीत होता है।

साधारणतः मनुष्य अपने प्राण की रक्षा करता है। शास्त्रों में भी लिखा है 'आत्मा रक्षितो धर्मः' अर्थात् आत्मा की रक्षा ही धर्म है। उचित है, धर्म चाहे कोई भी हो आत्मा से परमात्मा के मिलन का साधन होता है। फिर आखिर किन परिस्थितियों के अधीन होकर एक अच्छा भला आदमी अपने ही प्राण हर लेता है? इसका जवाब मिल पाना मुश्किल तो है पर नामुमकिन नहीं। इसका कारण चिरकालिक तनाव भी हो सकता है और क्षणिक आवेग भी। लेकिन एक बात तो तय है कि ये कदम उठाने वाला बहुत परेशानी में अवश्य होता है। समझदार से समझदार व्यक्ति भी ऐसा कदम उठा सकता है। मैं इस मुद्दे पर कुछ लिखने का कार्य यदि कर रहा हूँ तो ऐसा नहीं है कि मैं मानसिक रूप से बहुत सबल हूँ या मेरे मन में ऐसी बात नहीं आ सकती। मैं ऐसा इसलिए लिख रहा हूँ क्योंकि अपने निकट परिचितों/मित्रों को मैंने ऐसा कदम उठाते हुए देखा है और मेरी इच्छा है कि कोई भी ऐसा काम करने से पहले एक बार गहराई से सोच भर ले। यदि कोई ऐसा करने से पहले सोच विचार कर ले तो आधी समस्या वहीं खत्म हो जाएगी। उसके बाद सोचना यह भी होगा कि ईश्वर/प्रकृति ने हमें यह जीवन क्यों अर्पित किया है? उसके दिए हुए जीवन को यूँ खत्म कर देना क्या उचित है।

ऐसे तो मनुष्य कई प्रकार के होते हैं या यूँ कहें कि हर मनुष्य एक अलग ही 'प्रकार' लिए हुए होता है, फिर भी मेरी फिर समझ से मनुष्य तीन प्रकार के होते हैं।

एक — ऐसे लोग जो किसी भी परिस्थिति में खुश नहीं होते। इन्हें अपने जीवन में हमेशा शिकायत रहती है। इन्हें खुश करना भगवान के लिए भी आसान नहीं होता। ये हमेशा रोते रहते हैं जैसे भाग्य ने इनके साथ कभी न्याय ही न किया हो। ये दूसरों के खुशी से भी दुःखी हो जाते हैं और अपना दुःख तो दुःख है ही। इनके दुःख का कारण ये भी हो सकता है कि आज मॉर्निंग वाकिंग के समय फलाने बाबु ने ऐसी बात कह दी या सुबह सब्जी वाले ने भाव कम करने के लिए कहने पर चुभने वाली बात कह दी या कुछ समय पूर्व फलाने ने खटास पैदा करने वाली बात कही और उसे जवाब भी नहीं दे पाया। ऐसी बातें किसी के भी मन में आ सकती हैं लेकिन साधारणतया लोग ऐसी बातें भूलते भी तेजी से हैं लेकिन ये आसानी से भूल भी नहीं पाते। ये आपको भी हमेशा दुःख भरी बातें बताएंगे और फिजा में निराशा घोल देंगे। ऐसा नहीं है कि इन्हें कभी खुशी नहीं होती हो, खुशी होती है लेकिन पानी के बुलबुले की तरह। ये खुशी की चर्चा कम ही करते हैं या कम-से-कम खुशी का भाव चेहरे पर आने नहीं देते, खुशी को ज़ब्त कर जाते हैं और दुःख को दर्शनीय बना देते हैं।

ऐसे लोग समाज का कुछ खास भला नहीं कर पाते और दूसरे लोग इनसे कन्नी काटने में ही भलाई समझते हैं।

दो — दूसरे तरह के मनुष्य की कोटि सामान्य है। ये सुख में सुखी और दुःख में दुःखी होते हैं। इनमें सकारात्मक और नकारात्मक दोनों ऊर्जाओं का समावेश होता है। ऐसे लोगों की संख्या हमारे समाज में बहुत ज्यादा है। ऐसे ये मानवता की सेवा कर भी सकते हैं और कई जगहों पर उदासीन भी रहते हैं। ये

अपने ऊपर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त जोखिम नहीं लेते भले ही मामला मानवता की सेवा का हो।

उदाहरण से समझिए — एक सड़क पर जब कोई दुर्घटना होती है तो बहुत से लोग चाहकर भी मदद नहीं कर पाते। ऐसा नहीं है कि उनमें सेवा भावना नहीं होती बल्कि वे कोई जोखिम नहीं लेना चाहते बस। थाना-पुलिस के चक्कर में कौन पड़े। इन्हीं में से किसी की अंतरात्मा यदि उछाल मार देती है तो पीड़ित की जान बच जाती है।

तीन — तीसरे तरह के जो लोग हैं वे हमेशा खुश दिखते हैं। बद से बदतर परिस्थितियों में भी ये हिम्मत रखते हैं। इनकी छवि ऐसी होती है कि इनकी तस्वीर खींच कर रख दो तो लगेगा कि ये तस्वीर वाला व्यक्ति अभी कहकहे लगा बैठेगा। ऐसे लोग खुद भी खुश रहते हैं और इनके सान्निध्य में जो भी आता है आशा और खुशी से भर उठता है। लब्बोलुआब यह कि ये वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा भरने का काम करते हैं। आज के दौर में ऐसे लोगों की ज्यादा जरूरत हो गई है। मुश्किल यह है कि इनकी संख्या मुट्ठी भर होती है। ये जोश से भरे होते हैं और सामने वाले को भी जोश से भर देते हैं। इनमें जीवन को भरपूर जीने की क्षमता कूट-कूट कर भरी होती है। सामयिक मृत्यु का सामना भी ये बिना रोये-गाए पछताए कर लेते हैं। ऐसे लोग समाज में टॉनिक की तरह काम करते हैं। इनसे बात करने और जानने वालों की संख्या ज्यादा होती है।

मानव जीवन सुख, दुःख और समस्याओं से भरा हुआ है। प्रकृति ने शायद इसीलिए उसके हृदय में भावना, करुणा, धैर्य, आशा, निराशा जैसे भाव भी भर दिए हैं। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो खुशी में हँसी और दुःख में निराशा का भाव प्रकट करता है। कभी-कभी निराशा और तनाव जैसे भाव जीवन को रुग्ण कर देते हैं इसलिए हमारा प्रयत्न यही हो कि इन भावों को अपने

ऊपर हावी न होने दें। इसके उपाय हमारे आसपास ही हैं। कुछ लोग योग, ध्यान, व्यायाम जैसे सक्रिय उपाय करते हैं तो कोई मनोरंजन का साधन अपनाता है और जिसका शौक ही जीविकोपार्जन का साधन बन गया है उसके तो ठाठ ही हैं।

इसके अलावा शादी हो जाने के पश्चात् जीवन संगिनी का सच्चा साथ बहुत आवश्यक है, इसके बिना जिंदगी बेमानी लगने लगती हैं। इसके लिए कुँआरों को 'पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तनुसारिणी तारिणी दुर्ग संसारसागरस्य कुलोद्भाव' मंत्र जपकर ईश्वर को प्रसन्न रखना चाहिए।

ये तो हुई हंसी मजाक अब मुद्दे पर आते हैं, जब किसी की शादी होती है तो नई-नवेली दुल्हन को नए घर में सामंजस्य बिठाने में कभी-कभी कठिनाई आती है। इसके कई कारण हो सकते हैं लेकिन यदि कुछ उपाय अपनाए जाएँ तो समस्या बहुत हद तक सुलझ सकती है। शादी करने-कराने में बड़े बुजुर्गों के द्वारा कही एक बात हमेशा ध्यान रखना होगा कि लड़के की शादी अपने से कम संपन्न परिवार में और लड़की की शादी ज्यादा संपन्न परिवार में करें। लेकिन इस नीति को अपनाने में दहेज प्रथा सबसे बड़ी बाधा बन जाती है जिसे युवावर्ग अपने मनोबल से निपटा सकते हैं। इसके बाद बहु और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा छोटी-मोटी गलतियों को नजरअंदाज किया जाए या जो मामला गंभीर लगे उसे हल्के फुल्के ढंग से आपसी तालमेल द्वारा सुलझाया जाए तो बात बन सकती है। ये बातें पढ़ने-सुनने में आसान लग सकती हैं लेकिन थोड़ी कठिन है क्योंकि हर किसी का सोचने का नजरिया अलग है और धैर्य और विवेक की गहराई नदियों-तालाबों सी कहीं गहरी कहीं उथली हो सकती है। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों या किसी एक को गहरी समझ का प्रदर्शन करते हुए आपसी तालमेल बनाना चाहिए ये सबसे जरूरी है। फिर भी यदि जीवन में तनाव अपनी जगह पक्की कर ले तो फिर कानूनन

रास्ता अलग करना ही विकल्प बचता है, हालांकि ये आखिरी उपाय है लेकिन अपनी जान का दुश्मन बनने से तो अच्छा ही है।

आखिरी उपाय से पहले हर तरह का उपाय भी कर लेना आवश्यक है। स्त्री या पुरुष ये कोशिश करें कि एक दूसरे के आत्म सम्मान को ठेस न पहुँचाए साथ ही मनोरंजन खूब करें। साथ में यदि संभव हो तो सिनेमा देखें, धूमे फिरें। कहीं दूर न जा सकें तो नजदीक ही जाएँ और नहीं तो रेस्टोरेंट या छोटी-मोटी जगहों पर कम से कम आईसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक ही साथ बैठकर खा-पी लें, इससे दूरियाँ घट सकती हैं और रोजमर्रा के तनाव से भी बहुत हद तक राहत मिल सकती है। ग्रामीण परिवेश में रहने वाले स्त्री-पुरुष भी साथ में मनोरंजन का कोई भी तरीका अपना सकते हैं। हंसी-ठिठोली, चुहलबाजी, चुटकुले, धर्मग्रंथों का पाठ, गायन-वादन में से कोई भी तरीका अपने परिवार की पृष्ठभूमि के अनुसार अपनाया जा सकता है। ये मनोरंजन के तरीके हैं। इनके अतिरिक्त 'आत्मिक प्रसन्नता' भी आवश्यक है यानि ऐसे तरीके जिससे दिलोदिमाग तक चिरकालिक प्रसन्नता प्राप्त किया जा सके। इसके भी कई तरीके हो सकते हैं। आस्तिक लोगों के पास भक्ति-भजन जैसे साधन होते हैं। ये इनका सबल पक्ष भी माना जा सकता है परंतु कर्म फिर भी प्रधान है।

हिन्दू धर्म के पुरातन कवि वेदव्यास ने अठारह पुराण की रचना की किन्तु साररूप में उनका ये श्लोक प्रासंगिक है –

*‘अष्टादश पुराणेषु व्यासस्य वचनं द्वयं,
परोपकारः पुण्यायः पापाय पड़पीडनम्॥’*

अर्थात् वेदव्यास ने अठारह पुराणों की रचना की है किन्तु उनका कहना यही है कि परोपकार ही पुण्य है और किसी भी प्राणी को कष्ट देना ही पाप है। यह कितनी अच्छी बात है। यदि ये बातें गाँठ में बाँध ली

जाए या बालपन में ही बच्चों को ऐसे संस्कार मिल जाएँ तो कितना अच्छा हो। कभी किसी की भलाई करके देखिए, ऐसा सच्चा सुख मिलेगा जो सुख हमें कोई भी भौतिक वस्तु नहीं दे सकती। ऐसा करने से हृदय को सकारात्मक ऊर्जा मिलती है जिससे हम नैतिक उत्थान के पथ पर अग्रसर होते हैं। यदि इसके उलटे रास्ते पर चलें तो नकारात्मक भावनाएं भी आपके साथ चलेंगी और यदि आप किसी को पीड़ा देंगे तो वो भी लौटकर आप तक जरूर पहुँचेगा। घमंड, नफरत, क्रोध, द्वेष, ईर्ष्या आदि भावों की मात्रा जीवन में जितनी कम होगी हम उतने ही सुखी होंगे और ऐसा तभी संभव है जब भलाई का रास्ता अपनाया जाए।

यह जीवन हमें मानवता की सेवा के लिए मिली है, यह सेवा कई प्रकार से की जा सकती है — कुछ लोग अपना जीवन ही राष्ट्र और मानवता को अर्पित कर देते हैं तो कुछ अपने दैनिक दिनचर्या से कुछ समय निकालकर भलाई का काम करते हैं और कुछ अपने परिजनों एवं स्वजनों की ही सेवा इन अर्थों में करते हैं कि उनके सान्निध्य में पले बड़े बच्चे संस्कारों और सद्गुणों से परिपूर्ण होते हैं और समाज में वे अपने प्रति ऐसी धारण बना देते हैं कि फलाना कोई गलत काम कर ही नहीं सकता। कुछ लोग अपना जीवन पूरी जीवटता से जीते हैं। खुद भी प्रसन्न रहते हैं और जो इनके सान्निध्य में आता है वो भी सकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। इनमें से सभी मानवता की सेवा करते हैं और किसी को भी कमतर नहीं आंकना चाहिए, बल्कि प्रसन्नचित व्यक्ति से संपर्क बनाना चाहिए। इस दुनिया में यदि हम आए हैं तो बेवजह का तनाव पालकर क्यों रखना! क्यों न दिल से हँसते मुस्कराते रहें क्योंकि शरीर नश्वर है, किसको कब क्या हो जाएगा कुछ कहा नहीं जा सकता।

भलाई का काम करने के कई तरीके हैं। अपने आस-पास जरूरतमंदों की छोटी-मोटी जरूरत पूरी

की जा सकती है। गरीबों को लंगर खिलाना, कंबल बांटना, अनाथालयों, अस्पतालों और स्कूलों में दान देना, जिससे गरीबों का भला हो — ऐसा काम भी अच्छा है यदि आपके पास धनबल है। धन के अभाव में भी भलाई का भाव रखने वालों के लिए अवसरों की कमी नहीं है, वे अपना कीमती समय और शक्ति का उपयोग कर सकते हैं। खाली समय में गरीब बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना, बीमारों या अशक्तों के कुछ कामों में हाथ बँटाना या घर के बुजुर्गों की सेवा सुश्रुषा का भाव रखना जैसे कुछ भी करना आत्म परितोष से भर देता है इसमें कोई संशय नहीं।

इन सब के अलावा हमें अपनी दिनचर्या में किसी शौक को जरूर पालना चाहिए और शौक ऐसा हो कि किसी को उस शौक के चलते परेशानी का सामना ना करना पड़े। यदि आपने ऐसा शौक पाल लिया तो बोरियत नहीं होगी और 'खाली दिमाग शैतान का घर' होने से भी बच सकते हैं। यदि शौक ऐसा हो कि दो चार लोगों से बोलने बतियाने का अवसर मिले तो सोने पर सुहागा। इसके अलावा यदि आपका समय दिन भर जरूरतें पूरी करने, भौतिक सुख सुविधा की व्यवस्था करने या खर्च जोड़ते रहने में बीतता है तो इन आदतों में थोड़ी बहुत सुधार की गुंजाईश है। मैं ये नहीं कह रहा कि आप अपनी सुख सुविधा में कटौती करें बल्कि मेरा मानना है कि इन सब पर अपने बहुमूल्य जीवन के अधिक घंटे खर्च न करें तो बेहतर। इन सब में भी समय अवश्य दें पर अपने लिए समय निकालने के बाद।

आखिर में इतना ही कि जीवन को भरपूर जीने के लिए ये उपाय आपके जीवन में उमंग भर सकते हैं और निराशा का भाव तो ऐसा गायब होगा कि लौटकर आने न पाएगा और आज के दौर में शायद इसी की सबसे ज्यादा जरूरत भी है।

ममता की मूरत 'माँ'



डॉ. लाखा राम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

माँ, सिर्फ एक शब्द ही नहीं बल्कि भावना है। इनका वर्णन शब्दों में करना नामुमकिन है। माँ एक ऐसा शब्द है जिसमें पूरा ब्रह्मांड समा जाए। माँ ममता की मूरत होती है। ममत ही प्यार की शुरुआत और अंत है। माँ की ममता समुद्र से भी गहरी होती है। पूरी दुनिया के सभी धर्मों में माँ के रिश्ते को सबसे पवित्र माना गया है। माँ ईश्वर की सबसे प्यारी रचना व प्रेम का बहता हुआ स्रोत है। एक माँ ही होती है जो सभी की जगह ले सकती है, लेकिन उनकी जगह कोई नहीं ले सकता। माँ विश्व की जननी है, उसके बिना संसार की कल्पना भी नहीं की जा सकती। हमारे ग्रंथों में माँ को प्रथम गुरु, प्रथम देव, प्रथम आचार्य बताया गया है। माँ अनंत शक्तियों की धारणी होती है। माँ को जननी, माता, अम्मा, मम्मी, मॉम, आई, अम्मी के नाम से भी पुकारा जाता है। हैरी ट्रूमैन के शब्दों में 'दुनिया में कोई अपनी माँ की जगह नहीं ले सकता है। आप सही हों या गलत, उनकी नजरों में आप हमेशा सही हैं। वो आपको छोटी बातों के लिए डांट सकती है, बड़ी बातों के लिए नहीं। माँ हर एक के जीवन में महत्वपूर्ण व सर्वश्रेष्ठ होती है, क्योंकि इस दुनिया में किसी भी चीज को माँ की ममता से नहीं तोला जा सकता।

ममता की मूरत है माँ, भगवान का दिया सबसे बड़ा तोहफा है माँ।

माँ है प्रीत, माँ ही मीत, नेह का सागर माँ।

माँ है प्रकाश, माँ है आकाश, जीवन की भोर माँ।

माँ वह शख्सियत है जो नौ माह तक अपने बच्चे को अपनी कोख में रखकर जन्म देती है और उसके बाद उसका लालन-पालन करती है। कुछ भी हो जाए लेकिन एक माँ का अपने बच्चों के प्रति स्नेह कभी कम नहीं होता है। माँ अपनी संतान की रक्षा के लिए बड़ी से बड़ी विपत्तियों का सामना करने का साहस रखती है। इसलिए माँ को ईश्वर का दूसरा रूप माना जाता है। माँ भगवान की सर्वश्रेष्ठ रचना है। उसके जितना त्याग और प्यार और कोई नहीं कर सकता है। माँ ही हमारी जन्मदाता होती है और वही हमारी सबसे पहली गुरु होती है। इसीलिए हम धरती को भी धरती माता कहते हैं। माँ बिना कुछ पाने की उम्मीद किए सिर्फ देती ही रहती है। माँ मा प्यार निस्वार्थ व अतुलनीय होता है जो हम अपने जीवन में किसी और से प्राप्त नहीं कर सकते हैं।

माँ बच्चों के लिए न जाने कितने रोल अदा करती है। माँ न सिर्फ हमें जन्म देती है बल्कि हमें जीना भी सिखाती है। माँ शब्द का अर्थ है निःस्वार्थ प्यार और बलिदान। माँ वो होती है जो खुद भूखी सो जाए पर अपने बच्चों को भूखा नहीं रहने देती। माँ खुद की तकलीफ की परवाह किए बिना अपने बच्चों की सलामती की दुआ करती है। हम लोग बड़ी-बड़ी गलती कर देते हैं, लेकिन वो क्षमा कर देती है। माँ का प्यार और दुलार शिशु को ताउम्र मिलता है। माँ एक सुखद अनुभूति है। वह एक शीतल आवरण है जो हमारे दुःख-दर्द की तपिश को ढक देती है। माँ शब्द की गहराई, विशालता को परिभाषित करना सरल नहीं है क्योंकि इस शब्द में ही संपूर्ण ब्रह्मांड, सृष्टि की उत्पत्ति का रहस्य समाया हुआ है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में मातृ ऋण से मुक्त नहीं हो सकता। संपूर्ण परिवार के लिए माँ वंदनीय होती है। माँ परिवार

की धुरी होती है और पूरा परिवार उसके इर्द-गिर्द घूमता है।

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में भगवान राम ने कहा है कि 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात् माँ और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। माँ के चरणों में जन्नत है, जिसके पास माँ है वह किस्मत वाला है। भारत में आदिकाल से ही माँ को पूजा जाता है। माँ को संस्कृत में मातृ कहते हैं। पुराणों के अनुसार माँ का अर्थ लक्ष्मी है। एक मत यह है कि इस सृष्टि का आरंभ शतरूपा और मनु नामक स्त्री-पुरुष के समागम से हुआ। मनु के नाम पर ही उनकी संतान को मनुज या मानव कहा गया। मनु की संतान को जिसने जन्म दिया उसे माँ कहा गया। भारतीय संस्कृति और कुछ ग्रंथों के अनुसार माँ शब्द की उत्पत्ति गोवंश से हुई। भारत में पृथ्वी, नदी और गाय को माँ का स्वरूप माना गया है। गाय का बछड़ा जब जन्म लेता है तो उसके सर्वप्रथम रंभाने में जो स्वर निकलता है वह माँ होता है



यानी बछड़ा अपनी जन्मदात्री को माँ के नाम से पुकारता है। ठीक उसी प्रकार जन्म देने वाली को माँ कहकर पुकारा जाने लगा।

एक अक्षर वाला 'माँ' संबोधन पूरे ब्रह्मांड में सबसे ताकतवर शब्द माना जाता है। माँ सिर्फ एक शब्द नहीं बल्कि एक भावना है। इसका वर्णन शब्दों में करना असंभव है। दुनिया में हर शब्द का अर्थ समझा और समझाया जा सकता है, लेकिन माँ शब्द का अर्थ समझना और समझाना दोनों ही असंभव है, क्योंकि माँ के प्यार और बलिदान को शब्दों में समझाया नहीं जा सकता, इसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। किसी संतान के लिए माँ शब्द का मतलब सिर्फ पुकारने या फिर संबोधन करने से ही नहीं होता बल्कि उसके लिए माँ शब्द में ही सारी दुनिया बसती है। संतान की खुशी और उसका सुख ही माँ के लिए उसका संसार होता है। माँ शब्द में प्यार, दुलार, आत्मीयता एवं मिठास छिपी हुई होती है जो अन्य शब्दों में देखने को नहीं मिलती। माँ एक देवी की तरह है जो अपने बच्चों से कुछ भी वापस पाना नहीं चाहती है। वो अपने बच्चों को केवल जिम्मेदार कर्तव्यनिष्ठ और श्रेष्ठ इंसान बनाना चाहती है। माँ हमारे लिए प्रेरणादायक और पथप्रदर्शक शक्ति के रूप में है जो हमें हमेशा आगे बढ़ने और किसी भी मुसीबत से निपटने में मदद करती है। रॉबर्ट ब्राउनिंग के अनुसार 'प्रेम माँ से शुरू होता है और माँ पर ही खत्म हो जाता है।'

माँ को सम्मान देने के लिए पूरी दुनिया में मई माह के दूसरे रविवार को मातृ दिवस (मदर डे) के रूप में मनाया जाता है। अंतर्राष्ट्रीय मातृ दिवस संपूर्ण मातृशक्ति को समर्पित एक महत्वपूर्ण दिवस है, जिसे मदर्स डे, मातृ दिवस या माताओं के दिन के नाम से पुकारा जाता है। मातृदिवस का इतिहास सदियों

पुराना एवं प्राचीन है। यूनान में परमेश्वर की माँ को सम्मानित करने के लिए यह दिवस मनाया जाता है। 16वीं सदी में इंग्लैंड के ईसाई समुदाय द्वारा यीशू की माँ मदर मैरी को सम्मानित करने के लिए इस दिवस को त्योहार के रूप में मनाए जाने की शुरुआत हुई। 'मदर्स डे' मनाने का मूल कारण समस्त माताओं को सम्मान देना और एक शिशु के उत्थान में उसकी महान भूमिका को सलाम करना है। मातृ दिवस को आधिकारिक बनाने का निर्णय पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने 8 मई 1914 को लिया था। राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने मई के दूसरे रविवार को मदर्स डे मनाने और माँ के सम्मान में एक दिन के सार्वजनिक अवकाश की घोषणा की थी। वे समझ रहे थे कि सम्मान, श्रद्धा के साथ माताओं का सशक्तिकरण होना चाहिए। जिससे मातृ शक्ति के प्रभाव से युद्धों की विभीषिका रुके। तत्पश्चात् हर वर्ष मई के दूसरे रविवार को 'मदर्स डे' मनाया जाता है। वर्तमान में यह भारत के साथ यू.के., चीन, यू.एस., मैक्सिको, डेनमार्क, इटली, फिनलैंड, तुर्की, आस्ट्रेलिया, कनाडा, जापान, बेल्जियम सहित कई देशों में मनाया जाता है।

माँ के रक्त से निर्मित व उसके दूध से पली-बढ़ी संतान माँ के प्यार और प्रशिक्षण के सहारे ही पूर्ण मनुष्य बन पाती है। हमारी परंपरा में गर्भाधान से लेकर अंतिम संस्कार तक सब कुछ उत्सव है। हर संस्कार के समय अलग अनुष्ठान और हर अनुष्ठान का अपना ही रंग। गर्भाधान की सूचना मिलते ही पूरे परिवार के चेहरे का रंग खुशी से बदल जाता है। माँ की खुशी, माँ का प्यार बच्चों के लिए अक्षुण्ण रहता है, मातृ दिवस की सार्थकता इसी में है कि हम माँ को दुनिया की आदर्श नारी और जननी का दर्जा दें।

भारतीय संस्कृति में माँ के प्रति लोगों में अगाध श्रद्धा रही है। हमारी सुबह ही माता की प्रार्थना से प्रारंभ होती है। सुबह उठते ही भूमि के संग-संग माता के चरण स्पर्श करने की परंपरा रही है। माँ के समीप रहकर उसकी सेवा करके उसके शुभवचनों, शुभाशीष से जो आनंद प्राप्त किया जा सकता है वह अवर्णनीय है। अपने दिए स्नेह के सागर के बदले माँ बच्चों से कुछ भी नहीं चाहती है। ईश्वर ने प्राणशील सृजन की शक्ति या तो अपने पास रखी है या फिर स्त्री को दी है, इसीलिए माँ ही ईश्वर है। रूडयार्ड किपलिंग के अनुसार 'ईश्वर हर जगह, हर पल आपके साथ नहीं हो सकता था, इसलिए उसने माँ बनाई।'।

माता कौशल्या आदर्श माँ की प्रतीक बिंब है। राम-लक्ष्मण के वियोग से व्यथित माता कौशल्या का हृदय अनगिनत गीतों की प्रेरणा बना। वह पुत्र राम को अपनी आंखों की पुतली, लक्ष्मण को कुल का नायक और सीता को हाथ की करछुल कहती है। सावन-भादों की अंधेरी रात में बादलों की गर्जना सुनकर आशंका से व्यथित होकर देवराज इंद्र से न बरसने की प्रार्थना करती हैं क्योंकि जाने किस वृक्ष के तले राम-लक्ष्मण-सीता भीग रहे हों -

सपना भदौना कै निसी अंहियरिया,
उमडि घुमड़ी दयवां गरजै हो राम।
कवने बिरिछी तरां भीजत होई हैं,
राम लखन दुनौ भईया हो राम।
नाही बरस्या दयवा हो वही कजरी बनवां,
नाहीं भिजिहैं मोरा लरिकवन हो राम।।

हमारे देश में माँ को अपने घर में प्रताड़ित होने के समाचार निश्चय ही दिल दहलाने वाले हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि उन्हें प्रताड़ित करने वाले कोई दूसरे नहीं अपने ही हैं। आज माँ के वृद्ध होते ही

परिवार में उसका सम्मान घट जाता है। जिस माँ के आधा दर्जन बेटे हैं, वे वृद्धा माँ को अपने साथ नहीं रखना चाहते। माँ अपनी बची-खुची जिंदगी बिना विध्न-बाधा के अपने परिवारजनों के साथ काटना चाहती है। जिन बेटों ने माँ की अनदेखी की है, वो भी याद रखें कि बुढ़ापा उनको भी आएगा। आज जिस माँ को वे प्रताड़ित कर रहे हैं कल उनकी भी यही दशा होने वाली है।

आज ऐसे भी बेटे हैं जिनको माँ नहीं सिर्फ उनकी संपत्ति चाहिए। ऐसे व्यक्ति जो अपने कर्तव्यों के निर्वहन में मातृशक्ति को, उनके स्नेह, ममत्व को उपेक्षित कर उन्नति का मार्ग ढूँढने का प्रयास करते हैं, वे जीवनभर निराशा के अलावा कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। ओलिवर वेंडेल होम्स के शब्दों में 'जवानी ढल जाती है, प्रेम कम हो जाता है, दोस्तियां खत्म हो जाती हैं, लेकिन एक माँ की उम्मीदें हमेशा कायम रहती हैं।'



श्री राधा-कृष्ण की लीला और कृपा में भेद



योगेश कुमार मिश्र
हिंदी अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)
असम का कार्यालय, गुवाहाटी

श्री कृष्ण बड़े चंचल थे ... कभी इधर कभी उधर ... उन्हें अपने भक्तों के लिए बहुत काम करना था ... एक-एक क्षण और निमेष का ध्यान था। सब का हिसाब रखना था ... नंद के आंगन में घुटनों के बल चल रहे थे ... घुटने भी तो सही से परिपक्व नहीं हुए थे। पेट के बल चलने वाले कृष्ण घिसट कर चलते ... अंग घुल धूसरित, आंखों का काजल फैला हुआ, धुले हुए वस्त्र मैले, हाथ में मिट्टी, घुंघराले बाल उलझे हुए, ललाट पर पसीने से चिपके केश, कभी-कभी आंखों में घुसता तो केश संग सने हुए स्वेद बिंदु भी आंखों में जाते हैं और उनके आंख में दर्द होता है, आंखें लाल हो जाती, वहां से अश्रु चलते और वे अश्रु आंखों के काले अंजन को ढलकाती हुई गालों पर पसार दे रही है ...

नर्म और मोटी हथेली को धप-धप मारते हुए आगे बढ़ते हैं ... कभी किलकारी मारते हुए तो कभी रोते हुए ... जगत नियंता गोलोक का वैभव त्याग कर यह क्या कर रहा है ... वह भक्तों का दास है या स्वामी है? ... भक्त ने कहा तेरे जैसा पुत्र चाहिए और वह वैसा ही बन जाता है ... थोड़ी सी छाछ के लिए गोपियां कितनी मिन्नतें करवा रही हैं ... और वह यही करता है ... उसे यही करना है ...

जब कृष्ण आंगन में आगे बढ़ रहे थे तो चौखट पर अटक गए ... उनकी लंबाई कम पड़ रही थी ... चौखट बड़ा मालूम पड़ता था ... वाह रे वामन अवतार कहां अटक गया तू ... इस बार किसे पाताल पहुंचायेगा मालिक ...

आकाश में नारायण, नारायण करते हुए देवर्षि नारद विचार रहे थे, मन

हुआ कि भगवान का दर्शन करूं ... देखूं स्वामी कौन सी लीला कर रहे हैं ... जैसे ही नंद बाबा के आंगन में उतरे देखते हैं प्रभु चौखट पर अटक गए हैं न पीछे आ पा रहे हैं ना आगे बढ़ पा रहे हैं ... उन्हें दया आ गई ... प्रभु पसीने, धूल और बिखरे केश से लथपथ थे ... उनकी सांवरी काया, बड़ी-बड़ी कजरारी आंखें सभी में केवल आगे पीछे होने में विकल थीं ...

नारद जी शाष्टांग प्रणाम करके उन्हें सहारा देने को ज्यों ही बढ़े, प्रभु ने उनके हृदय में उन्हें भसित हो कर निर्देश दिया ... नादर तुम मुझे सहारा मत दो, दर्शन करने आए हो दर्शन कर के वापस लौट जाओ ... तुम्हें क्या लगता है मैं यह चौखट लांघ नहीं सकता ... यह लीला तो माता यशोदा और ब्रजंगनाओं के लिए है ... तुम जाओ ...

माता की दृष्टि जब अपने लल्ला पर पड़ी तो वह दौड़ कर आई और परिकरों को डांटते हुए बोली ... तुम लोग कान्हा का थोड़ा भी ध्यान नहीं रखते ... देखो कितना विकल हो रहा है ... केश ... काजल ... धूल ... से उलझा ... इसका पेट देखो कितना खाली है ... यह कह कर एक अंजली पानी ले कर कान्हा का मुंह साफ कर के यशोदा अपने आंचल से कान्हा का मुख कमल पोंछती है। अपने स्तन से लगा कर दूध पिलाती हुई मैया आनंद के सागर में डूबती है ... कान्हा थोड़ा सा आंचल हटा कर कनखी से नारद को देखते हैं ... नारद जी का रोम-रोम पुलकित हो जाता है ... उन्हें ऐसा लगता है मानो किस तपस्या का फल उन्हें अभी मिल गया हो ... बड़े तन्मय हो कर गाते हैं ... श्रीमन्न नारायण नारायण नारायण ... करताल बजाते हुए वे कहीं सुदूर आकाश में खो जाते हैं ... शायद वह भक्ति की पुलकावली आकाश है जिसमें लोग खो जाने को लालायित रहते हैं ...

श्री कृष्ण वन में बांस की टहनी को तोड़ने का प्रयास कर रहे हैं, उनकी वंशी कहीं खो गई है, भगवान चाहें तो क्या नहीं हो सकता है ... लेकिन फिर लीला कैसे होगी ... नाट्य मंचन में कलाकार को पात्र से

न्याय करना होता है। वंशी बजती भी नहीं थी ... केवल आड़ी तिरछी आवाज निकलती थी ...

इस बार वो वंशी खुद बनाएंगे ... अब भगवान जिसका बनाना चाह लें उसे तो बनना ही होगा ... वह कौन सी भाग्यशाली टहनी है जो भगवान की पहुंच से दूर है ... दाउ सब देख रहे हैं ... दाउ भगवान की परछाई हैं।

वे बड़े हुए हैं लेकिन सेवक का भाव उनके भीतर से कहीं पल भर के लिए नहीं जाता ... एक ओर कान्हा बड़े कलाकार हैं, वहीं दाउ फिसड़डी कलाकार हैं।

बड़े हो गए हैं पर भीतर बड़प्पन नहीं आया अभी तक ... हर तरफ बस भगवान का अनुगमन ... जैसे की भाई नहीं माई हो ... कान्हा की जरूरतें केवल वही समझते हैं और उनका यह समझ जाना भी भगवान की लीला में बड़ी बाधा ही तो है।

कहीं इसे रंच मात्र की भी दिक्कत न हो ... दाउ इसी चिंता में दिन रात दुबले होते चले जाते हैं ... टहनी नीचे नहीं आ रही है ... दाउ आगे आए और कान्हा के हाथ में नई वंशी देते हुए बोले ... लो इसे बजाओ ... कान्हा बोले ... दाउ मुझे आपकी बनाई नहीं चाहिए ... दाउ धीरे से बोले आप नहीं तुम कहो ... भगवान बोले आप बेकार ही मेरे

साथ अवतरित हुए ... सारा खेल बिगाड़ देंगे ... अच्छा ठीक है ठीक है ... लल्ला तू जो कहे वही सही ... क्या करूं फिर ... यही की कुछ न करो ... अच्छा सुन तुझे भूख लगी है ...? मैं कलेवा ले कर आऊं ... कान्हा ने कहा जो मां ने दी है? हां हा ... नहीं आज श्रीदामा के घर का खाऊंगा ... अरे ऐसा नहीं करते, बेचारे के पास रूखा सूखा सा कुछ है। उसे भी तुम छीन लोगे तो वह खाएगा क्या ...

देखो दाउ तुम्हें उसकी फिक्र नहीं है कि वह क्या खायेगा?

तुम्हें केवल मेरी फिक्र है ...

जब मैं उसका कलेवा खा लूंगा तो वह मेरे हिस्से का खा लेगा ...

लेकिन तुम्हें तो मेरी पड़ी है कि इसे रूखा-सूखा न खाना पड़े ... बड़े स्वार्थी हो आप ... मेरी चिंता ... जिस दिन मेरे भक्तों की चिंता करोगे उसी दिन मैं आप से प्रसन्न हो जाऊंगा ...

कान्हा तुझसे बातों में भला कौन जीत सकता है ...

चलो एक बार मैं जीतने का प्रयास करता हूं ...

क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि भक्त और श्री भगवान दोनों का ख्याल रखा जाए ...

हां हां यह तो उत्तम है — कान्हा ने कहा ...

चलो इस बार आप जीतते हुए प्रतीत हो रहे हो ...

अरे प्रतीत क्या होता है ...

मैं जीत ही गया ...

नहीं—नहीं तुम देखना जीतते—जीतते हार जाओगे ...

अच्छा यह बताओ कि भक्त और भगवान दोनों कैसे तृप्त होंगे ...

आसान है ... श्रीदामा और तुम, दोनों ही मां का दिया हुआ खा लेना और मैं ... श्रीदामा का ...

देखो—देखो दाउ आखिर मोटी बुद्धि दिख गई ... वो कैसे ... दाउ ने कहा ...

मेरा भक्त रूखा सूखा खाए और मैं माल तर करूं यह मुझे सहन होगा क्या ...

अरे लल्ला श्रीदामा खा तो रहा है ना ...

और तुम ... और तुम दाउ ...

यह कहते—कहते कान्हा की मोटी—मोटी आंखों में अश्रु धार चल पड़ी ... दाउ की दी हुई वंशी धरती पर गिर पड़ी ... दाउ भी भावुक हो गए ... और कान्हा को हृदय से

साट लिया ... भक्त और भगवान दो अलग—अलग हैं क्या ...!

किशोर कान्हा ... थुल—थुल बदन, कजरारी आंखें, मोर पंख से सज्जित केश ... बांके खड़े ... आंखों में शरारत ... पैरों में पैजनी, कमर में कमरबंद, बाजू पर आकर्षक बाजू बंद, पीतवस्त्र से सज्जित कटि प्रदेश ... कोमल और लालिमा युक्त हाथ ... यह नंद का लड़का जिसकी चितवन चुरा ले वह कहीं का नहीं रहता ... वह तो बस उसी का हो जाता है जो सबका है ... जो सबके हृदय में है लेकिन उसके हृदय में कोई—कोई बिरला ही स्थान पाता है ...

ऐसे अंगराज से सज्जित बदन, मोर मुकुट, कोमल रक्तिम होंठ, सजीले चंचल नयन और नीलमणि की आभा से युक्त कृष्ण जिसके मन में एक बार भी आ गए ... वहां काल की भी हिम्मत नहीं कि आस—पास फटक सके ...

एक बार श्री कृष्ण अपने ग्वाल बाल सखा के साथ वन में खेल रहे थे। कभी मोर जैसा नाचते कभी मेंढक की चाल में उछलते, उसकी आवाज में नकल उतारते।

कुछ देर बाद भोग का समय हुआ ... अपने साथ लाए हुए भोजन से लोग उन्हें पवा रहे थे ... कृष्ण कभी

किसी के कंधे पर चढ़ जाते कभी वृक्ष की ओट में छिप जाते ...

आमोद—प्रमोद का समय चल रहा था ... सब बड़े प्रसन्न थे ... यह बात तय थी कि ग्वाल बाल साधारण मानव नहीं थे बल्कि सिद्ध संत यति, ब्रह्मचारी, साधु और परम भक्त थे, वैसे तो भगवान जी कुछ भूलते नहीं लेकिन थोड़ा भी हुआ भजन सदैव याद रखते हैं।

इन्हीं खेल में भगवान ने रूठने का अभिनय किया। कुछ देर तो सब साधारण लगा लेकिन उनके खीजे हुए मुखमंडल से स्पष्ट हो गया कि कान्हा नाराज हैं।

अब मनाने का दौर चलने लगा, पर बालक कृष्ण किसी से नहीं मानते थे ... कोई उन्हें पंखा करता ... कोई मुख में भोजन ठूसता, कोई उन्हें गोदी में उठा लेता ... कान्हा माने नहीं ... सबके भीतर बेचैनी ... शाम ढलने लगी, लौटने का समय है ... कान्हा अचानक जोर—जोर से हंसने लगे ... लोगों ने सोचा, इसे क्या हुआ, अभी तक तो भयंकर नाराज चल रहा था ...

श्री कृष्ण जब अचानक हंसने लगे तो मनसुखा ने कोमल पत्तियों को गोल कर उस से बाजा बजाया ... लता, विटप, कुसुम, जल धाराएं सब ऐसे आह्लादित हुई मानो उन्हें क्या मनवांछित मिल गया हो।

प्रसन्न मुख कमल को देख कर सखा ने कहा ... हे कान्हा तुम रूठे किस बात पर थे ... कान्हा ने कहा बस लगा कि एक अनोखा खेल हो जाए ... और वो आसमान में ताकने लगे ... स्मित आनन पर पूर्णिमा की आभा आने लगी थी।

संध्या का आगमन गो धुली से तीव्र से तीव्रतर हो रही थी ... भगवान सोच रहे थे त्रेता में मेरा एक नाम सत्यसंघ था ... पर क्या सोलह कला के साथ आने से झूठ बोलना भी उसी कला का अंग बन गया है?

वे नाराज और खुश तो किसी और ही बात पर थे ...

योगी जिनको अपनी हृदय में सदैव ... तैल धारावत देखते हैं वे श्री कृष्ण किसके ध्यान में मगन रहते हैं ... बाल क्रीड़ा में भी वे वृंदावनेश्वरी की सतत ध्यान में रहा करते थे ...

मन ही मन कृष्ण ने श्री राधा से कहा ... अब विरह सहा नहीं जाता . .. जल्दी आओ श्यामा ... श्यामा ने जब मना किया तो कन्हैया का मुख मलिन हो गया ... क्लान्त हो कर लताओं के पीछे रूठे से मुंह फुलाए बैठे रहे ... पर रासेश्वरी जो इतनी सरल है कि सरल शब्द उसके सामने कठिन प्रतीत होता है, जो दया की सागर है ... वह तुरंत ही मान गई ... बोली शीघ्र आऊंगी

आपकी लीला में ... वैसे तो वृषभानु लली बन कर अपने आंगन में ही खेल रही हूं ... यहां की रानी हूं ... तुम्हारे जैसा चरवाहा नहीं ... उनके इस व्यंग्य बाण से कान्हा के पेट में गुदगुदी हुई और कान्हा खिल खिला पड़े ...

जब कृष्ण धूल उड़ाती गौ वंशों के साथ नंद गांव पहुंचे तो नंद बाबा उन्हें गोद में उठा लिए ... नंद बाबा को उनकी यह लीला ठीक नहीं लगती थी ... दिन भर का विरह कौन झेले ... वे तो बस कान्हा को सीने से चिपका कर रखना चाहते थे ... लेकिन श्री कृष्ण केवल एक भक्त के लिए तो धरती पर नहीं आए थे ... अगर यही श्री राम करते तो वन में आशा देख रहे जन्म जन्मांतर के भक्तों का क्या होता यद्यपि दशरथ जी वियोग में प्राण खो बैठे ... प्रेम में मरना सरल है या जीना ... मुझे लगता है जीना कठिन है ... कौशल्या और भरत जी से कोई पूछ ले ... हां नहीं तो ...

गौ वंश की धूल प्रभु अपने बदन पर क्यों लेते हैं ... गाय कौन है ... ये परम भक्त हैं ... यह सभी गोलोक से प्रभु की लीला में भाग लेने आए हैं ... भगवान कहते हैं कि मैं तो भक्तों के पीछे-पीछे केवल इस लिए भागता हूं कि उनकी पग धूलि मुझ पर पड़े और मैं पवित्र हो जाऊं ...

भगवान को भी पवित्र होना है भला ...

हां क्यों नहीं जब उन्हें मंदाकिनी में स्नान करना है, जगन्नाथ पुरी में भोजन करना है तो क्षीर सागर में शयन करना है फिर पवित्र भी होना होगा ... भक्त उन्हें पवित्र करते ही होंगे ...

नंद बाबा कान्हा को हृदय से साट कर खूब बातें कर रहे हैं ... यशोदा यह सब देख कर पुलकित हो रही है ... लेकिन वह बड़ी मुश्किल से यह लोभ संवरण कर पा रही है कि कान्हा उसकी छाती से इतना दूर क्यों है ... उन्हें नंद बाबा से ईर्ष्या हुई और वे यह कहते हुए उनकी गोद से श्री कृष्ण को छीन लिया कि यह दिन भर का भूखा प्यासा है ... आप केवल बातों से इसका पेट भरेंगे ... क्यों रे लाला और जल्दी नहीं आ सकता था ...

सबको केवल अपनी पड़ी है ... कौन कितना प्यार कर ले ... दाउ माखन रोटी ले आए और एक कट्टा खुद खा कर कान्हा के मुख की ओर बढ़ाए ... कान्हा ने कौर काटा और मैया की ओर देखा ... मैया डांटती हुई बोली पहले कपड़े बदल ... स्नान कर कितनी धुली लगी है ...

सबको कृष्ण चाहिए ... और कृष्ण को कोई बांटना नहीं चाहता ... खिलाने के बहाने से गोदी में झटक तो ली पर भगवान के श्री अंग को स्नान कराना है ... धुले कपड़े पहनाना है, चंदन टीका, काजल ... और न जाने क्या-क्या उपक्रम ...

श्री कृष्ण भी कृपा करते हैं और श्री राधिका जी भी करती हैं।

लेकिन दोनों में अंतर है ...

उस अंतर में जाने से पहले समझते हैं श्री हरि और शिव जी की कृपा में ... भोलेनाथ जिनका नाम आशुतोष भी है — आशु अर्थात् शीघ्र, तोष अर्थात् तुष्ट या संतुष्ट या प्रसन्न ... जो शीघ्र प्रसन्न हो जाएं ... जो शीघ्र प्रसन्न होंगे वे मनचाहा वर भी जल्दी दे ही देंगे ... कई बार सदाशिव ने वरदान दिया भी है कभी-कभी वे खुद भी फंसते रहे हैं ... भले ही यह उनकी लीला मात्र हो ... बाद में श्री हरि उनका निराकरण करते नजर आते हैं।

जबकि श्रीहरि केवल विशुद्ध भक्ति से ही रीझते हैं उनके सामने छल नहीं चल सकता।

श्री राधा रानी सरकार भी बहुत भोली हैं ... उनके सामने कोई झूठ ही कह दे कि मैं आपका दास हूँ ... वे कृपा कर देती हैं ... वैसे ही कर देती हैं जैसे एक मां अपनी संतान

पर करती है। माता के सामने भयंकर अपराधी संतान भी निर्मल होता है ...

श्रीजी दूसरा काम बड़े महत्व का करती हैं ...

यह कोई महत्व की बात नहीं कि आप पात्र हैं या कुपात्र ... वे आपको सदपात्र बना देती हैं ... ऐसा बना देती हैं कि श्री लाल जी यानी श्री कृष्ण उस पर सहज कृपा कर देते हैं।

यह मेरा निजी अनुभव है।

वाराणसी में एक साधु गृहस्थ के घर गया था, वे स्वामी अखंडानंद जी के शिष्य हैं ... उनसे हमने पूछा कि अपने इष्ट का पता कैसे प्राप्त करूं ... किस विधि उन्हें पाऊं ... उन्होंने उपाय बताया ... कि श्रीमद्भागवद्गीता के द्वितीय अध्याय के सातवें श्लोक का जप कीजिए।

यथा ...

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसम्मूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां
प्रपन्नम्॥७॥

मैं अपने कर्तव्य के बारे में उलझन में हूँ और चिंता और बेहोशी से घिरा हुआ हूँ। मैं आपका शिष्य हूँ और आपके सामने आत्मसमर्पण

कर रहा हूँ। कृपया मुझे कुछ निर्देश दें जो मेरे लिए सबसे अच्छा है।

गौरीकेदारेश्वर महादेव के मंदिर में जप करते समय आंखों से अश्रु झरने लगे ... नीले घाघरे में किशोरी जी सामने खड़ी थीं ... तप्त कंचन गौरांगी ... खूब गोरी, बड़ी पानीदार आंखों ... लाल महावर लगे कोमल पदकमल ... स्वर्णाभूषण से लदी हुई महालक्ष्मी .. ने कहा ... जिसे ढूँढ़ रहे हो उस तक आने का रास्ता मुझसे हो कर जाता है ... कृष्ण मुझमें हैं ...

आंखों के सामने का वह दृश्य और फिर मेरा बीमार होना ...

चूंकि मैं प्रमाणिक अपराधी, पातक और घोर पापी हूँ। अतः ... मुझ अधम ने उस अमृत वचन को भुला दिया ... कुछ महीने पहले उन्होंने जब पुनः कृपा की तब जा कर फिर से कृतार्थ हुआ ...

लेकिन मेरा विषयी मन गोबर के कीड़े की तरह बार-बार गोबर में घुस ही जाता है ...

फिर भी कहने में क्या लगता है ...

हे श्री राधे हे जगजननी 'मैं तो केवल आपका और श्री कृष्ण का दास हूँ' ... मुझ जैसे निर्लज्ज की लाज ही क्या है बाकी अपनी देख लेना ...

कुछ देकर, कुछ पाना मूर्खता नहीं

सुश्री वी. चित्रा
हिंदी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सलाई,
तेनामपेट, चेन्नई-600018

वॉट्सअप मैसेज के रूप में मैंने जो पढ़ा वह वाकई दिल को छूने वाला था। यह गोवा राज्य के मुख्यमंत्री स्वर्गीय श्री मनोहर पर्रीकर के जीवन की घटना है। उनका पैतृक गाँव बर्सा है। जिस तरह किसी भी जगह की कुछ चीजें विशेष होती हैं, उसी तरह बर्सा गाँव की विशेषता, वहाँ उगने वाले तरबूज के फल हैं। बाज़ार में सबसे घने, सघन व ताजा फल मिले तो वह जरूर बर्सा के तरबूज ही होंगे। पर्रीकर जी जब छोटे थे, तब गाँव के एक वयोवृद्ध व्यक्ति बच्चों के लिए तरबूज खाने की प्रतियोगिता आयोजित करते थे। बच्चे उसमें भाग लेकर जितने चाहें उतने तरबूज खा सकते थे।

बाद के वर्षों में वे इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने के लिए मुंबई चले गए। पढ़ाई पूरी करके साढ़े छः

साल के बाद वे अपने गाँव वापस लौटे। मंडी जाकर गाँव के तरबूज फलों को देखने पर वे निराश हुए। सभी फल दिखने में बहुत छोटे लग रहे थे। बर्सा फलों की वह परंपरा, वह सघनता कहाँ चली गयी?

वे तरबूज प्रतियोगिता आयोजित करने वाले उस बुजुर्ग व्यक्ति की तलाश में निकले। उनका बेटा अब प्रशासनिक दायित्व ले चुका था। वे अब भी तरबूज प्रतियोगिता का आयोजन कर रहे थे। लेकिन पुराने तरीके के अनुसार नहीं, बल्कि एक छोटे से बदलाव के साथ। बुजुर्ग प्रतियोगिता आयोजित करते समय अपने खेत में उगा सबसे बड़ा फल बच्चों को खाने के लिए देते थे। प्रतियोगिता में यह शर्त थी कि कोई भी बीज को न खाएँ और उसे न ही दाँत से काटकर क्षति

पहुँचाएँ। उनको अलग से एक कटोरी में डाल दें। बुजुर्ग उन्हीं बीजों को अगली उपज के लिए उपयोग करते थे। बड़े फल का बीज अगले साल और भी बड़े फल देता था। यूँ कहें तो हम लोग उनके लिए अच्छे बीज जुटा कर देने वाले बिना वेतन के मजदूर थे।

लेकिन जब बेटा प्रतियोगिता आयोजित करने लगा, तब उसके मन में यह विचार आया कि क्यों न बड़े फल गाँव के लोगों को खिलाएँ। बड़े फलों के लिए बाज़ार में अच्छा दाम मिलेगा, यह सोचकर छोटे फलों को प्रतियोगिता के लिए देने लगा। छोटे फलों के बीज अगली उपज में छोटे फल ही देते थे। सात वर्षों में ही बर्सा के बहुत खास तरबूज के फलों का इतिहास समाप्त हो चुका था।

इस तरह केन्द्रीय सुरक्षा मंत्री मनोहर पर्रीकर दुख के साथ अपने जीवन अनुभव को साझा कर रहे थे।

इस तरह आप देखेंगे कि दूसरे को अच्छी चीज़ क्यों दें, इस तरह स्वार्थी बनकर सोचने वाला अपने लिए जो अच्छा है उसे भी खो बैठता है।

ऐसा लगता है कि सभी तरह से सोच कर देखें तो सार्वजनिक

कल्याण में भी थोड़ा स्वार्थ निहित है। आप सब एक उदाहरण से इसे समझ सकते हैं। जैसे तालाब की अशुद्धियों को खाकर मछली उसे शुद्ध करती है उसी तरह दूसरों की खुशी के लिए हम जो कार्य करेंगे, उस समय ऐसा लगेगा कि इससे हमें दस पैसे का भी लाभ नहीं है लेकिन हमारे जाने बिना वह परोक्ष रूप से उपयोगी होता होगा।

यह संसार मात्र हमारे लिए सृजित नहीं किया गया है। हमारे ऊपर

उठने व नीचे गिरने के लिए मात्र हम कारण नहीं हैं। समूह के साथ जुड़कर रहने वाली इस जिंदगी में, हमारे लिए वांछित सभी चीज़ों को हमें समूह से ही प्राप्त करना होगा। यदि आपको लेना है तो देना भी जरूर होगा। इस तरह देकर प्राप्त करने की युक्ति को मूर्खता या जीने लायक गुण नहीं हैं, यह सोचकर निःस्वार्थता को हाथ में ले तो हम बर्बाद तरबूज़ की तरह हो जाएंगे।



राजभाषा हिंदी और अमृतकाल



दया सागर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.),
हिमाचल प्रदेश, शिमला

वास्तव में हिंदी हमारी राजभाषा है, जन-जन की भाषा है, आम आदमी की भाषा है, भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। मुझे इस बार सूरत में आयोजित द्वितीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में जाने का मौका मिला। सूरत भ्रमण के दौरान मैंने पाया कि हिंदी और गुजराती की संरचना में कोई खास अंतर नहीं है। ऐसे ही मराठी, पंजाबी और बंगला भाषा की संरचना भी आपस में मेल खाती है। देवनागरी लिपि में हिंदी के अलावा संस्कृत, मराठी, कोंकणी, सिंधी, भोजपुरी, मगही, कश्मीरी, नेपाली, गढ़वाली, बोडो, संथाली, मैथिली आदि भाषाएं भी लिखी जाती हैं। अतः हिंदी ऐसी भाषा है जिसकी लिपि बाकी सभी क्षेत्रीय भाषा से

मिलती-जुलती है। हिंदी को आजादी के पश्चात राजभाषा का दर्जा तो प्राप्त हुआ है लेकिन बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत सरकार ने अधिकारिक रूप से अभी तक इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया। जबकि सूरत में आयोजित द्वितीय राजभाषा सम्मेलन में सभी हिंदी-अहिंदी भाषी लोगों ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का समर्थन किया तथा कई अहिंदी भाषी लोगों के उदाहरण भी दिए जिन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाने का समर्थन किया।

गुजराती कवि वीर नर्मद जिन्होंने 1880 के दशक में सबसे पहले हिंदी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा था। उन्होंने कहा था कि गुजरात में गुजराती और

पूरे देश में शासन के लिए हिंदी का प्रयोग होना चाहिए।

हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना महात्मा गांधी जी का सपना था। महात्मा जी ने पाया कि हर प्रांत में कुछ हिंदी बोलने वाले लोग हैं इसलिए जो राष्ट्र को एक सूत्र में पिरो सकती है वह भाषा हिंदी है। महात्मा गांधी जी ने आजादी से पहले और आजादी के बाद भी हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाने के लिए प्रयत्न किए। हिंदी को राष्ट्र भाषा बनाना महात्मा गांधी जी, वीर नर्मद, सुभाषचंद्र बोस आदि कई महापुरुषों का सपना था। लेकिन किसी भी सरकार ने उनके सपने को पूरा नहीं किया। महात्मा गांधी जी ने कभी नहीं बोला होगा कि भारतीय मुद्रा पर उनकी तस्वीर होनी चाहिए लेकिन भारतीय मुद्रा

पर उनकी तस्वीर है। लेकिन हिंदी भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने की उनकी इच्छा अभी तक पूरी नहीं हुई।

मेरा तो यह मानना है कि गांधी जी की इच्छा पूरी करने की कोशिश ही नहीं की गई, नहीं तो संविधान लागू होने से 10 साल ही पर्याप्त थे, जिनमें हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित किया जा सकता था। हिंदी को राष्ट्रभाषा घोषित करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि हिंदी विश्व में तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। जैसे राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय गीत, राष्ट्रीय गान इत्यादि घोषित किये गए और हमारे देश की पहचान को व्यक्त करते हैं, उसी तरह से राष्ट्रीय भाषा हिंदी हमारे देश की पहचान है। जैसे हर राष्ट्र की राष्ट्रभाषा होती है वैसे ही भारत की भी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए।

देश ने शहीदों को सम्मान देने के लिए उनके नाम पर पथ और स्मारक बनाए, लेकिन आज अंग्रेजी और सुगमता के कारण हम अपने शहीदों के नाम और उनके द्वारा दिए गए बलिदान को भूल रहे हैं।

महात्मा गांधी पथ को एम.जी. रोड़ कहते हैं और भगत सिंह पथ को बी.एस. रोड़ कहते हैं। ऐसा करने से हिंदी भाषा और हमारे शहीदों, दोनों की उपेक्षा हो रही है।

आज हमारा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। अमृतकाल का अर्थ है, ऐसा काल जब भारत सर्वोच्च पद पर आसीन हो जाए। भारत की भाषा, ज्ञान, संस्कार और परंपरा अमर हो जाए। संस्कार और परंपरा ऐसी हो, जिससे नागरिक खुशहाली और उन्नति के पथ पर अग्रसर हो। नागरिक एक दूसरे का सम्मान करें और सरकार उनकी मदद करे। कोई व्यक्ति भूख प्यास से न मरे। हर विपदा, हर बीमारी का उपचार भारत के पास हों। भारत एक स्वच्छ और सुंदर देश बने। भारत हर क्षेत्र में आत्मनिर्भर बने और सभी तकनीक भारत विकसित कर ले। कोई भी देश भारत को नुकसान पहुंचाने के बारे में सोच भी न सके। जैसा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने कहा है कि आजादी के 75 से 100 वर्षों तक अमृतकाल का समय गुलामी के स्मारकों को मिटाने का समय है। साथ ही दूसरे देशों की अच्छी

परंपराएं और तकनीक ग्रहण करके अपने देश में लागू करने की जरूरत है। भारत की सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा ही राष्ट्रभाषा बने। हर भारतवासी अपनी राष्ट्रभाषा बोलने में गर्व का अनुभव करें। ये अमृतकाल का समय, भारतीय भाषाओं को स्थापित करने का समय है।

पिछले 75 वर्षों में हम हिंदी को राष्ट्रभाषा नहीं बना पाए। सभी वैज्ञानिक, तकनीकी, चिकित्सा, यांत्रिक आदि पाठ्यक्रम अंग्रेजी में हैं। अंग्रेजी भाषा को राजभाषा के रूप में लगातार विस्तार मिला। जिस कारण सभी कार्यालयों के कार्य अंग्रेजी में होते थे। आज भी न्यायालय की सारी कार्यवाही अंग्रेजी में होती है। सभी नियम और नियमावली केवल अंग्रेजी भाषा में मान्य हैं। ये सब प्रथाएं अंग्रेजों द्वारा बनाई गई थीं क्योंकि पहले सभी न्यायाधीश व अधिकारी अंग्रेज ही होते थे। ज्यादातर नागरिक अंग्रेजी में बात करना उच्चवर्ग की निशानी समझते थे। देश-विदेश में व्यापार और रोजगार के कारण भी अंग्रेजी भाषा को ज्यादा बढ़ावा मिला।

यहां किसी देश की भाषा का विरोध नहीं है, हम सभी देशों की भाषाओं का सम्मान करते हैं। अंग्रेजी एक सरल भाषा है जिसे हर व्यक्ति आसानी से सीख और समझ सकता है और भारत में अंग्रेजी भाषा में कार्य करने के सभी साधन उपलब्ध हैं। दुःख इस बात का है कि हिंदुस्तान में हिंदी का विरोध हो रहा है और राष्ट्रभाषा के नाम पर राजनीति हो रही है। एक पत्र को दो-दो भाषाओं में लिखकर कार्यालयों के कार्य में वृद्धि हो रही है। हिंदी को लागू करने की जिम्मेदारी उन अधिकारियों को दी गई है, जिन्हें स्वयं हिंदी में कार्य करने में कठिनाई हो रही है।

अंग्रेजी विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। अतः विश्व में अपनी उपलब्धियां प्रचारित करने के लिए अंग्रेजी और अन्य प्रादेशिक भाषाओं का ज्ञान भी जरूरी है। अगर हम केवल हिंदी भाषा में कार्य करने लगेंगे तो अंग्रेजी या किसी अन्य प्रादेशिक भाषा पर हमारी पकड़ कमजोर हो जाएगी। हमें कोई ऐसा रास्ता निकालना होगा, जिससे हम सभी भाषाओं पर अपनी पकड़ मजबूत कर सकें। अतः राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा

घोषित कर देना चाहिए और हर विभाग में (न्यायालय सहित) कम से कम 75 प्रतिशत कार्य हिंदी में करना आवश्यक बनाना चाहिए तथा बाकि 25 प्रतिशत कार्य अंग्रेजी या अन्य प्रादेशिक भाषाओं में करने की छूट होनी चाहिए। एक तर्कसंगत और व्यावहारिक रास्ता निकालना बहुत जरूरी है ताकि सभी भाषाओं को उचित सम्मान मिल सके।

आज हिंदी भाषा में कितने प्रतिशत कार्य किया जा रहा है, इसके प्रतिवेदन बनाये जाते हैं। हर साल हिंदी पखवाड़ा मनाया जाता है। अधिकारियों को हिंदी में प्रशिक्षण दिया जाता है, फिर भी उन्हें हिंदी में कार्य करने में बड़ी कठिनाई होती है। हर वर्ष राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा सम्मेलन हो रहे हैं। लेकिन आजादी के 75 वर्षों बाद भी हिंदी भाषा के विकास में कोई विशेष बढ़ोतरी नहीं हुई है।

अगर राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाना है तो राजभाषा सम्मेलन आयोजित करने के लिए हमें किसी विशेष राज्य का चयन करना चाहिए, जिसने हिंदी भाषा के

प्रसार में विशेष योगदान दिया हो। मेरा सुझाव है कि हिंदी राजभाषा सम्मेलन उस राज्य में करना चाहिए जो 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र में आता है तथा इस उपलब्धि के लिए उस राज्य को विशेष पुरस्कार और अतिरिक्त राशि प्रदान करने की घोषणा करनी चाहिए ताकि बाकी राज्यों को भी इससे प्रेरणा मिले और वो भी शीघ्र से शीघ्र 'क' क्षेत्र में शामिल हो सकें।

इस बारे में सभी विद्वानों, राजनीतिज्ञों, उद्योगपतियों और शिक्षाविदों को चिंतन करने की आवश्यकता है कि किस तरह अमृतकाल की अवधि में महात्मा गांधी जी व अन्य महापुरुषों का हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने का सपना पूरा किया जा सके और साथ ही भारतीयों को शिक्षा और रोजगार के पाठ्यक्रम/साधन और न्याय भी भारतीय भाषाओं के माध्यम से मिल सके। इस अमृतकाल में भारत की अमरगाथा स्वर्ण अक्षरों में लिखी जाये, गुलामी के सभी प्रतीक मिटा दिए जाएं और विकसित होकर भारत फिर से विश्वगुरु के पद पर स्थापित हो सके।

जय हिंद, जय भारत, जय हिंदी।

हमारा परिचय : एक सनातन कालखंड गणना

कृष्ण मुरारी जयपुरियार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
वीरचंद पटेल मार्ग, बिहार, पटना

आधुनिक विज्ञान के हिसाब से धरातल पर किसी की स्थिति जानने के लिए द्विआयामी अर्थात् एक्स और वाई एक्सिस पर स्थिति काफी है। परंतु अगर आकाश में यही स्थिति जाननी हो तो इसके लिए ऊंचाई सहित तीनों आयामों की आवश्यकता होती है। और जब ब्रह्मांड में किसी की स्थिति जाननी हो तो चौथे आयाम अर्थात् समय की जानकारी भी आवश्यक है।

भारतीय सनातन धर्म परंपरा में यह माना जाता है कि ईश्वर अनंत और अविनाशी हैं तथा इस ब्रह्मांड से परे हैं और साथ ही उनके द्वारा हर क्षण ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश एक सतत प्रक्रिया है। अर्थात् यदि हमें ईश्वर को अपनी पहचान बतानी हो तो उपरोक्त चारों आयामों के अलावा संबंधित ब्रह्मांड में अपनी स्थिति को स्पष्ट करना एक आवश्यकता होगी।

इसके प्रमाण के लिए हम किसी संकल्प को लेने की प्रक्रिया से समझ सकते हैं। संकल्प अर्थात् कोई निश्चय या वादा, और यह जिसके सामने लिया जाता है सर्वप्रथम उसे अपना परिचय दिया जाता है ताकि सामने वाला यह समझ सके कि यह संकल्प किसके द्वारा लिया गया है। भारतीय सनातन धर्म अर्थात् हिंदू परंपरा के अनुसार जब किसी पूजा को प्रारंभ करते हैं तो सबसे पहले एक संकल्प लेते हैं। इस संकल्प के समय पुरोहित अपने यजमान को हाथ में जल एवं द्रव्य लेकर एक मंत्र का उच्चारण कराते हैं जो निम्न प्रकार है :

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः, ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे भू लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे (अपने नगर/गांव का नाम) पुण्य क्षेत्रे बौद्धावतारे वीर विक्रमादित्यनृपते तमेऽब्दे नाम संवत्सरे उत्तरायणे ऋतो महामंगल्यप्रदे मासानां मासोत्तमे मासे पक्षे प्रतिपदायां तिथौ वासरे (ग्रहों की स्थिति)।। (गोत्र का नाम) गोत्रोत्पन्नोऽहं अमुकनामा (अपना नाम) सकलपापक्षयपूर्वकं सर्वारिष्ट शांतिनिमित्तं सर्वमंगलकामनया – श्रुतिस्मृत्योक्तफल प्राप्त्यर्थं मनेप्सित कार्यं सिद्ध्यर्थं पूजनं च अहं करिष्ये।

उपरोक्त मंत्र वास्तव में आपके परिचय की एक सम्पूर्ण गणना है जिसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

इस मंत्र का एक भाग जिसमें 'भू लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे ----- (अपने नगर/गांव का नाम)' मूल रूप में हमारा इस भू लोक अर्थात् पृथ्वी पर रहने का पता है जिसमें जम्बूद्वीप का अर्थ प्राचीन जम्बुद्वीप जिसमें आज के इजरायल से चीन तक एवं रूस से श्रीलंका तक की भूमि समाहित थी का जिक्र है और शेष शब्द स्वयं में समझने योग्य है। इसके बाद की पंक्तियां वर्तमान समय को इंगित करती हैं जिसमें भगवान विष्णु के अवतार (बौधवतार) से लेकर वर्तमान संवत्, सूर्य की स्थिति (उत्तरायण या दक्षिणायन),

ऋतु, माह, पक्ष (कृष्ण या शुक्ल), तिथि तथा दिन के साथ इसे और अधिक सटीक बनाने के लिए ग्रहों एवं नक्षत्रों की वर्तमान स्थिति का उल्लेख होता है। और अंत में स्वयं का परिचय यथा अपना नाम तथा गोत्र का जिक्र किया जाता है।

अब बात करते हैं पहली पंक्ति जो 'अद्य ब्रह्मणोऽहि द्वितीय परार्धे श्री श्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलिप्रथम चरणे' वास्तव में हमारे वर्तमान ब्रह्मांड का वर्णन है। इसे समझे, इससे पहले यह समझना आवश्यक है कि आखिर ब्रह्मांड का परिचय क्यों? हम सभी जानते हैं कि हिंदू धर्म में ईश्वर को अनंत, अविनाशी और इस ब्रह्मांड से परे बताया गया है। तुलसीदास कृत श्री रामचरितमानस में भी यह वर्णन है कि किस प्रकार जब कागभुशुंडी जी बालक श्रीराम के मुख में प्रवेश करते हैं तो उन्हें कोटि-कोटि ब्रह्मांड और कोटि-कोटि ब्रह्मा, महेश और अन्यान्य जीव-जंतुओं के दर्शन होते हैं परंतु उन्हें सभी जगह बस एक ही राम दिखते हैं। इसका अर्थ है कि ईश्वर एक है और वह नित्य नए ब्रह्मांड का निर्माण और विनाश करते हैं।

हिंदू धर्म की मान्यताओं तथा विशेष रूप से विष्णु, भागवत एवं मत्स्य पुराणों के अनुसार ब्रह्मा जी की आयु एक सौ वर्ष होती है जिसमें वर्तमान में ब्रह्मा 50 की आयु पार कर अपने दूसरे परार्ध अर्थात् 51वें वर्ष में हैं। परंतु उनके वर्ष के एक दिन को एक 'कल्प' के रूप में जाना जाता है। और एक कल्प धरती के 4.32 बिलियन वर्ष अर्थात् 432 करोड़ वर्ष की होती है। मत्स्य पुराण में कुल 30 कल्पों का उल्लेख है जो निम्न प्रकार है :

श्वेता (वर्तमान), नीललोहिता, वामदेव, रतनतारा, रौरव, देवा, वृहत, कंदरपा, सद्या, ईशान, तमः,

सारस्वत, उडान, गरुड़, कौरमा, नरसिंह, समाना, अज्ञेय, सोम, मनव, तत्पुमान, वैकुण्ठ, लक्ष्मी, सावित्री, अघोरा, वराह, वैराजा, गौरी, माहेश्वर और पितृ।

एक कल्प को 14 मन्वन्तरों में बांटा गया है। मन्वन्तर, हिंदू धर्म अनुसार, मानवता के प्रजनन की आयु होती है। यह समय मापन की खगोलीय अवधि है। मन्वन्तर एक संस्कृत शब्द है, जिसका संधि-विच्छेद करने पर = मनु + अन्तर मिलता है। इसका अर्थ है मनु की आयु।

प्रत्येक मन्वन्तर एक विशेष मनु द्वारा रचित एवं शासित होता है, जिन्हें ब्रह्मा द्वारा सृजित किया जाता है। मनु विश्व की और सभी प्राणियों की उत्पत्ति करते हैं, जो कि उनकी आयु की अवधि तक बनती और चलती रहती हैं। उस मनु की मृत्यु के उपरांत ब्रह्मा फिर एक नये मनु की सृष्टि करते हैं, जो कि फिर से सभी की सृष्टि करते हैं। इसके साथ-साथ विष्णु भी आवश्यकता अनुसार, समय-समय पर अवतार लेकर इसकी संरचना और पालन करते हैं। इनके साथ ही एक नये इंद्र और सप्तर्षि भी नियुक्त होते हैं।

इन 14 मनुओं के नाम निम्न हैं —

श्वेत बारह कल्प के कुल 14 मनु इस प्रकार हैं — स्वायम्भु मनु, स्वरोचिष मनु, औत्तमी मनु, तामस मनु, रैवत मनु, चाक्षुष मनु, वैवस्वत मनु, सावर्णि मनु, दक्ष सावर्णि मनु, ब्रह्म सावर्णि मनु, धर्म सावर्णि मनु, रुद्र सावर्णि मनु, रौच्य या देव सावर्णि मनु तथा भौत या इन्द्र सावर्णि मनु।

चौदह मनु और उनके मन्वन्तर को मिलाकर जो एक कल्प बनता है वही ब्रह्मा का एक दिवस होता है। प्रत्येक कल्प के अन्त में प्रलय आती है, जिसमें ब्रह्मांड का संहार होता है और वह विराम की स्थिति में आ

जाता है, जिस काल को ब्रह्मा की रात्रि कहते हैं। ब्रह्मा के एक महीने में ऐसा तीस दिन और रात या 259.2 अरब वर्ष होते हैं। महाभारत अनुसार, ब्रह्मा के 12 महीने (= 360 दिन) उनके वर्ष का गठन करते हैं, और ऐसे 100 वर्षों को उनके जीवन का महाकल्प (311104 ट्रिलियन वर्ष या 36,000 कल्प + 36,000 प्रलय) कहा जाता है।

इसके उपरांत सृष्टिकर्ता ब्रह्मा फिर से सृष्टि रचना आरंभ करते हैं, जिसके बाद फिर संहारकर्ता भगवान शिव इसका संहार करते हैं। और यह सब एक अंतहीन प्रक्रिया या चक्र में होता रहता है। वर्तमान में 7वें मन्वन्तर अर्थात् वैवस्वत मनु चल रहा है।

एक कल्प में 1000 चतुर्युग जिसे महायुग भी कहते हैं, होता है। ये चतुर्युग हैं सत्य युग, त्रेता युग, द्वापर युग एवं कलियुग। पुनः एक मन्वन्तर में इन चारों युगों के 71 चक्र होते हैं जिसमें अभी 28वां (अष्टाविंशति) युग चक्र का कलियुग चल रहा है जो अपने चार चरणों के प्रथम चरण में है।

चारों युगों की आयु (4:3:2:1 के अनुपात में) – सतयुग = 1728000 वर्ष, त्रेतायुग = 1296000 वर्ष, द्वापरयुग = 864000 वर्ष और कलियुग = 432000 वर्ष।

इस प्रकार 1 चतुर्युगी की कुल आयु = 1728000 + 1296000 + 864000 + 432000 = 4320000 होती है।

इस प्रकार 14 मन्वन्तरों के 71 चक्र में कुल $14 \times 71 \times 432000 = 424080000$ वर्ष होते हैं।

अब इसमें प्रत्येक चतुर्युग के संधि काल के समय जो षष्ठांश के बराबर होता है तथा कल्पों के प्रारंभ और अन्त की संध्या के काल समय जो एक संध्या काल

एक त्रेता युग के बराबर होता है, कुल 25920000 वर्ष आता है। इस प्रकार एक कल्प में कुल 432 करोड़ वर्ष होते हैं। (यह गणना लिंग और स्कंध इत्यादि पुराणों से, पुरी पीठाधीश्वर जगद्गुरु शंकराचार्य श्री निश्चलानन्द सरस्वती द्वारा उत्तरोत्तरित है।) ऐसे तो ब्रह्मा जी की आयु और उनका एक दिन मात्र हमारी कल्पना से परे है परंतु उस अनंत और अविनाशी ईश्वर के समक्ष यह ब्रह्मा की रचना आकाश में एक बिजली की चमक मात्र है और यह विशाल समुद्र में उठते बुलबुले के समान है।

अतः उपरोक्त मंत्र में हमारा परिचय है कि हम उस ब्रह्मांड के वासी हैं जो उस ब्रह्म के द्वारा निर्मित है और जो अपने उम्र के द्वितीय परार्ध अर्थात् 50 की आयु पार कर चुके हैं तत्पश्चात अपने पहले कल्प 'श्वेत कल्प' अर्थात् पहले दिन में हैं अर्थात् इनकी उम्र 50 वर्ष एक दिन है। और हम इस कल्प के 71 चतुर्युगी चक्र के 28वें (अष्टाविंशती) चक्र के कलियुग के चार चरणों के प्रथम चरण में हैं। अब इसके बाद हम अपना नाम और गोत्र अर्थात् वंश के नाम के बाद वर्तमान समय का उल्लेख करते हैं ठीक उसी प्रकार है जैसे न्यायालय में कोई शपथ पत्र दाखिल किये जाने पर अपने परिचय का विवरण दिया जाता है।

इससे एक ओर यह स्पष्ट है कि हमारी वैदिक गणना कितनी प्राचीन और संपुष्ट है जिसे हम आज भी अपनाते हैं और साथ ही हमें यह ईश्वर की विशालता का भी अनुभव कराती है और यह बताती है कि हमारा अस्तित्व इस ब्रह्मांड में नगण्य मात्र है। इसके अलावा ग्रेगरियन कैलेंडर की भांति दिन, माह एवं वर्ष की गणना यह बताती है कि किस प्रकार इन सभी गणनाओं का मूल हमारा सनातन कालखंड गणना है जो हमें इस भारतीय संस्कृति का होने पर गर्व की अनुभूति देता है।

ताज के अलावा भी बहुत कुछ दर्शनीय है आगरा में



ललित कुमार वर्मा

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (रक्षा सेवायें)
सातवीं मंजिल, ए-ब्लॉक, रक्षा कार्यालय कॉम्प्लैक्स
अफ्रीका एवेन्यू, नई दिल्ली-110066

यमुना नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित ताज को 1983 विश्व में यूनेस्को ने विश्व धरोहर स्थल घोषित किया है। इसे विश्व के सात आधुनिक आश्चर्यों (अजूबों) में से एक माना जाता है। इसमें भारतीय पारसी और इस्लाम वास्तुकला का मिश्रण है।

ताजमहल का निर्माण शाहजहां (शासनकाल 1628 से 1658) ने सन् 1632 में शुरू करवाया था और इसका निर्माण कार्य 1653 में पूर्ण हुआ था। कहा जाता है कि 21 वर्षों में बने इस स्मारक को बनवाने में 20,000 से अधिक कारीगरों ने योगदान दिया था। ताज का भीतरी भाग पेंट, प्लास्टर व पत्थर की नक्काशी इत्यादि से सुसज्जित है। ताज का गुंबद संगमरमर से बना है जो कमल के डिजाइन से अलंकृत है।

शाहजहां ने अपनी बीवी मुमताज महल की याद में ताज का निर्माण करवाया था। जिसे देखने के लिए देश विदेश के दर्शक यहां पहुंचते हैं। ताज के दर्शन दिन के अलावा प्रत्येक माह की पूर्णिमा के आसपास के चार पांच दिनों में रात को भी किया जा सकता है।

ताजमहल की संरचनात्मक पहलूओं को बादशाहनामा पुस्तक में बताते हुए कहा गया है कि इसका संपूर्ण बाहरी हिस्सा सफेद संगमरमर से जबकि भीतरी हिस्सा ईंट व चूना पत्थर से बना हुआ है। इसी तरह गुंबद व इसके बेलनाकार आधार का बाहरी भाग सफेद संगमरमर से व भीतरी भाग चूने से बना है। इसकी नींव काफी मजबूत है और यह पूरा ताजमहल ठोस पत्थरों से बने चबूतरे पर बना हुआ है। ताजमहल के प्रत्येक

मीनार की ऊंचाई जमीन से कलश तक 42.95 मीटर यानी 140.91 फुट है।

पूर्णिमा के आसपास चार पांच दिन ताज रात को दर्शन हेतु खुलता है। जिसमें प्रत्येक दिन पांच बैच जिसमें प्रत्येक में 40 लोग होते हैं, शाम आठ बजे शुरू होता है। प्रत्येक बैच के लिए 30 मिनट का समय निर्धारित होता है।

ताज में प्रवेश द्वार पूर्व का खुलता है जिसके लिए आधा घंटा पहले शिल्पग्राम में पहुंचना होता है। वहां टिकट की जांच पड़ताल, सुरक्षा चैक के बाद विद्युत जनित वाहनों में बैठकर ताज परिसर में ले जाया जाता है।

आगरा फोर्ट के विपरीत दिशा में जामा मस्जिद स्थित है जिसका निर्माण शाहजहां ने अपनी पुत्री



आगरा में स्थित ताजमहल का मनोरम दृश्य

जहांनारा बेगम की इच्छानुसार करवाया था। कहा जाता है कि इस मस्जिद का निर्माण पांच वर्षों में 1649 में हुआ था। इसे भारत वर्ष की बड़ी मस्जिदों में से एक माना जाता है। बताया जाता है कि इसके निर्माण में तब 5 लाख रुपये खर्च हुए थे। इस मस्जिद की भव्यता को देखकर कोई भी हैरान हुए बिना नहीं रह सकता है।

यमुना नदी के दाहिनी ओर एत्माद उद दौला का मकबरा स्थित है। इसे छोटा ताज भी माना जाता है। यह मकबरा सन् 1622 और 1628 के बीच जहांगीर की पत्नी नूरजहां ने अपने पिता मिर्जा ग्यास बेग की स्मृति में बनवाया था। उन्हें जहांगीर ने एत्माद उद दौला यानि राज्य का पिलर की संज्ञा से नवाजा था। यह मकबरा उत्कृष्ट

कला के लिए प्रसिद्ध है। यह यमुना नदी के पश्चिमी किनारे पर स्थित है। इसे भारतवर्ष में संपूर्ण रूप से संगमरमर से बनाया जाने वाला पहला स्मारक माना जाता है।

यहां आगरा का किला भी दर्शनीय है। यमुना नदी के किनारे स्थित इस किले के निर्माण के बारे में

कहा जाता है कि शुरूआत में राजपूत राजा बाद सिंह ने इसका निर्माण करवाया था, तब इसे बादलगढ़ कहा जाता था। सिकन्दर लोदी द्वारा दिल्ली से आगरा राजधानी स्थानांतरित करने के बाद उसके पुत्र इब्राहिम लोदी ने 1526 में पानीपत के युद्ध में मारे जाने तक इस किले पर कब्जा जमाये रखा। कहा जाता है लोदी काल में इस किले में कई महल, कुएं इत्यादि बनाये गये थे। बाबर के बाद 1530 में उसके पुत्र हुमायूं की यहां ताजपोशी हुई थी। बाद में उसके पुत्र अकबर ने लाल बलुआ पत्थर से इस किले का पुर्ननिर्माण किया था। कहा जाता है कि इसके सुधार में आठ साल (1565–1573) लगे थे। इसके उपरांत औरंगजेब ने अपने पिता शाहजहां को आठ वर्षों तक कैद में रखा जब तक कि सन् 1666 में



एत्माद उद दौला का मकबरा



आगरा किले का दृश्य

उसकी मृत्यु न हो गई। मुगलों के बाद मराठा व फिर 1803 में अंग्रेजों ने इस किले पर अपना अधिकार जमा लिया।

लगभग 95 एकड़ क्षेत्रफल में फैले इस किले में प्रवेश के लिए चार बड़े प्रवेश द्वार बने हुए हैं। इनमें लाहौर गेट, दिल्ली गेट प्रमुख हैं।

यहां लालकिला में जहांगीरी महल, खास महल, दीवाने ए आम, दीवान ए खास, मोती मस्जिद, अकबरी महल, नगीना मस्जिद इत्यादि स्थित हैं। यहां स्थित मुस्मन बुर्ज में शाहजहां ने अपने जीवन के आखिरी आठ साल बिताये थे जब उसके पुत्र औरंगजेब ने 1658 में उसे कैद कर लिया था। जहांगीरी महल का निर्माण अकबर ने 1565–69 में करवाया था। कहा जाता है कि राजपूत औरतें यहां रहती थीं। नूरजहां ने भी इसे

निवास के लिए अपनाया था। इसके ठीक सामने जहांगीर के नहाने के लिए एक बड़ा हौज है जो एक बड़े पत्थर को तराशकर बनाया गया है।

मोती मस्जिद शाहजहां के शासनकाल में 1648–54 में बनवाई गई थी जो राजपरिवार के

लोगों का पूजा स्थल था। दीवान ए आम, जहांगीर ने 1628–35 के बीच बनवाया था, जहां वह आम लोगों की फरियाद सुनता था। खास महल का निर्माण 1631–40 में शाहजहां ने करवाया था। इसके भीतरी भाग को पेंटिंग इत्यादि से सजाया गया था। इसके सामने ही अंगूरी बाग स्थित है।

दीवान ए खास, शाहजहां ने 1635 में बनवाया था जहां वह महत्वपूर्ण लोगों से मिलता था। यहीं तख्त ए ताउत, सन् 1634 में रखवाया गया था जिसे सन् 1648 में दिल्ली का लाल किला बनवाने के बाद वहां स्थानांतरित किया गया था।

नगीना मस्जिद का निर्माण शाहजहां ने 1631–40 में राजपरिवार की महिलाओं के लिए किया गया था। सफेद संगमरमर से निर्मित इस मस्जिद को गहना



मोती मस्जिद, आगरा



नगीना मस्जिद, आगरा

मस्जिद भी कहा जाता था। दीवान ए खास के सामने मच्छी भवन है। मच्छी भवन दो मंजिला भवन है और इसकी दीवारें अलंकृत हैं। अकबर महल अब खंडहर रूप में है। इसका निर्माण 1565–69 में करवाया गया था।

आगरा मथुरा मार्ग में स्थित सिकन्दरा में 119 एकड़ में फैला अकबर का मकबरा है जो 1605–13 में बना था। कहा जाता है कि 1600 के आसपास अकबर ने स्वयं इस मकबरे का निर्माण शुरू करवाया था और उसकी मृत्यु के बाद जहांगीर ने इसका निर्माण पूरा करवाया था। कहा जाता है कि औरंगजेब के शासन काल में राजा राम जाट ने अपने पिता गोकुला की मौत का बदला लेने के लिए इस मकबरे पर भी आक्रमण किया

था। कहा जाता है कि ब्रिटिश काल में लार्ड कर्जन ने इस मकबरे का पुर्ननिर्माण करवाया था।

मुख्य गेट के साथ ही लोदी का मकबरा है जो काफी जीर्ण है परन्तु रखरखाव होने के कारण अब भी खड़ा है। इससे आगे बढ़ने पर एक शानदार इमारत है जो रानियों का

वास स्थान माना जाता है, यहां से आगे बढ़ने पर अकबर का मकबरा है।

यहां सुबह काफी संख्या में स्थानीय लोग टहलने के लिए आते हैं। यहां कुछ हिरण भी विचरण करते हुए नजर आते हैं।

आगरा के रामबाग चौराहा से हाथरस, मुरादाबाद मोटर मार्ग में कुछ ही दूरी बायीं ओर रामबाग पार्क है। माना जाता है कि बाग ए गुल अफंशा यानि फूल बरसाने वाला बाग से मशहूर यह बाग देश का सबसे प्राचीन बाग है जिसका निर्माण बाबर ने 1526–30 में करवाया था। कहा जाता है कि यमुना नदी के किनारे स्थित इस बाग को बाबर ने काबुल में बनवाये कई बागों जैसे बाग ए चिनार इत्यादि की तर्ज पर बनवाया था



आगरा किले में स्थित दिवान-ए-आम



अकबर का मकबरा, सिकंदरा

जिसके लिए यमुना के किनारे कई रहटों का निर्माण करवाकर पानी की व्यवस्था की गई थी। बाबर ने इस बाग को आगरा की गर्मी से निजात पाने के लिए बनवाया था और इस बाग में कई किस्मों के फलदार वृक्ष लगवाये गये थे। बाद में बाबर के पड़पोते जहांगीर ने 1615-19 में इस बाग को पुर्नजीवन दिया था। जहांगीर ने इसे बाग-ए-नूर अपंशा यानि प्रकाश बरसाने वाला बाग कहा था। जहांगीर ने अपनी आत्मकथा में भी इस बाग का वर्णन किया है।

यहां वर्तमान में कई किस्मों के फलदार वृक्ष, अमरुद, अनार के अलावा अन्य कई किस्मों के वृक्ष भी बाग की शोभा बढ़ाते हैं। सैकड़ों की संख्या में स्थानीय लोग रोज यहां टहलने के लिए आते हैं। पानी

के रहट अभी भी यहां देखे जा सकते हैं।

रामबाग चौराहा से यमुना ब्रिज की ओर पैदल बढ़ते हुए चिन्नी का रोजा भी देखा जा सकता है इस सड़क मार्ग में काला गुम्बद नामक एक बोर्ड लगा हुआ है वहां से दाहिनी ओर मुड़ने के पश्चात कुछ

ही दूरी पर यमुना के किनारे यह स्मारक स्थित है। इसे भारतवर्ष में चमकते टाईलों से बनाया जाने वाला पहला भवन माना जाता है और भारतीय पारसी वास्तुकला शैली का शानदार नमूना भी माना जाता है। चिन्नी का रोजा, मुगल राजा शाहजहां के दरबार में प्रधानमंत्री व कवि के रूप में विख्यात अफजल खान के मकबरे के रूप में प्रसिद्ध है जिसे 1635 में बनाया गया था। यह एत्माद उद दौला से कुछ ही दूरी पर स्थित है। वे जहांगीर के शासन में पारसी कवि के रूप में प्रसिद्ध थे। इस मकबरे में अब टाइलों में लगे रंग काफी धूमिल हो चुके हैं व जगह-जगह से उखड़ चुके हैं।

आगरा स्थित यमुना ब्रिज से एक मार्ग एत्माद दौला मकबरा, रामबाग



एत्माद-उद-दौला का मकबरा



जोधाबाई का मकबरा

के लिए जाता है जबकि दूसरा दाहिनी ओर मेहताब बाग के लिए जाता है। यहां से मोती महल होते हुए मेहताब बाग तिराहा पहुंचा जाता है यहां से एक मार्ग कछपुरा के लिए व दूसरा मेहताब बाग के लिए जाता है। यमुना ब्रिज से लगभग दो कि.मी. की दूरी पर मेहताब बाग स्थित है। मेहताब बाग तिराहा के पास कुछ दुकानें हैं। उससे आगे एक छोटी बस्ती है, थोड़ी दूर आगे बढ़ने पर मुगल हैरिटेज वाक बनाये गये हैं।

यहां कुछ पुराने खंडहर दिखाई देते हैं। यमुना के पार ताज भी दिखाई देता है। कहा जाता है कि यमुना नदी के किनारे मुगलों द्वारा बनाये गये ग्यारह बागों में से मेहताब बाग अंतिम बाग था। शाहजहां द्वारा 1631–35 के बीच

बनवाये गये इस बाग में पूर्णिमा के दिन चांदनी रात में ताज का सुंदर नजारे का आनंद उठाया जा सकता है।

आगरा में जसवंत सिंह की छत्री यमुना नदी के किनारे स्थित है। यह स्मारक राजवाड़ा, बल्केश्वर में स्थित है। सड़क मार्ग से होते हुए कालोनी से गुजरते हुए संकरी गलियों से यहां पहुंचा जाता है। इस स्मारक तक सीढ़ियों से होकर नीचे जाना पड़ता है, यह एक तालाब की तरह फैला जान पड़ता है। यह स्थल देखरेख के अभाव में उजाड़ सा जान पड़ता है। यह स्मारक राजस्थानी वास्तुकला का नमूना माना जाता है। कहा जाता है कि मुगलकाल में हिंदू राजा द्वारा आगरा में बनाया गया यह एकमात्र स्मारक है। इसका निर्माण काल

1644–58 माना जाता है। यह स्मारक बूंदी (राजस्थान) की राजकुमारी हाड़ा को समर्पित है। मुगल व हिंदू वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध इस स्मारक को राजा अमर सिंह राठौर के छोटे भाई राजा जसवंत सिंह ने रानी हाड़ा की याद में बनवाया था। कहा जाता है कि 25 जुलाई 1644 में आगरा किला में राजा अमर सिंह के मारे जाने के बाद रानी हाड़ा यहां पर सती हुई थी। जाली युक्त यह छतरी एक ऊंची जगती पर बनवाया गया है, जहां पहुंचने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं।

यहां से वापसी में जोधाबाई मकबरा भी जाया जा सकता है। यह आगरा मथुरा सड़क मार्ग पर सिकन्दरा से लगभग 1 कि.मी. आगे बायीं ओर स्थित है। जोधाबाई राजा अकबर की पत्नी थी। इसका निर्माण हिंदू रानी जोधाबाई की अंतिम इच्छा के अनुसार अकबर के मकबरे के नजदीक उसके पुत्र जहांगीर ने 1623–27 में बनवाया था। जोधाबाई को मरियम उज जमानी कहा जाता था। यह एक ऊंची जगती पर बनाया गया है जो तिमंजिला है।

आगरा में कई गिरिजाघर भी हैं जो न केवल प्राचीन हैं अपितु काफी भव्य व दर्शनीय भी हैं।

जिन खोजा तिन पाया



पवन कुमार

वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व हक.)

हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

विगत 25 वर्षों से जुड़े गुरु-शिष्य पद्धति के गुरु ज्ञानदेव अपने स्नेहवत शिष्य के घर दो दिन से विराजित थे। खान-पान से निपट कर एक कक्ष में दोनों अब इस पौष माह की शरद रात्रि में आध्यात्म पर वार्ता में लीन रहेंगे।

अभी वार्तालाप शुरू ही हुई थी कि शिष्य गुरुदास ने गुरु ज्ञानदेव से सहसा पूछ लिया, कि इन 25 वर्षों में उसने, उनके मार्गदर्शन व भक्ति का विधिवत् अनुसरण किया है क्या?

गुरु ज्ञानदेव ने सहज वाणी से कहा, निश्चय ही गुरुदास तुम ने मन से इसका पूर्णतया अनुसरण किया है।

तब गुरुदास ने कहा, कि आपके उस वचन का क्या हुआ जो शिष्य बनाते समय आपने दिया था मेरे समर्पित व पूर्ण न्यौछावर भाव उपरांत आप मुझे उस पूर्ण प्रभु में

स्थित होने की युक्ति सूत्र का ज्ञान देंगे। वह हम दोनों में वचन था न गुरुजी।

गुरु ज्ञानदेव आज शिष्य की पुकार युक्त आग्रह से खोये से नजर आने लगे। चेहरे पर खिन्नता पढ़ी जा सकती थी। कुछ समय उपरांत बोले – गुरुदास इस युक्ति सूत्र से वे स्वयं भी अनभिज्ञ हैं।

दोनों पक्षों ने घंटों की दीर्घ मौन की जैसे चादर ओढ़ ली। गुरु-शिष्य की ऐसी असीम खामोशी चुभने वाली थी। यद्यपि आमने-सामने बैठे हुक्का पीते रहे। खामोशी में मानों सुबह होने की प्रतीक्षा कर रहे हों।

अब पौ फट चुकी थी। पक्षियों की चहचहाहट विगत दीर्घ मौन को तोड़ चुकी थी। तभी गुरु ज्ञानदेव ने मार्मिक सुर में कहा, 'कि गुरुदास यदि मैं तुम्हारा गुरु हूं तो यह युक्ति सूत्र तुम्हें उपलब्ध करवाऊंगा और तभी तुम्हारे पास

आऊंगा' और अलविदा कह कर शिष्य के घर चल दिए।

गुरु ज्ञानदेव दोपहर बाद तब अपने पैतृक निवास आ गये थे। शिष्य के उस विकट आग्रह से उन पर हृदय विदारक घाव हुआ था, जो हर पल उन्हें खाये जा रहा था।

गुरु ज्ञानदेव ने अगले ही पल अपने घर के पीछे खेत में एक गड़ढ़ा खोदकर एक गुफा सी निर्मित की एवं निर्णय लिया कि आगामी सवा महीने तक इससे बाहर न आयेंगे, व कठोर भक्ति कर परमात्मा से युक्ति प्राप्ति की प्रार्थना सहृदय करेंगे। गुरु ज्ञानदेव ने अपनी पत्नी को सुबह 4 बजे एक लीटर दूध बर्तन में गुफा के मुख पर रखने का निर्देश दे दिया था।

गुरु ज्ञानदेव अपनी इस भक्ति योग में मगन रहे। समय बीतता गया। आज सवा महीना व्यतीत हो गया। बताते हैं कि इस अवधि में सूरज के उजाले से महरूम गुरु

ज्ञानदेव ने सूरज को बाहर आते ही निहारा तो एक नेत्र में लाइट लग गई। इस भक्ति खंड के पूर्ण होते ही गुरु ज्ञानदेव ने पूरे गांव के लिए भंडारे का आयोजन किया व अपने हाथों से सभी को खिलवाया।

अभी दो दिन ही व्यतीत हुए थे कि एक सन्यासी संत श्री भगवान देव ने उनके द्वार पर आहट दी। गुरु ज्ञानदेव ने उन्हें उचित आसन पर बिठाया, आवभगत की, सत्कार किया। श्री भगवान देव ने बताया कि ज्ञानदेव इस पूरे क्षेत्र में तुम्हारी बहुत प्रसिद्धि है। भगवान देव ने बताया कि आगामी कुछ दिन वह ज्ञानदेव के पास ही रुकेंगे।

ज्ञानदेव के घर में असीम प्रसन्नता का वातावरण हो गया। सुबह-शाम ज्ञान गोष्ठी व पूजा अर्चना होती। भगवान देव के आदेशावत दिन में दोनों खेती-बाड़ी हेतु खेतों में कार्य करेंगे।

पहले दिन ही खेतों से लौटने के बाद खाने के उपरान्त वार्तालाप में गुरु ज्ञानदेव परम् संत भगवान देव से प्रभुलीन युक्ति सूत्र के ज्ञान की हाथ जोड़ याचना की, साथ ही अपने परम शिष्य गुरुदास के अभी हाल के परिवेश में की याचना से स्वयं दुखी व खिन्न मनःस्थिति की वार्ता प्रस्तुत कर दी। भगवान देव बोले — ऐ ज्ञानदेव! तुम इतने प्रसिद्ध भक्त हो पर इस युक्ति सूत्र को नहीं जानते?

कोई बात नहीं, तुम अपने शिष्य — गुरुदास को यहां बुला लो। यह सुनते ही गुरु ज्ञानदेव का मुख खिल गया। झुक कर धन्यवाद स्वरूप श्री भगवान दास के चरणों को प्रणाम किया।

भगवान देव व ज्ञानदेव आज खेतों में व्यस्त हैं। गुरुदास को खत लिख आने का आग्रह दो दिवस पूर्व किया जा चुका था। दोपहर के समय खेतों के समीप की राह पर गुरु ज्ञानदेव ने गुरुदास को आता देख पहचान लिया व आवाज लगाई। समीप आते ही उसने प्रथम भगवान दास जी के श्री चरणों में प्रणाम हेतु संकेत किया। भगवान दास ने मौन व सहज रूप से नेत्र बंद कर हाथ गुरुदास के मस्तक पर आशीष स्वरूप रखा।

गुरु ज्ञानदेव ने, अपने शिष्य, गुरु दास से कहा कि गुरु माता को दोपहर के भोजन में कुछ मीठा बनाने का संदेश दें व वो दोनों यथाशीघ्र सामान इकट्ठा कर बैलगाड़ी से घर आ रहे हैं।

बैलगाड़ी पर घर लौटते समय भगवान देव ने कहा, ज्ञानदेव इस युक्ति/सूत्र को पाने की अभी आपकी स्थिति नहीं है। निश्चय ही तुम्हारा शिष्य गुरुदास इस का सही अधिकारी है, इससे मैं उसे परिचित करवाऊंगा। श्री ज्ञानदेव ने कहा 'आभार' महात्मा व चरणों को भी छुआ।

सायंकाल अपने कक्ष में पूजा के समय, श्री भगवान देव ने गुरुदास को अपने समीप बिठाया, कुछ वार्तालाप शिक्षा स्वरूप हुई व प्रभुलीन युक्ति सूत्र, शिष्य गुरुदास को साझा करते हुए आशीष दिया।

दूसरे कक्ष में अकेले बैठे गुरु ज्ञानदेव, आज अति भाव विभोर थे, कि शिष्य को देय वचन की पूर्ति में शिल्पी न सही, सारथी तो निश्चय प्रभु कृपा से बने हैं।

आध्यात्म की इस सत्य लघु कथा के कुछ रहस्य स्वयं ही खुलते व बंद हो कर, भावपूर्ण जिज्ञासा जगाते जरूर हैं।

— गुरुदास का शरद रात्रि में अपने गुरु ज्ञान देव को देय वचन के उपलब्ध न करवा पाने का उलाहना देना, क्या अकस्मात था?

— गुरु ज्ञान देव का सवा महीने अज्ञातवास (गुफा में) में कठोर भक्ति करना भी एक सीढ़ी था।

— गुरु भगवान देव का अचानक गुरु ज्ञान देव के घर में प्रकट होना, आध्यात्म की परम स्थिति के बावजूद, प्यार व भक्ति योग में गुरु ज्ञान देव के खेतों में काम करना।

— गुरु भगवान देव का आह्वान सहज भाव से की केवल शिष्य गुरुदास इस परम ज्ञान के उपयुक्त पात्र हैं।

संताप



अमरेंद्र कुमार चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
अनुभाग : रिपोर्ट-1
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1)
बेंगलूरु, कर्नाटक

दिल्ली शहर के आनंद विहार रेलवे स्टेशन पर विश्राम कक्ष में ट्रेन के इंतजार में था जीवन, सायं 5 बजे की थी ट्रेन। खैर, अपने सही समय पर थी। जीवन उसमें सवार हो गया और अपनी सीट पर जा बैठा। ट्रेन सही समय पर चली और धीरे-धीरे अपनी रफ़्तार पकड़ने लगी। जैसे-जैसे ट्रेन आगे बढ़ती गयी, स्टेशन पीछे छूटता गया। धीरे-धीरे रात्रि ने अपना प्रभाव दिखाना आरम्भ किया। रात अंधेरी थी, गाड़ी अपनी रफ़्तार में थी और बीच-बीच में दूर किसी गाँव के बिजली के खम्भे में लटके बल्ब से होने वाला प्रकाश, मानो ऐसा लग रहा था कि दूर कहीं दीपक जल रहा हो। इन्हीं सबके बीच जीवन अपनी यादों में खोने लगा।

भागलपुर शहर में पटना जाना था उसे रेलवे की परीक्षा देने। काफी मशक्कत के बाद साहिबगंज पटना इंटरसिटी एक्सप्रेस में वह चढ़ पाया था। तक़रीबन रात के 10.30 बजे ट्रेन पटना जंक्शन पहुंची थी। पॉकेट में 100 रुपये से ज्यादा नहीं थे उसके पास, जिससे वह ठहरने के लिए कमरा किराये पर ले सकता और फिर वापसी भी उसे करनी थी। किसी प्रकार वह प्रतियोगी परीक्षा में शामिल हुआ और अंततः उसका चयन भी हो गया। कुछ महीने में उसका नियुक्ति पत्र उसके हाथ आ गया और आखिरकार वह दिन आ ही गया जब उसे नौकरी करने दिल्ली जाना था।

विक्रमशिला एक्सप्रेस ट्रेन में सीट बुक थी उसकी, सुबह 11.30 बजे

की ट्रेन थी। मां का तो रो कर बुरा हाल था। यह बात भी सत्य है कि 'स्त्री यदि मां के रूप में हो तो करुणा, ममता व वात्सल्य की देवी होती है।' मां को रोते हुए देखकर वह भी विह्वल हो उठा लेकिन घर की आर्थिक स्थिति को सुधारने व जीविकोपार्जन के लिए उसे जाना ही था। किसी तरह अपने आंसुओं को थामते हुए मां के चरण स्पर्श किये और वापस जल्द लौटने का वादा करते हुए ट्रेन पर चढ़ गया।

पुरुष कितनी भी तकलीफ में क्यों न हो, कितनी ही प्रताड़नाएं क्यों न झेल रहा हो, वह जल्दी अपने नेत्रों से आंसू नहीं गिराता है, मुस्कुराता ही रहता है और बस मुस्कुराता ही रहता है। मां ने भी अपने आप को यह तसल्ली देते हुए शांत किया कि 'कुछ लोग जाने के लिए ही



होते हैं और उनका इंतजार न करना ही भले के लिए होता है।' परंतु मां तो मां थी, हर पल अपने बेटे के आने के इंतजार में रहती। उस समय टेलीफोन का जमाना नहीं था जो पल भर में ही एक-दूसरे की खोज-खबर हो जाती। बेटा प्रति माह अपने वेतन से बचत करके मनीऑर्डर भेज दिया करता था। धीरे-धीरे मां की उम्र ढलने लगी थी और वह प्रायः बीमार भी रहने लगी थी।

रेलवे में कम छुट्टी की वजह से जीवन कभी-कभार ही घर आ पाता था। दमे की बीमारी थी जीवन की मां को, गरीबी ने साधारण सी खांसी को कब दमा का स्वरूप ले लिया यह पता ही नहीं चला। खैर मां ने डाकिये को कह कर जीवन को तार भिजवाया

कि 'तुम जल्द से जल्द चले आओ, मेरी तबियत ठीक नहीं है।' मां को विश्वास था कि वह तार मिलते ही वापस लौट आएगा। स्त्री का 'प्रेम और विश्वास अतुलनीय होता है, प्रेम ऐसा कि पत्थर भी मोम बन जाए और विश्वास ऐसा कि इंद्र को भी जीत लें, फिर मां के वात्सल्य प्रेम का कहना ही क्या'?

जीवन को तार देरी से प्राप्त हुआ, तार मिलते ही जीवन ने अपनी छुट्टी स्वीकृत कराई और वह घर की ओर निकल पड़ा। ट्रेन देरी से चल रही थी, पूस का महीना था व कोहरे का प्रभाव था, किसी प्रकार जीवन घर पहुंचा तो मां का देहांत हो चुका था, परंतु मां के मुखमण्डल पर अभी भी 'प्रेम और विश्वास' की आभा चमक रही थी।

जीवन का 'जीवन' से मोह भंग हो चुका था, जीवन में अगर कुछ सत्य है तो वह है 'केवल और केवल मृत्यु।' विह्वलता अपनी सीमा पार कर चुकी थी, उसने सोचा कि ऐसी नौकरी का क्या लाभ जो जीवन को जीवन देने वाली की इच्छा की भी पूर्ति न कर सके।

यह विचार करते हुए जीवन मां के दाह संस्कार को पूर्ण करके अपने कार्यस्थल पर लौट गया। उसने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति की अर्जी दी और वह स्वीकृत हो गयी, तत्पश्चात् जीवन अपने घर वापस लौट गया।

जीवन घटित घटनाओं से दुःखित था, तभी ट्रेन के सहयात्री ने उसे झकझोरते हुए कहा कि भाई साहब आपका स्टेशन आ गया है। जीवन की कब आंख लग गयी थी उसे पता ही नहीं चल पाया था। जीवन ने अपना सामान उठाया और यह सोचते हुए रेलवे स्टेशन से बाहर आ गया कि क्या वह घर उसे फिर से अपना पायेगा? क्या मां की यादें उसे चैन से रहने देंगी? और इसी 'संताप' के साथ जीवन अपने घर की तरफ चल दिया।

किस्सा-कहानी

विभास चन्द्र

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
पूर्व तट रेलवे, रेल सदन,
भुवनेश्वर, ओडिशा-751017

यह कहानी उस लड़की की है जिसे दुनिया में सबसे ज्यादा आनंद कहानी सुनने में आता था। कहानी सुनने की यह आदत बचपन में उसे नानी की कहानी सुनते हुए पड़ी, जो हॉस्टल में रहने के दौरान एक बातूनी और अच्छी कहानी सुनने वाली दोस्त के माध्यम से और विकसित हुई। उसे अमूमन हर रात कहानी सुनने की आदत थी। बिना कहानी सुने उसे नींद नहीं आती। अगर कोई कहानी सुनने वाला न मिले तो वह रेडियो पर या मोबाईल पर नीलेश मिश्रा से कहानी सुनकर काम चलाती लेकिन प्रत्येक रात कहानी सुनती जरूर थी। अब उसकी शादी हो गई है और उसका पति वियान ए.जी. ऑफिस में सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी है।

अब आगे

वसुधा (खुद से) — रात के नौ बज गए हैं, वियान अभी तक आया क्यों

नहीं। नई-नवेली दुल्हन से ज्यादा इसको ऑफिस की पड़ी रहती है।

तभी डोर-बेल की आवाज आती है। वसुधा खिड़की से झाँकती है तो देखती है कि वियान खड़ा है।

वसुधा — अभी तक कहां थे?

वियान — ऑफिस में कुछ जरूरी काम आ गया था, इस वजह से देर हो गई।

वसुधा — तुम्हें तो मेरी कोई फिक्र ही नहीं। अकेले छोड़ कर ऑफिस में बैठे रहते हो।

वियान — (मुस्कुराते हुए) — अच्छा! इतनी शिकायत है मुझसे। ठीक है, कल से मैं जल्दी घर आ जाऊंगा।

वसुधा — चलो जल्दी से फ्रेश हो जाओ, मैं खाना लगाती हूं।

वियान और वसुधा साथ-साथ खाते हैं और फिर सोने के लिए चले जाते हैं।

वसुधा — वियान कोई कहानी सुनाओ न, मुझे कहानी सुने बिना नींद नहीं आती।

वियान — मुझे कहानी सुनाना नहीं आता। आज तक कभी भी मैंने स्टोरी टेलिंग नहीं की। यह काम मुझे बहुत बोरिंग लगता है।

वसुधा — ठीक है, फिर चलो अपने ऑफिस की ही बातें सुनाओ।

वियान — ऑफिस में क्या होगा! वहां काम होता है। सभी फाइलों में घुसे रहते हैं।

वसुधा — कुछ तो बात होती होगी! कुछ तो घटनाएं होती होंगी।

वियान — मेरे ऑफिस में कोई पब्लिक डीलिंग नहीं होती। अतः घटनाएं होने की संभावना नगण्य है। सब फाइलों में घुसे रहते हैं, इसमें क्या घटनाएं होंगी और फाइलों में जो घटनाएं हुईं वो सुनने में तुम्हें मजा नहीं आएगा।

अगर बोलो तो एक टेण्डर फाईल की घटना सुनाता हूँ।

वसुधा — फिर रहने ही दो।

दोनों सो जाते हैं। अगली सुबह फिर तैयार होकर वियान ऑफिस जाता है। आज उसे याद है कि घर जल्दी जाना है। अतः कार्यालय के सभी काम-काज निपटाकर वह समय से घर पहुंच जाता है। फिर शाम को दोनों पति-पत्नी घूमने जाते हैं। आज दोनों बाहर से ही खाना खाकर आए हैं। अतः बिना देर किए दोनों सोने के लिए बेड पे चले जाते हैं।

वसुधा — वियान कोई कहानी सुनाओ ना।

वियान — वसुधा तुम्हें अच्छी तरह से पता है कि मुझे कहानी सुनाना नहीं आता।

वसुधा — कुछ भी सुनाओ। जैसी आती है वैसी ही सुनाओ।

वियान मन-ही-मन सोचता है कि इसका कुछ करना पड़ेगा, नहीं तो यह हर रात मुझे परेशान करती रहेगी।

वियान (कुछ सोचते हुए) — वसुधा! तुम्हें डांस करना अच्छा लगता है न ...

वसुधा — हां, मुझे डांस करना बहुत अच्छा लगता है।

वियान — फिर तुमने डांस करने का प्रशिक्षण क्यों नहीं लिया?

वसुधा — वक्त नहीं मिला और घर में नृत्य का माहौल भी नहीं था।

वियान — क्या तुम ओड़िसी सीखना चाहोगी?

वसुधा — हां क्यों नहीं।

वियान — ठीक है मैं पता करता हूँ कि किस संस्थान में ओड़िसी की अच्छी ट्रेनिंग दी जाती है। पता चलते ही तुम्हारा एडमिशन करवा दूंगा।

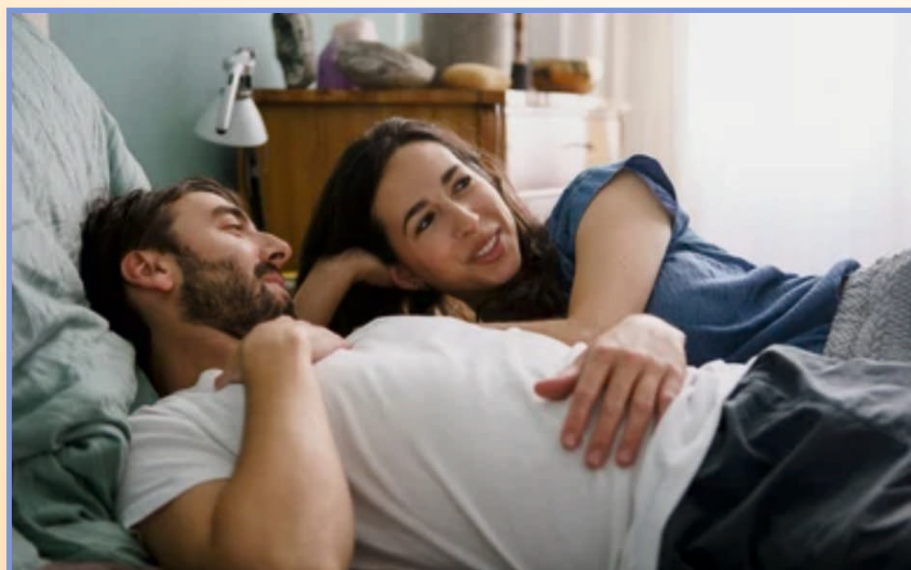
वसुधा — फिर तो बहुत मजा आएगा।

वियान — हां, तुम्हें मजा भी आएगा और तुम्हारी नृत्य प्रतिभा भी निखर जाएगी।

अब दोनों सो जाते हैं। अगले दिन जब वियान ऑफिस जाता है तो यह पता करने की कोशिश करता है कि ओड़िसी का अच्छा प्रशिक्षण संस्थान कहां है? एक अच्छे प्रशिक्षण संस्थान का पता चलने पर वसुधा का एडमिशन उसमें करवा देता हूँ।

वसुधा — आज मैं बहुत खुश हूँ और नर्वस भी। आज पहली बार मुझे अपने सपने को जीने का मौका मिलेगा। आज से मैं डांस करना शुरू करूंगी।

वियान — हां वसुधा, आज तुम्हारे लिए बहुत खुशी का दिन है। दुनिया में बहुत कम ऐसे लोग हैं जिनको अपने सपने को जीने का



मौका मिलता है। आज मैं तुम्हें तुम्हारे सपनों के द्वार तक लेकर जाऊंगा।

वसुधा – वियान! तुम कितने अच्छे हो। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे तुम्हारे जैसा पति मिला।

वियान – शाम के 6 बज गए हैं, चलो अब तुम्हारे प्रशिक्षण शुरू होने का वक्त हो रहा है।

वसुधा – चलो चलें।

दोनों साथ-साथ प्रशिक्षण केंद्र पर पहुंचे।

वियान – लो, ये आ गया तुम्हारा नृत्य प्रशिक्षण केंद्र।

वसुधा – आज मैं पहली बार उस जगह आई हूँ जहां आने की तमन्ना मेरे मन में वर्षों से थी।

वियान – चलो अंदर चलें। (वियान प्रशिक्षक से अपनी पत्नी का परिचय करवाता है ...) यह मेरी धर्मपत्नी वसुधा है। इनका ही नामांकन ओड़िसी नृत्य सीखने के लिए यहां करवाया है।

प्रशिक्षक – अच्छा ठीक है। आइए वसुधा जी, प्रशिक्षण स्थल पर चलें।

वसुधा – दो घंटे की प्रैक्टिस बहुत ज्यादा है। मैं बहुत थक गई हूँ वियान।

वियान – चलो कुछ खाते हैं, तब तक तुम्हारी थकान भी कुछ कम हो जाएगी।

खाना खाने के बाद दोनों घर आते हैं। आज वसुधा कुछ काम करने के मूड में नहीं है। अतः वियान ही बेड लगाता है, वसुधा को पानी पिलाता है और फिर दोनों सोने चले जाते हैं।

वियान – वसुधा! आज का दिन कैसा रहा।

वसुधा – मुझे सोने दो, बहुत नींद आ रही है।

वियान – नहीं, मुझसे बात करो।

वसुधा – मुझे सोने दो ना वियान। मैं बहुत थक गई हूँ।

वियान – वसुधा! मुझे पक्का भरोसा है कि एक दिन तुम शानदार ओड़िसी डांसर बनोगी। तुम्हारे शो देश-विदेश में होंगे। मैं भी तुम्हारे साथ नई-नई जगहों पर घूमने जाऊंगा। तुम्हें तो पता ही है कि मुझे घूमने और नई-नई जगह देखने का कितना शौक है। तुम कुछ बोल नहीं रही वसुधा।

वियान वसुधा की तरफ मुड़ कर देखता है तो वो सो चुकी होती है। अब वियान भी सो जाता है। अब हर रोज़ वियान ऑफिस से आकर वसुधा को डांस सीखने के लिए लेकर जाता है और फिर शाम को बात करते हुए घर लौटता है। अब वसुधा बेड पर जाते ही सो जाती



है। कोई कहानी सुनाने की फरमाईश नहीं करती। वियान भी सुकून से सो जाता है। अब उसे कहानी सुनाने के झंझट से छुटकारा मिल गया है और वह यही चाहता भी था। कुछ दिनों तक यही सिलसिला चलता रहा। परन्तु दो महीने नृत्य का अभ्यास करते-करते वसुधा अभ्यस्त हो गई है और अब उसे थकान नहीं होती। अब वसुधा रात को सोने के वक्त कहानी सुनाने की फरमाईश फिर से करने लगी है। अब फिर से वियान की समस्या और झुंझलाहट शुरू हो गई है। वियान समझ नहीं पा रहा कि अब क्या कुछ नया करे। तभी एक दिन वियान अखबार पढ़ते हुए बाल संरक्षण अधिकारी (चाइल्ड प्रोटेक्शन ऑफिसर) का विज्ञापन देता है।

वियान — वसुधा! चाइल्ड प्रोटेक्शन ऑफिसर पद पर नियुक्ति हेतु विज्ञापन निकला है। मैं सोचता हूँ कि मैं भी फॉर्म भर देता हूँ। तनख्वाह थोड़ी कम मिलेगी पर काम ऐसा है कि वहाँ इवेंट बहुत होंगे। मैं तुम्हें बहुत सारी कहानियाँ सुना पाऊंगा।

वसुधा — अरे वाह वियान! तब तो बहुत मजा आएगा। रोज रात को मैं तुमसे कहानी सुना करूंगी।

वियान चाइल्ड प्रोटेक्शन ऑफिसर बनने के लिए फॉर्म भर देता है और वसुधा को बताता है कि आज वह फॉर्म भर आया है।

वसुधा — परीक्षा कब होगी।

वियान — चार महीने बाद, थोड़ी पढ़ाई करनी पड़ेगी।

वसुधा — ठीक है। तुम्हारे लिए इस परीक्षा को पास करना कौन सी टेढ़ी खीर है।

वियान — परीक्षा तो परीक्षा ही होती है। उसे हल्के में नहीं लिया जा सकता।

चार महीने बाद परीक्षा का वक्त आता है और वियान परीक्षा में शामिल होता है।

वसुधा — कैसी रही परीक्षा?

वियान — बहुत अच्छी। देखते हैं रिजल्ट कैसा रहता है।

वसुधा — परीक्षा अच्छी गई है तो रिजल्ट भी अच्छा ही आएगा।

छः महीने बाद रिजल्ट आता है। वियान खुशी-खुशी घर पहुँचता है।

वियान — वसुधा! मैंने परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है।

वसुधा — मुझे पता था वियान, तुम परीक्षा पास कर ही लोगे।

वियान — एक महीने बाद मौखिक परीक्षा है जिसमें पर्सनालिटी टेस्ट लिया जाएगा।

वसुधा — तुम वह भी पास कर जाओगे।

एक महीने बाद वियान इंटरव्यू देकर आता है और वसुधा को बताता है कि उसका इंटरव्यू अच्छा गया है। तीन महीने बाद ...

वियान — वसुधा! मैं उत्तीर्ण हो गया हूँ। आज रिजल्ट आया और मेरा प्रदर्शन काफी अच्छा रहा। मैं इस नौकरी के लिए सिलेक्ट हो गया हूँ।

वसुधा — वाह! कितनी खुशी की बात है। अब तुम नई नौकरी करोगे और मुझे रोज रात को नई-नई कहानी भी सुनाओगे।

तीन महीने बाद वियान नई नौकरी ज्वाइन कर लेता है और ट्रेनिंग लेने चला जाता है। ट्रेनिंग खत्म होने के बाद उसकी पोस्टिंग होती है। आज वियान की नई नौकरी का पहला दिन है। वह तैयार होकर और अच्छे कपड़े पहनकर ड्यूटी के लिए घर से निकलता है। वसुधा

माथे पर तिलक लगा कर वियान को ड्यूटी ज्वाइन करने भेजती है।

वियान — आज मैंने ड्यूटी ज्वाइन किया। आज तो कुछ ज्यादा काम नहीं किया। ऑफिस के लोगों से मिलने में ही वक्त निकल गया, सभी लोग काफी अच्छे हैं। कल से मुझे कुछ जिम्मेदारी सौंपी जाएगी।

वसुधा — चलो अच्छा है। बच्चों की भलाई के लिए काम करोगे, इससे अच्छी बात क्या होगी। बच्चे भगवान का दूसरा रूप होते हैं।

अब वियान के पास वसुधा को सुनाने के लिए बहुत कुछ है। रोज रात को वियान वसुधा को दिन भर की घटनाएं सुनाता और वसुधा सुनते-सुनते सो जाती। पति-पत्नी के दिन और रात मजे में गुजर रहे हैं। अब तो वसुधा भी कुशल ओड़िसी नृत्यांगना हो गई है। इसी बीच दोनों की प्यारी बेटी का भी जन्म होता है जिसका नाम उन्होंने आयरा रखा है। आयरा के आने से परेशानी तो बढ़ी है लेकिन खुशियां दोगुनी हो गई हैं।

वियान — आयरा बिल्कुल मुझ पर गई है, मेरी बेटी जो है।

वसुधा — बिल्कुल नहीं। आयरा इतनी सुंदर इसलिए है कि वह मुझ पर गई है।

इस तू-तू मैं-मैं के बीच आयरा की नानी वसुंधरा आ जाती है और बोलती है, अरे बाबा! ये बच्ची दोनों पर गई है। दोनों बच्चों की तरह क्यों लड़ रहे हो?

वियान — मैं ऑफिस के लिए निकल रहा हूं। अपना और आयरा का ख्याल रखना।

वसुधा — ठीक है, तुम भी अपना ख्याल रखना।

अंश (वियान का बॉस) — वियान एक गिरोह का पता चला है जिसका मुखिया सोनेलाल है। वह आठ-दस बच्चों को बेचने के लिए दिल्ली ले जाने वाला है। तुम एक टीम को लेकर पुलिस के साथ रेलवे स्टेशन एरिया में छापेमारी करो।

वियान — जो आज्ञा सर। मैं पूरी कोशिश करूंगा कि इन बच्चों को जालिमों से छुड़ा लिया जाए।

वियान मन ही मन अपने काम को पूरी ईमानदारी से करने का प्रण लेता है। वियान अपनी टीम के साथ छापेमारी के लिए जाता है। छापेमारी के दौरान दोनों तरफ से गोली-बारी होती है लेकिन सोनेलाल पकड़ लिया जाता है। सभी बच्चे छुड़ा लिए जाते हैं।

सोनेलाल — (वियान को धमकाते हुए) तुमने ठीक नहीं किया ऑफिसर। तुम्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

वियान — मुझे धमकाने की कोशिश मत कर। मैं डरने वाला नहीं हूं। तुम्हें अपने पापों की कीमत चुकानी ही पड़ेगी।



सोनेलाल — मुझ पर हाथ डाल के (हथकड़ी पहने गाड़ी में बैठते—बैठते) तुमने अपनी उम्र कम कर ली है।

वियान — वसुधा! आज मैंने एक माफिया गिरोह से आठ—दस बच्चों को छुड़ाया, जो गुंडे थे वे भी पकड़े गए।

वसुधा — मुझे तुम पर गर्व है वियान, लेकिन

वियान — लेकिन क्या!

वसुधा — लेकिन डर भी लगता है।

वियान — डरने की कोई बात नहीं है। ये लोग मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

वसुधा — फिर भी वियान, तुम सतर्क रहना। ऐसे लोग बड़े खतरनाक होते हैं।

कुछ दिन बाद सोनेलाल जेल से बाहर आया। अब उसका एक ही मकसद है वियान से बदला लेना।

सोनेलाल — इदरिस! तुम, इस ऑफिसर पर नजर रखो। यह कहाँ जाता है, क्या करता है?

इदरिस — ठीक है बॉस। मैं इसकी कुण्डली तैयार करता हूँ।

कुछ दिन बाद

सोनेलाल — इदरिस क्या खबर लाए हो।

इदरिस — बॉस यह शाम को चाय पीने के लिए एक दुकान पर रोज रुकता है। हम वहीं इसका काम तमाम कर सकते हैं।

सोनेलाल — पूरी होशियारी से प्लान बना इदरिस। हम परसों इसका काम—तमाम करते हैं।

वियान — मैं ऑफिस जा रहा हूँ, देर हो रही है।

वसुधा — आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा, शाम को जल्दी आना।

वियान — कोशिश करूंगा।

ऑफिस के बाद वियान चाय पीने के लिए दुकान पर रुकता है। सोनेलाल और उसके गैंग के लोग वियान पर गोली बरसा देते हैं। वियान को हॉस्पिटल ले जाया जाता है, वह आई.सी.यू. में भर्ती है।

अमन (वियान का दोस्त) — भाभी चलिए वियान ने आपको बुलाने के लिए भेजा है।

वसुधा — क्यों?

अमन — वियान ने सिर्फ आपको बुलाकर लाने को कहा है।

वसुधा — ठीक है मैं पाँच मिनट में तैयार होती हूँ, तब—तक आप यहीं ठहरिए।

अमन — थोड़ा जल्दी कीजिएगा भाभी।

वसुधा — अभी आई।

वसुधा जल्दी ही तैयार होकर आ जाती है। वसुधा को लेकर अमन चल देता है। अमन एक हॉस्पिटल के पास गाड़ी रोक देता है।

वसुधा — आप हॉस्पिटल के पास गाड़ी क्यों रोक रहे हैं? सब ठीक है ना! वियान ठीक तो है।

अमन — चलिए हॉस्पिटल के अन्दर चलें।

वसुधा — आप मुझे साफ—साफ क्यों नहीं बताते?

अमन — वक्त बहुत कम है, जल्दी चलिए।

वसुधा — आई.सी.यू. में कौन है? कहीं वियान तो नहीं ...

वसुधा वियान को आई.सी.यू. में देख कर लगभग अधमरी हो जाती है। वसुधा वियान के हाथ में अपना हाथ रखती है।

वसुधा — काश मैं उस दिन तुम्हें छापेमारी के लिए जाने न देती ...

वियान (लड़खड़ाती आवाज में) – जिंदगी मौत से हमेशा ही महत्वपूर्ण है लेकिन अगर कभी मौत के मायने जिंदगी से बड़ा हो जाए तो इंसान को पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए वरना जिंदगी फिर जिंदगी भर के लिए माफ़ नहीं करती वसुधा ...

इतना कहकर वियान हॉफने लगा।

वसुधा – वियान ... वियान ... तुम्हें कुछ नहीं हो सकता। तुम ठीक हो जाओगे।

वियान की आंखें बंद हो जाती हैं, डॉक्टर चेक-अप करने के लिए आते हैं और वियान को मृत घोषित कर देते हैं। वसुधा बिलख-बिलखकर रोने लगती है। उसे लगता है कि सब कुछ उसकी वजह से हुआ है। वियान कितनी अच्छी एक सुरक्षित नौकरी कर रहा था। उसे घटनाएं और कहानियां सुनाने के लिए उसने एक ऐसी जॉब को चुना जहां पब्लिक डीलिंग ज्यादा थी और खतरा भी। यह सोच-सोचकर उसे और ज्यादा रूलाई आ रही थी।

मेडिकल प्रक्रिया पूरी होने के बाद शव वसुधा को सौंप दिया गया।

अब वियान की अंतिम यात्रा शुरू होती है। नहीं आयरा को समझ में नहीं आ रहा है कि लोग उसके पापा को लेकर कहां जा रहे हैं। जब वियान की चिता जलनी शुरू हुई तो वसुधा के मन में कई भावनाएं घुमड़ रही हैं। पति को इंसाफ दिलाने की भावना, छोटी बच्ची की परवरिश की चिन्ता, वियान के बिना जिंदगी गुजारने का गम। वह दुःखी है, अशांत है लेकिन अंदर से ऐसा लग रहा है जैसे वह पत्थर होती जा रही है। आंखों में एक बूंद आंसू नहीं है। उसने मन ही मन इरादा कर लिया है कि न बेटी के सामने और न दुनिया के सामने वह कभी रोयेगी। जब तक सोनेलाल और उसके साथियों का खात्मा नहीं करेगी, तब तक उसकी आंखों से आंसू नहीं छलकेंगे। अब वियान की चिता लगभग जल चुकी है। आग धीरे-धीरे ठंडी पड़ती जा रही है। अपने पति की आखिरी यात्रा संपन्न कराकर वह घर लौटती है।

अब वसुधा की जीवन यात्रा बिना वियान के, आयरा के साथ शुरू होती है। कुछ दिन तक उसे समझ नहीं आता कि क्या करे? फिर वह

तय करती है कि वह बच्चों को ओडिसी सिखाना शुरू करेगी। कुछ दिन के बाद वह बच्चों को ओडिसी सिखाना शुरू कर देती है। अब आयरा भी उन बच्चों के साथ-साथ ओडिसी सीखती है। ओडिसी सीख रही एक लड़की केतिकी के पापा रवि स्टेज शो वगैरह आयोजित करवाते हैं।

रवि – वसुधा मैडम, आप तो इतना अच्छा ओडिसी नृत्य करती हैं। स्टेज पर परफार्म क्यों नहीं करती?

वसुधा – बेटी अभी छोटी है। घर और बच्चों को नृत्य सिखाने के बाद मेरे पास समय नहीं बचता। वैसे स्टेज शो करने की अभी मेरी कोई इच्छा नहीं है।

रवि – ठीक है मैडम, अगर आप करना चाहें तो मुझे याद कीजिएगा। मैं आपके स्टेज शो आयोजित करवाऊंगा।

वसुधा की जिंदगी शुरू हो गई है। जख्म हरे हैं लेकिन जीने के लिए पैसे, पेंशन और नृत्य सिखाने में आ जाते हैं। वसुधा अपने पैरों पर खड़ी होने लगी है। वसुधा अब सोचती है कि वियान को कैसे इंसाफ दिलाऊं, उसकी मौत के सौदागर

को सलाखों के पीछे कैसे पहुंचाऊँ? वसुधा राजनीति विज्ञान से स्नातक है, और अपने समय की काफी अच्छी छात्रा थी। वह तय करती है कि नृत्य सिखाने के अलावा वह यू.पी.एस.सी. की तैयारी करेगी। आई.पी.एस. बनकर वह अपने पति को इंसाफ दिलाएगी। वह यू.पी.एस.सी. की तैयारी शुरू कर देती है। इधर ओड़िसी नृत्य सिखाने का कार्यक्रम भी अच्छे से चल रहा है। इसी बीच एक दिन रवि आया और वसुधा से स्टेज शो करने का अनुरोध किया।

रवि — वसुधा जी, कृपया इस बार मेरा अनुरोध स्वीकार कर लीजिए। मैं दशहरे के मौके पर एक कार्यक्रम करवा रहा हूँ। कृपया अपनी छात्राओं के साथ आप एक ओड़िसी नृत्य प्रस्तुत कीजिए। इससे आपका भी नाम होगा और आपके कोचिंग संस्थान का भी।

वसुधा — रवि जी, अनुरोध करने के लिए शुक्रिया, लेकिन मैं कार्यक्रम नहीं कर पाऊंगी। मेरे पास वक्त नहीं है।

रवि — मैडम सिर्फ आधे घंटे की प्रस्तुति दे दीजिये।

वसुधा — ठीक है, आप इतना आग्रह कर रहे हैं तो मैं एक प्रस्तुति दे दूंगी।

आज वसुधा का पहला स्टेज शो है। वह हर पल वियान को याद कर रही है। साथ ही नर्वस भी है। उसकी पहली प्रस्तुति शुरू होती है। वसुधा और उसके छात्र समां बांध देते हैं। खूब तालियां बजती हैं। वसुधा आज बहुत दिनों बाद प्रसन्न है और सोच रही है कि काश आज वियान होता तो कितना खुश होता। वह मन ही मन कह रही है — वियान! तुमने जिस वसुधा को पंख खोलना सिखाया, उसने आज फड़फड़ा कर उड़ना शुरू कर दिया है।

रवि — मैडम, आपकी प्रस्तुति शानदार रही।

वसुधा — शुक्रिया रवि जी, मुझ पर भरोसा जताने के लिए।

वसुधा की जिंदगी नृत्य सिखाने, यू.पी.एस.सी. की तैयारी और अपनी बेटि आयरा की परवरिश में बीत रही थी पर ऐसी एक भी रात नहीं गुजरी जिसमें वह वियान को याद करते-करते और उसका चेहरा देखते-देखते ना सोई हो।

इसी बीच एक दिन रवि फिर आया।

रवि — मैडम इस बार दशहरे पर हम बनारस में एक स्टेज शो आयोजित करने जा रहे हैं। क्या आप प्रस्तुति देना पसंद करेंगी।

वसुधा — रवि जी मैं सोचती हूँ, अभी तो काफी वक्त है।

दशहरे से कुछ दिन पहले रवि फिर वसुधा के पास आता है ...

रवि — वसुधा जी, क्या आप बनारस में प्रस्तुति देना पसंद करेंगी। वहां राष्ट्रीय स्तर के नेता कार्यक्रम देखने आ रहे हैं।

वसुधा — ऐसी बात है तो मैं प्रस्तुति दूंगी। आप तैयारी कीजिए।

रवि कार्यक्रम की तैयारी शुरू कर देता है। आज कार्यक्रम होना है। राष्ट्रीय स्तर के नेता और वक्ता नमन जी कार्यक्रम देखने पहुंचे हैं। मंच संचालक पूरे जोश-खरोश से नमन जी का स्वागत करता है। स्वागत गीत गाए जाते हैं। अब संचालक वसुधा को कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित करता है। वसुधा कार्यक्रम प्रस्तुत करती है और समां बांध देती है।

नमन जी वसुधा का नृत्य देखते हुए मंत्रमुग्ध हो जाते हैं। जब कार्यक्रम समाप्त होता है और पुरस्कार की बारी आती है तो वसुधा को ट्रॉफी से नवाजा जाता है और दो शब्द बोलने के लिए कहा जाता है।

वसुधा — आज मैं जो कुछ भी हूँ अपने दिवंगत पति की वजह से हूँ जिन्होंने मेरी प्रतिभा को पहचाना और इसे संवारने के लिए प्रोत्साहित किया। वह मेरे पति ही थे जिन्होंने मुझे उड़ान दी। दूसरे व्यक्ति रवि जी हैं, जो लगातार मुझ पर भरोसा जताते आ रहे हैं और प्रोत्साहित कर रहे हैं। आप सभी के प्यार के लिए आभार।

नमन जी — (वसुधा को बुलाते हैं और कहते हैं कि) वसुधा जी आप जितनी अच्छी नृत्यांगना हैं, उतनी ही अच्छी वक्ता भी हैं। आप मेरी पार्टी ज्वाइन क्यों नहीं कर लेतीं।

वसुधा — सर राजनीति, मेरे बस की बात नहीं है। जीवन के कुछ उद्देश्य हैं, जो राजनीति पूरा नहीं कर सकती।

नमन जी — ठीक है! आप विचार कर लीजिए, मैं एक सप्ताह के बाद आपको बुलावा भेजूंगा।

वसुधा सोचती है कि किस चक्कर में पड़ गई। वह अपने उद्देश्य से भटकना नहीं चाहती थी। अपने पति को इंसाना दिलाना ही उसके जिंदगी का एकमात्र लक्ष्य था। एक सप्ताह बाद नमन जी ने फिर बुलावा भेजा।

नमन जी — वसुधा जी, आपने क्या विचार किया?

वसुधा — सर मेरी कुछ समस्याएं हैं। जीवन का कुछ लक्ष्य है। पहले मैं वह पूरा करना चाहती हूँ।

नमन जी — वसुधा जी, आप बेहिचक मुझे बताइए। मैं जानना चाहता हूँ कि आपकी क्या समस्याएं हैं? आपके जीवन के लक्ष्य को राजनीति पूरा कर पाएगी या नहीं।

वसुधा अपनी पूरी आपबीती नमन जी को सुनाती है और बताती है कि वह आई.पी.एस. क्यों बनना चाहती है।

नमन जी — वसुधा जी, आप आई.पी.एस. बन भी जाएं और हो सकता है कि आपका लक्ष्य भी पूरा हो जाए। फिर भी मैं आपको कहना चाहता हूँ कि मैं आपको बड़े मंच

पर लाना चाहता हूँ। इस बार के चुनाव में मेरी पार्टी के जीतने की प्रबल संभावना है। आप काफी अच्छी वक्ता हैं। मेरी पार्टी को ऐसी महिला वक्ताओं की जरूरत है जो महिलाओं के वोट हमारी पार्टी को दिलवा सकें। अगर हमारी सरकार सत्ता में आई तो मैं आपको केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री का पद दिलाने का वादा करता हूँ। फिर आप बाल कल्याण कर सकती हैं और जो लोग घृणित कार्य में लिप्त हैं, उन्हें दंडित करवा सकती हैं। आप मंत्री रहते हुए पूरे भारत से बच्चों के अवैध व्यापार को रोक सकती हैं और पूरे दक्षिण एशिया में असर डाल सकती हैं।

वसुधा — ठीक है सर, अगर आप मुझ से ये वादा करते हैं तो मैं आज ही राजनीति ज्वाइन करती हूँ।

वसुधा राजनीति ज्वाइन कर लेती है और अपनी पार्टी (भारतीय विकास पार्टी) के लिए जमकर चुनाव प्रचार करती है। नमन जी विनोदी किस्म के राजनेता हैं, वे महिलाओं से भी विनोद कर लेते हैं परंतु महिला नेत्रियों का बहुत सम्मान करते हैं। उनकी मर्यादाओं का भी ख्याल रखते हैं। इधर नमन

जी और वसुधा के बीच बढ़ती नजदीकियों के कारण उनकी ही पार्टी में खूब कानाफूसी शुरू हो जाती है। कभी-कभी वसुधा चुनाव प्रचार के दौरान नमन जी के लिए घर से खाना बनाकर लाती है और नमन जी सबके सामने ही वसुधा की नृत्यकला, व्यक्तित्व के बाद अब पाक कला की भी तारीफ कर देते हैं, जो आग में घी डालने का काम करता है। लेकिन वसुधा नमन जी को अपना राजनीतिक गुरु मानती हैं और दोनों के बीच बहुत स्वस्थ संबंध हैं। चुनाव के बाद मतगणना होती है। भारतीय विकास पार्टी को भारी बहुमत मिलता है और नमन जी प्रधानमंत्री बनते हैं। अपने वादे के मुताबिक वो वसुधा जी को केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री बनाते हैं।

नमन जी — वसुधा जी, अब आप महिला एवं बाल विकास के लिए जो करना चाहें कर सकती हैं, आपको पूरी आजादी है। महिलाओं और बच्चों के खिलाफ अपराध बर्दाश्त नहीं किया जा सकता। ऐसे अपराधियों को कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए। आप इनके खिलाफ जो चाहे कार्यवाही करें।

वसुधा — मैं महिलाओं और बच्चों के अवैध व्यापार पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाना चाहती हूँ। ऐसा करने वालों के खिलाफ सख्त कानून का प्रावधान चाहती हूँ।

नमन जी — आप पहल कीजिए।

वसुधा — ठीक है सर।

वसुधा की पहल पर महिलाओं और बच्चों का अवैध व्यापार करने वालों के खिलाफ कड़े कानून का प्रावधान किया जाता है। सजा भी सख्त कर दी जाती है। वसुधा सभी राज्यों के सचिवों और पुलिस प्रमुखों की बैठक बुलाती है और ऐसे नेटर्क ध्वस्त करने का आदेश देती है जो बच्चों का अवैध व्यापार करते हैं। साथ ही सोनेलाल गिरोह को नेस्तनाबूत करने के लिए योजना बनाने के लिए कहती है। सोनेलाल अभी पूरे दक्षिण एशिया में अपना कारोबार फैला चुका है। वह एक बड़ा बाल तस्कर बन चुका है। वह बड़े-बड़े लोगों से सम्पर्क बना चुका है।

वसुधा (अपने सचिव नायक से) — मुझे सोनेलाल एक महीने के अंदर चाहिए, जिन्दा या मुर्दा।

नायक — ऐसा ही होगा मैडम। एक महीने में हम उसके गिरोह को ध्वस्त कर देंगे और उसे अपने कब्जे में ले लेंगे।

एक महीने की कार्यवाही में सोनेलाल गिरोह तहस-नहस हो जाता है। एक एनकाउंटर में सोनेलाल मारा जाता है। सोनेलाल के मरने की खबर सुनकर आज पहली बार वसुधा सार्वजनिक रूप से रोती है। उसके आंसू रोके नहीं रुकते। पति की अंतिम यात्रा के बाद आज तक किसी ने उसके आंसू देखे नहीं थे, देखा था तो मुस्कराता या शांत चेहरा। आज वसुधा को लगा कि वह अपने प्यारे पति को इंसफ दिला पाई है। वह अपने पति की तस्वीर के सामने खड़ी होकर कहती है — 'आज मेरी जिंदगी का बहुत बड़ा मकसद पूरा हो गया लेकिन कितना अच्छा होता अगर पूरी जिंदगी तुम्हीं मेरे मकसद होते। इतना कुछ होकर भी लगता है मैं कुछ भी नहीं हूँ। तुम जीवन में जो खालीपन छोड़कर गए हो, उसे कोई नहीं भर सकता।'।

सौतेला



सुश्री मनजीत शर्मा 'मीरा'
सहायक लेखा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
हरियाणा, चण्डीगढ़

रात का नीरव सन्नाटा गहन अंधकार के आगोश में इस सरगोशी से समाया हुआ था कि पेड़ की पत्ती तक हिले तो आहट सुनाई दे। हवेली के बाहर खड़े आम, नीम और इमली के पेड़ मौन खड़े निनिमेष इस अंधकार को ताके जा रहे थे।

कहने को तो वह एक मर्दाना चीख ही थी परंतु ऐसा लगा जैसे किसी का कलेजा आर्तनाद कर उठा हो। पेड़ों पर रात्रि विश्राम कर रहे पखेरू जब इस आर्तनाद से भयभीत होकर उड़े तो वातावरण का सन्नाटा तितर-बितर हो गया और इसमें रुदन की अजीब-सी आवाजें शामिल हो गईं।

कुछ दिन पहले की ही तो बात है जब यह हवेली दुल्हन की तरह सजी हुई थी और इसकी बलाएं लेने पूरा गांव जश्न में शामिल हुआ

था। मनोज के जन्मदिवस का अवसर था। वह हवेली का चिराग था और इस चिराग की लौ को हर आंधी-तूफान से बचाए रखने के लिए एक मां की दोनों हथेलियों से सुरक्षित और कौन-सी ओट हो सकती है। कौशल्या भी इस तथ्य को जानती थी कि हवेली में यदि जीजी से ज्यादा सम्मान उसे मिलता है तो उसका कारण मनोज है। वही कौशल्या जो मनोज पर आई हर बाधा, दुख, मुसीबत से टकरा सकती थी, मात्र एक छोटी-सी बीमारी से स्वयं हार भूमि पर निस्सहाय, निर्जीव पड़ी थी।

“कौशल्या नहीं रही।” जो भी सुनता अवाक रह जाता। “अभी कुछ दिन पहले ही तो मनोज के जन्मदिन पर उसे देखा था।”

अभी सूरज की पहली किरण ने भी गांव के दरवाजे पर दस्तक नहीं दी

थी कि पूरा का पूरा गांव हवेली के सामने इकट्ठा हो गया। सभी गमगीन थे और मन ही मन सोच रहे थे कि शायद कोई चमत्कार हो जाए और अचानक उन्हें पता चले कि यह खबर झूठी है।

गांव की बड़ी-बूढ़ियां जहां कौशल्या की सास को सांत्वना अपने अंदाज में दे रही थीं वहीं कुछ औरतें कौशल्या की जेठानी सुमित्रा को संभालने में लगी थीं जो बार-बार पछाड़ खाकर मूर्च्छित हो जाती थी – “हाय! कितनी सुंदर लग रही थी उस दिन ... मैंने कहा था अपनी नजर उतार लियो कौशल्या।” सुमित्रा विलाप करते हुए बोली। “पता नहीं किसकी नजर लग गई मेरी बहन को ... हाय! कहीं मेरी ही तो नजर नहीं लग गई।” गांव की सभी औरतें जानती थीं कि दोनों देवरानी-

जेठानी में आपस में बहुत प्यार था। सुमित्रा घर की बड़ी बहू थी और विवाह के दस वर्ष बीत जाने पर भी निःसंतान थी परंतु यह बात रंचमात्र भी कहीं उसके मन में विद्वेष का कारण नहीं बनी कि कौशल्या ने मनोज के रूप में हवेली का चिराग जला कर पूरे घर को रोशनी से भर दिया है। इसका कारण भी कौशल्या ही थी जो सुमित्रा को अपने हृदय से सम्मान देती थी।

“हाय! कहां चली गई मेरी बहू ... मुझसे हमेशा कहती थी अम्मां, मैं तो तुम्हारी बहू नहीं बेटी हूं। हाय! अब मनोज का क्या होगा ... किसे मां कहकर बुलाएगा।” अम्मां छाती पीट-पीटकर विलाप कर रही थी – “हाय! क्या बिगाड़ा था मैंने किसी का ... मुझे ही उठा लेता ... मुझे ही उठा लेता भगवान!” वे पूरी शक्ति से छाती पीटने लगीं।

सारा माहौल अत्यंत ही गमगीन था। लोग आते और मातमपुरसी कर हवेली के बरामदे में बिछी दरियों पर बैठ जाते। औरतों के बैठने की व्यवस्था अंदर कमरों में कर दी गई थी। जहां-जहां नाते-रिश्तेदारी थी वहां-वहां खबरें भेजी जा रही थीं। ऐसे अवसरों के कुछ अनुभवी व्यक्तियों द्वारा अंतिम संस्कार की तैयारी की

जिम्मेदारी संभाल ली गई थी। दूर गांव से कोई भी रिश्तेदार आता या आसपास के गांवों से परिचितों-परिजनों का कोई जत्था आता तो अंदर के कमरों से विलाप का स्वर और तीव्र हो उठता और पूरा माहौल फिर गम से चीत्कार कर उठता।

पांच वर्षीय मनोज को इस माहौल से बचाने के लिए नींद खुलते ही पड़ोस की एक महिला के घर भेज दिया गया था। वह इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ था कि उसकी मां अब कभी उसके पास नहीं आएगी। “मां बीमार है और डाक्टर साहब की दवा खाते ही ठीक हो जाएगी ... जैसे एक बार वह खुद बीमार होने पर ठीक हो गया था।” वह ऐसा ही सोच रहा था।

कौशल्या का पति वीर प्रताप मातम में आए पुरुषों के बीच फर्श पर बिछी दरी पर सिर झुकाए बैठा था। लोग बार-बार उसे दिलासा दे रहे थे पर इस समय ना तो वह कुछ बोल रहा था और ना ही रो रहा था। बस दुख-दर्द की एक गहरी छाया उसके चेहरे पर लिपटी पड़ी थी। वह इस अचानक हुए हादसे से सदमे की स्थिति में था। कल तक जिस घर में खुशियों के तराने गूंज रहे थे वहां आज रूदन और

विलाप की मर्मस्पर्शी आवाजें फैली हुई थीं। बस ऐसा दिमागी बुखार चढ़ा कौशल्या को कि उसके पूरे वजूद को लील गया।

“बेटा, निकाल ले अपने मन का गुबार ... रो ले ... मन हल्का हो जाएगा ... कैसे पत्थर हो गया है तू ...।” पास बैठे बाबूजी उसे अपनी बांहों में भरते हुए बोले पर वह वैसे ही निश्चल बैठा शून्य में देखता रहा।

कौशल्या की पार्थिव देह को दुल्हन की तरह सजाया गया। ऐसा जान पड़ता था जैसे वह अभी उठ पड़ेगी। जब सिंदूर की रस्म निभाने के लिए वीर प्रताप को बुलाया गया तो उसकी नजरें कौशल्या के रक्त-विहीन चेहरे पर ठहर गईं। कौशल्या के चेहरे पर मौत के बाद का सुकून ना होकर एक बेचैनी थी जैसे कह रही हो – “मुझे बचा लो।” अपने पांच वर्षीय बच्चे से जुदा होने की छटपटाहट उसके चेहरे पर साफ झलक रही थी। बुखार की नीमबेहोशी में भी वह मनोज का ही नाम पुकारती रही थी। ऐसा जान पड़ता था जैसे उसके बेजार होंठ अभी पुकार उठेंगे – मनोज। वीर प्रताप ने चुटकी भर सिंदूर कौशल्या की मांग में भरा तो एक बार फिर रूदन की आवाजें कानों के परदे फाड़ने

लगीं। बूढ़ी मां बेटे को सीने से लगाकर दहाड़ें मार-मारकर रोने लगी। वीर प्रताप के सब्र का बांध टूट गया और मां के सीने से लगकर वह जोर-जोर से रोने लगा।

तभी मनोज वहां आ गया। सबको रोता देखकर वह भी रोने लगा। जमीन पर पड़ी अपनी मां की पार्थिव देह को उसने आश्चर्य से देखा – “मां को क्या हुआ...? मां लेटी क्यों है?” अम्मां और सुमित्रा ने उसे बाहों में समेटकर पुचकारना चाहा तो वह उनके हाथ से छूटकर अपनी माँ से लिपट गया – “मां, आंखें खोलो मां ... दादी, मां बोलती क्यों नहीं? वह कौशल्या की पलकें अपने हाथों से खोलने की कोशिश करने लगा। दादी ने उसे खींचकर अपनी गोद में उठा लिया तो वह छटपटाकर मां के पास दोबारा आ गया और उसके सीने से लग हिचकियां ले-लेकर रोने लगा।

कौशल्या की मौत पर रो रहे लोगों की सारी सहानुभूति अब उस नन्हीं-सी जान पर सिमट आई। हृदय-विदारक विलाप फिर कानों के परदे फाड़ने लगा – “हाय! बड़ी निर्मोही निकली तू कौशल्या! ... बच्चे से भी मोह तोड़ लिया ... हाय! क्या होगा इस नन्हीं-सी जान का।”

अपराह्न होते-होते कौशल्या की पार्थिव देह का अंतिम संस्कार कर सब लटके चेहरे लिए घर लौट गए।

आज कौशल्या की तेरहवीं है। सिर पर तौलिया रखे आलथी-पालथी मारे बैठा वीर प्रताप चुपचाप सारी रस्में निभा रहा है। बीच-बीच में कई बार रुदन की आवाजें शामिल हो जाती हैं। रिश्तेदार मनोज को बुलाने के लिए कह रहे हैं पर उसका कहीं अता-पता नहीं है। “अभी थोड़ी देर पहले ही तो राजू के साथ खेल रहा था ... अब ना जाने कहां चला गया ... मैं देखती हूं।” कहकर सुमित्रा मनोज को ढूंढने लगी। हवेली के सभी कमरों में ऊपर-नीचे सब जगह देखा पर वह कहीं नहीं मिला। वीर प्रताप को घबराहट होने लगी – “बच्चा कहां चला गया। अपनी मां की मौत के बाद से ही वह असहज हो उठता है। बच्चों के साथ खेलते-खेलते रोने लगता है। भरपेट भोजन नहीं करता। उसकी बाल-सुलभ चंचलता जैसे खत्म हो गई है।”

“भाभी मैं देखता हूं।” घबराहट उसके चेहरे पर पसीना बन छलक आई।

“बेटा, तुम ना उठो। रस्में पूरी करो। मैं जाकर देखती हूं।” अम्मां की बूढ़ी हड्डियां धीरे-धीरे उठने लगीं। उन्होंने अभी दो कमरों में ही देखा था कि तीसरे कमरे की ओर जाते वक्त किसी बच्चे के सिसकने की आवाजें कानों में पड़ी। वे दोबारा पीछे लौट आईं। सिसकियां धीरे-धीरे तेज होने लगीं। कमरे में आकर उन्होंने गेहूं के ड्रम के पास रखे बिस्तरों को टटोला कि कहीं यहां तो नहीं दुबककर बैठा। तभी उनकी नजर पलंग के नीचे गई। मनोज मां की फोटो सीने पर रखे हुए वहां सिसक रहा था।

“बेटा, यहां क्या कर रहा है इतनी गर्मी में ...। आ मेरे बच्चे बाहर आ।” अम्मां ने बमुश्किल फर्श पर बैठकर उसकी बांह हिलाते हुए कहा। पर मनोज नहीं हिला। वैसे ही हिचकियां ले-लेकर रोता रहा।

बूढ़ी आंखों से एक नदी निकली और झुर्रियों भरे चेहरे में जज्ब हो गई। उन्होंने उसे झिंझोड़ा – “मौजी, मेरे बच्चे चल बाहर आ ... देख बाहर सब तुझे बुला रहे हैं। तेरी नानी आई है ... नाना आए हैं। तेरे लिए सुंदर-सुंदर कपड़े लाए हैं।” इस बार मनोज ने करवट लेकर दीवार की तरफ मुंह कर लिया। अम्मां ने फिर दुलारने की

कोशिश की — “बाहर कुलफी वाला आया है ... चल तुझे कुलफी लेकर दूँ। आज तुझे दो कुलफी लेकर दूंगी ... एक लाल, दूसरी सफेद ... आ मेरे बेटे बाहर आ।” वे सिसकने लगीं। अम्मां को रोता देखकर मनोज पलंग के नीचे से निकला और उनके सीने से लगकर जोर-जोर से रोने लगा — “मैं बाहर नहीं आऊंगा दादी ... इतने सारे लोग क्यों आए हैं ... तुमने कहा था मां भगवान के घर गई है थोड़े दिनों में आ जाएगी ... अभी तक मां नहीं आई। दादी मां क्यों नहीं आती?”

“ऐसे नहीं रोते बेटा ... मां जरूर आएगी। भगवान जी को उनसे जरूरी काम पड़ गया है। इसलिए उन्होंने उसे कुछ दिन और अपने पास रख लिया है।” नन्हें-से पोते को गोद में लिए अम्मां उसे

तरह-तरह की बातों से बहलाने लगीं।

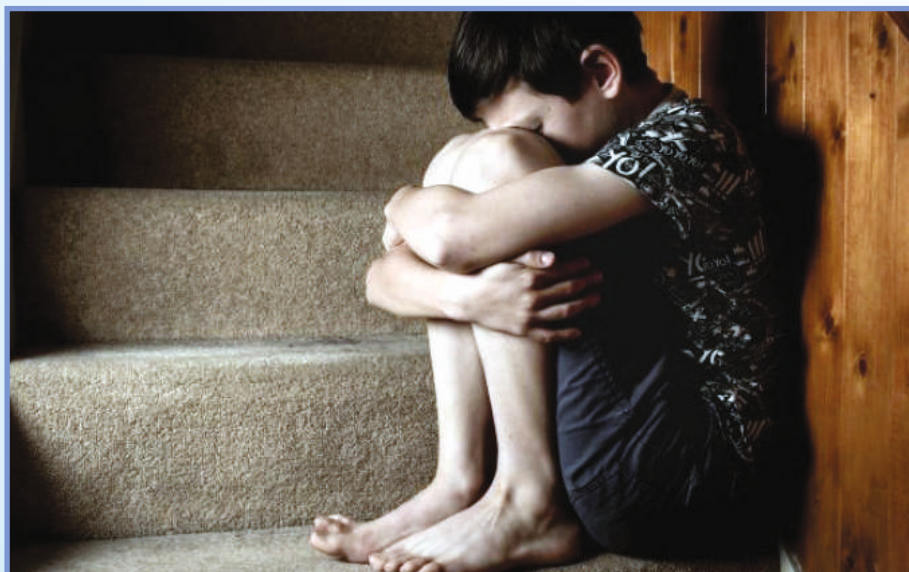
“भगवान जी भी बीमार हैं ...? मां उन्हें दवाई देने गई हैं? मनोज ने बाल-सुलभ जिज्ञासा से पूछा। जब मां को बुखार हुआ था तो तुमने कहा था भगवान उन्हें ठीक करने आए हैं। भगवान जी की दवा से मां आराम से सो गई थी। फिर भगवान जी उन्हें अपने साथ क्यों ले गए?”

“ये तेरे हाथ में क्या है ... दिखा तो।” अम्मां ने उसका ध्यान बंटाने की कोशिश की। मनोज ने चुपचाप हाथ दादी की तरफ बढ़ा दिया। कांपते हाथों से उन्होंने कौशल्या की फोटो मनोज के हाथ से ले ली। मनोज की उगली थामे कौशल्या का मुस्कराता हुआ फोटो था। “देख मौजी, तेरी मां फोटो में कैसे

मुस्कराती हुई तेरे साथ खड़ी है। हमारे राजा बेटे ने कितनी सुंदर कमीज पहनी है। ये तो हमारे मनोज के जन्मदिन की फोटो है। भला ऐसी फोटो को देखकर भी रोते हैं ...।” अम्मां ने उसके बालों में प्यार से उंगलियां घुमाते हुए कहा।

“मां को देखे बहुत दिन हो गए। इसलिए मैं रोज मां की फोटो देखता हूँ।” मनोज ने अम्मां के हाथ से फोटो ले ली और फिर तस्वीर में अपनी मां के चेहरे पर अपनी नन्हें-नाजुक उंगलियां चलाने लगा — “दादी मैं भी जाऊंगा भगवान जी के घर ... मां से मिलने। तुम कहो ना भगवान जी से कि वे मुझे भी अपने घर ले जाएं...?” अम्मां अंदर तक सिहर गई और उसे बहला-फुसलाकर बाहर ले आई। तेरहवीं की सारी रस्में निभाने के बाद परिजन अपने-अपने घरों को जाने लगे।

शाम का धुंधलका धीरे-धीरे गहराने लगा और रात की काली चादर ने हवेली को पूरी तरह अपने आगोश में ले लिया। सुमित्रा घर का कामकाज समेटकर चौबारे पर सोने जा चुकी थी। मनोज अम्मां के साथ नीचे के कमरे में सोया हुआ था। अम्मां और बाबूजी रह-रहकर



मनोज और वीर प्रताप के भविष्य के बारे में सोचकर चिंतित हो रहे थे — “हमारा तो जो होना है हो जाएगा ... पर इस नन्हीं—सी जान का क्या करूँ ...? बार—बार अपनी माँ के बारे में पूछता है ... तरह—तरह के सवाल करता है ... इसे कैसे समझाऊँ।” अम्मा ने मनोज को अपने और करीब सटा लिया।

“इसकी ओर देखकर तो कलेजा फटता है मेरा।” बाबूजी ने एक नजर सोते हुए मनोज की तरफ देखा और करवट बदल ली। दो बूंद आंसू आंखों से गिरकर तकिए में जज्ब हो गए।

दूसरी मंजिल पर स्थित अपने कमरे के मद्धम प्रकाश में एक बुत की भांति वीर प्रताप लगातार सिगरेट फूँके जा रहा था। अनायास उसका हाथ पलंग पर अपने साथ वाली जगह सहलाने लगा। एक पल के लिए उसे लगा कि अभी दरवाजा खुलेगा और रोज की भांति कौशल्या उसके समीप आ बैठेगी। कौशल्या की मृत्यु की हकीकत कई बार उसे भ्रम लगती और कौशल्या के कमरे में आने का भ्रम उसे हकीकत जान पड़ता। उसकी बेचैन नजर मेज पर सजी कौशल्या की तस्वीर से फिसलती

हुई उसके साथ रखी दवाइयों की शीशीयों पर केन्द्रित हो गई जो अब निरर्थक—सी वहां पड़ी थीं। ये सारी दवाइयां तब भी बेकार साबित हुई थीं जब कौशल्या बीमार थी। कौशल्या ने उसे इतना मौका भी नहीं दिया था कि वह उसे किसी अच्छे डाक्टर को दिखा पाता। पहले पहल सभी को यही लगा था कि साधारण—सा बुखार है जो बाद में उसके दिमाग को चढ़ गया। आखिरी बार जब उसने मनोज के सिर पर हाथ रखा था तो वह उसे स्वयं वहां से उठा ना सकी थी। नाममात्र को रह गई सिगरेट ने जब वीर प्रताप की उंगलियों को छुआ तो दर्द की एक लहर उसकी उंगलियों से होती हुई उसके पूरे वजूद में फैल गई। घबराकर उसने जलती हुई सिगरेट का आखिरी टुकड़ा फर्श पर फेंक दिया।

जल गई उंगलियों को सहलाता हुआ वह कमरे से निकलकर बाहर बरामदे में आ गया और चमगादड़ की तरह फड़फड़ाता हुआ इधर से उधर चक्कर काटने लगा। जब चैन ना मिला तो उसने अम्मा के कमरे का दरवाजा खटखटाया — “अम्मा मनोज सो गया क्या?” उसने बेतुका—सा सवाल किया जिसे आधी रात को पूछने का कोई

औचित्य नहीं था। अम्मा ने मनोज की बांह धीरे—से अपने सीने से सरकाई और कुंडी खोलकर बाहर आते ही उसे सीने से लगा लिया। आंसुओं की अपनी एक अलग भाषा होती है जो तत्काल समझ में आ सकती है। “वहां उस कमरे में अकेला क्यों पड़ा था ... चल, यहां सो जा मनोज के पास।” उन्होंने उसका कंधा थपथपाया। वीर प्रताप बिना कुछ कहे कमरे में आकर मनोज के पास बैठ गया और उसका सिर अपनी गोद में रख बेतहाशा चूमने लगा। छोटी—सी जान कुनमुनाने लगी तो वह उसे थपककर एक झटके से बाहर निकल गया। फिर ना पूरी रात अम्मा को नींद आई, ना बाबूजी को।

वक्त अपनी रफ्तार से गुजर रहा था। रोज वैसे ही सुबह होती, खेत—खलिहान के काम होते और रसोईघर से बर्तनों के गिरने की आवाजें आतीं। धीरे—धीरे मातम के बादल तो छंटने लगे थे लेकिन मनोज और वीर प्रताप के मन का खालीपन ना भरा था। घर के सारे काम की जिम्मेदारी भी अब अकेली सुमित्रा पर आ गई थी। सुबह—सवेरे उठकर वह पूरा घर बुहारती, फिर रसोई में आ जुटती। इसके

साथ ही अब उसे स्कूल के लिए मनोज को भी तैयार करना पड़ता। कई बार वह बड़ी जिद करता। नहलाने लगती तो कहता — “तुमसे नहीं नहाऊंगा।” खाना खाने के वक्त भी मचलता। वह पूरी कोशिश करती कि सब कुछ ठीक-ठाक संभाल ले पर वह उसकी मां तो थी नहीं अतः कभी-कभी झल्ला जाती। जब तक जख्म ताजा थे वह मरहम लगाने का काम बखूबी करती रही। हवेली में सुबह से शाम ढेरों काम होते। अम्मां का तो खुद ही शरीर नहीं चलता। ये सब वह कब तक करेगी। कब तक अकेली खटती रहेगी। उसका पति सेना में है और मातम में शरीक होकर तीसरे ही दिन लौट गया था। छुट्टी ही नहीं मिली थी। इस बार उसने पहले से ही सोच रखा था कि वह भी अपने पति के साथ ही रहेगी लेकिन कौशल्या की अकस्मात् मृत्यु से सब पलट गया। पता नहीं अब कब तक यहीं गांव में रहना पड़ेगा। अम्मां और बाबूजी की नजरों में वह वैसे ही कौशल्या से कमतर थी। और ये बात वह खुद भी अच्छी तरह जानती थी कि वह कौशल्या की जगह कभी नहीं ले सकती। बस एक मनोज ही था जिसकी चाहत में वह सब कुछ भूल जाती थी।

कौशल्या की मृत्यु को चार महीने हो चले थे। इस दौरान सुमित्रा अकेली काम कर-करके तंग आ चुकी थी। घर भी कोई छोटा ना था कि दो कमरे झाड़े-पोंछे और बस ...। रिश्तेदारों में से भी रोज कोई ना कोई चला ही रहता। कभी चाय बनाओ, कभी रोटियां बनाओ, कभी किसी के रात ठहरने पर बिस्तर लगाओ, उठाओं और किसी-किसी को तो बस में बिठाकर भी आओ। रिश्तेदारों के गले लगकर रोते-रोते भी वह आजिज आ चुकी थी। वह एक साधारण स्त्री थी और अपना भला-बुरा ज्यादा समझती थी। कुछ करती तो जता देती। ऊपर से अम्मां भी जब-तब कौशल्या को याद कर बिलखती रहतीं। एक बार ऐसे ही उसके मुंह से निकल गया — “कौशल्या को कौन रोता है, रोते तो उसके काम को हैं। मैं कौन-सा यहां खाट तोड़ती हूं ... सारा दिन खटती रहती हूं।”

अम्मां पहले तो कुछ नहीं बोली। कुछ देर बाद उन्होंने खामोशी तोड़ी — “सबको पता है बहू, तू अकेली खट रही है। मेरे से जितना बन पड़ता है तेरा हाथ बंटा देती हूं। मैंने सोचा था कौशल्या की बरसी हो जाए तो उसके बाद ही

वीर की शादी की बात चलाऊं। मनोज को भी मां की जरूरत है। पूरी जिंदगी ऐसे ही नहीं रहने वाला बहू ...।”

सुमित्रा भी चाहती तो यही थी कि वीर प्रताप का रिश्ता कहीं हो जाए और वह भी हवेली के कामों से मुक्त हो अपने पति के साथ शहर में रह सके। रसोईघर में जाकर वह सरसों के तेल की शीशी उठा लाई और अम्मां के बालों में थपकने लगी — “आजकल कौन बरसी तक राह देखता है ... और फिर मनोज की छुटपन में ही देवर जी की शादी हो जाए तो बच्चे को संभलने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।” सुमित्रा बालों में कंधी करते हुए बोली।

“इस बारे में वीर से बात करते हुए मुझे घबराहट होती है। हर समय वह कौशल्या की ही बातें करता रहता है। फिर भी मैं अपने तरीके से उससे बात करूंगी ...।”

थोड़ी-सी मान-मनौवल के पश्चात वीर प्रताप मान गया और छः महीने होते ना होते बड़ी सादगी से उसकी शादी हो गई। सभी खुश थे। जहां अम्मां-बाबूजी और परिजनों को इस बात की प्रसन्नता थी कि अब घर संभल जाएगा और

मनोज को भी मां की कमी नहीं खलेगी वहीं सुमित्रा को इन बातों के साथ-साथ इस बात की भी खुशी थी कि कोई हाथ बंटाने वाली आ गई व कुछ दिन और रहकर वह अपने पति के पास शहर लौट जाएगी। मनोज इस बात से खुश था कि भगवान जी ने अपना वायदा पूरा कर दिया था कि वे उसकी मां को ठीक करके जल्दी ही उसके पास भेज देंगे। मां को देखे चूंकि बहुत दिन हो गए थे उसका मन कर रहा था कि वह दौड़कर मां की गोदी में बैठ जाए और पूछे कि वह उसे छोड़कर क्यों चली गई थी। मां को वह सब बताएगा कि उसे उसकी कितनी याद आती थी। रात को जब नींद नहीं आती थी तो वह उसे याद करके जोर-जोर से रोता था। तब दादी ही उसे चुप कराती थीं। उसे परियों की कहानी सुनाती थीं। वो परी बिल्कुल मां जैसी होती थी। मां को वह पीपल वाले मंदिर में भी लेकर जाएगा और बताएगा कि स्कूल से लौटते वक्त इसी मंदिर में उसने भगवान जी से प्रार्थना की थी और उन्होंने मां को सचमुच भेज दिया। वह मां को लेकर भगवान जी को प्रसाद चढ़ाने जरूर जाएगा। उसकी टीचर भी बताती हैं कि जब कोई अपना वायदा पूरा करता है तो उसका धन्यवाद जरूर

करना चाहिए। वह मां को अपनी स्कूल की नोटबुक भी दिखाएगा जिसमें टीचर ने उसे वैरीगुड दिया है।

मां के प्यार से बहुत दिनों तक वंचित रहे बच्चे के मन-मस्तिष्क में बहुत सारी बातें कुलबुला रही थीं जिन्हें बताने के लिए उसका नन्हां-सा मन व्याकुल हो रहा था।

लाल जोड़े में लिपटी नई बहू कल्याणी ने जब हवेली में कदम रखा तो पारंपरिक ढंग से उसका स्वागत किया गया। घर मेहमानों से भरा हुआ था और गांव की औरतें इस चर्चा में व्यस्त थीं कि नई बहू है तो सुंदर पर क्या वह कौशल्या की जगह ले जाएगी ... सौतेले बेटे को मां-सी ममता दे जाएगी ...?

वीर प्रताप इस अवसर पर निभाई जाने वाली रस्मों को यंत्रवत् पूरा कर रहा था। जिस कौशल्या की यादों को भूलने के लिए वह पिछले छः माह से प्रयास कर रहा था वह फिर उसकी आंखों के सामने बार-बार उपस्थित हो जातीं। कौशल्या भी तो उसके जीवन में इसी तरह आई थी ... और फिर चली भी गई।

“ये भी बहुत सुंदर है देवर जी ... बड़े किस्मत वाले हो।” सुमित्रा ने उसे छोड़ा तो एक फीकी-सी मुस्कान उसके चेहरे पर दौड़ गई।

मनोज एक कोने में बैठा उत्सुकता से यह सब देख रहा था। उसने सोचा था कि आते ही मां सबसे पहले उसके बारे में ही पूछेगी कि मेरा मौजी कहां है? और जब मां कहेगी कि तुने मुझे याद किया था मौजी? तब मैं उन्हें झूठ-मूठ ही कह दूंगा कि मुझे भला तुम्हारी याद क्यों आती, जब तुम्हें ही मेरी याद नहीं आई ... भगवान जी से मिलने गर जाना ही था तो मुझे भी साथ ले जातीं। इसी असमंजस में वह बार-बार अपने दिल को दिलासा देता कि शायद घूंघट के कारण मां ने उसे अभी देखा नहीं है वरना।

तभी उसका दोस्त राजू वहां आ गया – “तूने अपनी नई मां को देखा ... बात की उनसे?”

“मां को मिलने इतने सारे लोग पहले कभी नहीं आए। मां भगवान जी से मिलकर लौटी हैं ना इसीलिए सब उनसे भगवान जी की बातें पूछ रहे हैं।”

“मैं भी पूछूंगा चाची से कि असली के भगवान कैसे होते हैं। और क्या

सच्ची में भगवान जी बात भी करते हैं?”

“बात क्यों नहीं करते? ... करते हैं ना बात। मुझसे की थी।” उसके चेहरे पर नूर छलक आया।

“अच्छा ... कब?” राजू की आंखें विस्मय से फैल गई। हाथ में पकड़ा लड्डू उसने एक तरफ रख दिया और मनोज के गले में अपनी बांह डालकर उससे सटकर बैठ गया।

“उस दिन मंदिर में ... जब मैंने भगवान जी से कहा था।”

“क्या कहा था ...?” पूरी बात जानने के लिए राजू का नन्हा—सा मन अधीर हो उठा और उसने मनोज की बात बीच में ही काट दी।

“यही कि इतने दिन हो गए मां को देखे ... अब मां को वापस भेज दो। मुझे मां की बहुत याद आती है।” उसकी निगाहें उस ओर उठ गईं जहां कल्याणी सिर झुकाए बैठी थी।

“सच! भगवान ने बात की थी तुझसे?”

“हां ...।”

“पर चाची तो मर गई थी।”

“मर गई थी ...? ये मरना क्या होता है?” मनोज के चेहरे पर असमंजस के भाव उभरने लगे और राजू की बांह अपने गले से हटाकर वह उठकर खड़ा हो गया।

“मेरी मां ने बताया था ... जो मर जाता है ना वो भगवान के पास चले जाते हैं और फिर कभी लौटकर नहीं आते। ... पर चाची तो आ गई। मां झूठ बोलती है।”

“हां, ताई झूठ बोलती हैं। भगवान जी कभी झूठ नहीं बोलते।” वह तैश में आ गया। “उन्होंने मुझसे खुद कहा था कि तुम्हारी मां दवा पीकर आराम कर रही है; ठीक होते ही आ जाएगी। तू देख, मां आई है ना!” मनोज ने कल्याणी की ओर इशारा करते हुए राजू को विश्वास दिलाने की कोशिश की।

“तुझे पता है मैंने मां के लिए एक नोटबुक भी बनाई है जिसमें टीचर ने मुझे वैरीगुड दिया है? अभी लेकर आता हूं ...।”

शाम होते—होते मेहमान छंटने लगे थे। कल्याणी लंबा घूंघट निकाले बैठी थी। कुछ लड़कियां उसे घेरे हुए थीं। मनोज और राजू कुछ दूरी बनाकर कमरे में रखी कुर्सियों पर जाकर बैठ गए। दोनों बच्चे ना तो

ये जानते थे कि कल्याणी ने घूंघट क्यों निकाल रखा है और ना ही इस विषय पर तर्क करने की बुद्धि उन मासूमों में थी। बस एक उत्सुकता और बेचैनी थी।

“तू कर ना बात मां से ...।” राजू ने मनोज को कोहनी मारी।

अचानक कल्याणी की नजर उन दोनों पर पड़ी तो पास बैठी लड़की से उसने पूछा — “इनमें मनोज कौन है?”

“ऐ मनोज! इधर आ ... नई मां बुलाती है।”

मनोज हाथ में नोटबुक थामे शरमाया—सा वहां आकर खड़ा हो गया। उसे नोटबुक दिखाने की जितनी जल्दी थी उतनी ही उत्सुकता यह जानने की भी थी कि मां ने अभी तक घूंघट से चेहरा क्यों ढांप रखा है।

पास आते ही कल्याणी ने उसे अपनी बांहों में समेट लिया — “तो तुम हो मनोज! ... और ये तुम्हारे हाथ में क्या है?” कल्याणी ने चेहरे से घूंघट पीछे सरकाया। नजरें उठाकर उसने देखा कि एक फूल—सा नाजुक बच्चा विस्फारित नेत्रों से उसे देख रहा है।

“तुम मेरी मां नहीं हो।” कल्याणी का चेहरा देखते ही वह उसकी गिरफ्त से छूटकर भाग निकला और पैर पटकता हुआ अम्मा के पास पहुंचा — “दादी, तुम झूठ बोलती हो ... वो मां नहीं है।” पिछले छः माह में यादों की एक-एक ईंट चिनकर उसने कल्पना का जो महल बनाया था वह ताश के पत्तों की तरह भरभराकर ढह गया था।

“ये तेरी मां ही है बेटा नई मां। तेरे भगवान जी ने उसे नया करके भेजा है ना, इसलिए उसकी शक्ल बदल गई है। देखना, थोड़े दिनों में तू खुद ही कहेगा कि हां, यही मेरी मां है।”

“नहीं, मैं कभी नहीं मानूंगा कि वो मेरी मां है ... कभी नहीं।” वह रूठकर वहां से चला गया।

अम्मा ने भी उसे मनाने की कोशिश नहीं की। उनका मानना था कि धीरे-धीरे सब सामान्य हो जाएगा।

मनोज को अपनी गिरफ्त से छूटकर भागते देख कल्याणी चकित-सी रह गई। वह नोटबुक खोलकर देखने लगी। छोटे-छोटे वाक्यों में मनोज ने “मां” पर निबंध लिखा था और टीचर ने उसे

वैरीगुड दिया था। निबंध के एक-एक शब्द को वह ध्यान से पढ़ने लगी। नन्हें-नन्हें हाथों द्वारा बेजान पन्नों पर उकेरा प्यार का सागर सजीव होकर उसके दिल में हिलोरें मारने लगा। मन के समंदर में ठाठें मारती भावनाओं की लहरों ने उसे ममता से सराबोर कर दिया। ना जाने समय का वो कौन-सा अंश था जिसने एक नई-नवेली दुल्हन को पत्नी बनने से पहले ही मां बना दिया था।

अगली सुबह जब पीपल वाले मंदिर में नई बहू को माथा टिकाने ले जाने लगे तो हवेली के आंगन में एक बार फिर चहल-पहल हो गई। आरती की थाली पकड़े अम्मा ने आवाज लगाई — “मनोज, चल जल्दी आ ... देर हो रही है।”

मनोज ने कोई जवाब नहीं दिया। हथेलियों पर चेहरा टिकाए वह वैसे ही मुंह फुलाए बैठा रहा।

अम्मा ने फिर पुकारा।

“दादी, मुझे नहीं जाना मंदिर।” यह बिना उनकी ओर देखे बोला।

“रहने दो अम्मां, क्यों जिद करती हो।” सुमित्रा प्रसाद की परात संभालते हुए बोली।

“मनोज, तू सचमुच नहीं जाएगा? चल ना ... आज मेरे सामने भगवान से बात करना।” राजू ने उसकी बांह पकड़कर जबरदस्ती उठाते हुए कहा।

“नहीं, मेरी भगवान जी से कुट्टी है ... तू जा।” उसने दांतों में अंगूठा दबाकर कुट्टी करने का अभिनय किया।

विवाह के बाद की कुछ और रस्में निभाते-निभाते शाम घिर आई।

“चल बहू अब आराम कर ले। थक गई होगी तू।” अम्मां उसे वीर प्रताप के कमरे में छोड़ आई।

“कौशल्या को मैं बहुत प्यार करता था। ... लेकिन भगवान को कुछ और ही मंजूर था।” वीर प्रताप ने गला खंखारते हुए कुछ इस तरह बात आरंभ की।

“मनोज अभी छोटा है ... बच्चा है। उसे मां के प्यार की जरूरत है।” उसने अपनी बात जारी रखी।

“जी, मैं उसका पूरा ख्याल रखूंगी।” कल्याणी बस इतना ही कह पाई।

वीर ने गठरी बनी कल्याणी पर एक सरसरी-सी नजर फेंकी और सोफे पर पसर गया। सिगरेट की डिब्बी

उसके हाथों में खेलने लगी। तीन दिन तक वह इसी तरह कोई ना कोई उपदेश कल्याणी को देकर सोफे पर पसर जाता। सिगरेट के धुएं में कौशल्या को याद करता ... उसके ख्यालों में डूबने की कोशिश करता। इस कशमकश में कब कल्याणी का चेहरा कौशल्या के चेहरे पर लग जाता उसे स्वयं नहीं मालूम। जब कल्याणी नहीं थी तो बात और थी। कौशल्या की यादें ही उसकी तन्हाई बांटती थीं। लेकिन एक जीती-जागती औरत से वह कब तक भाग सकता था। इन तीन दिनों का सफर उसे कौशल्या की मौत के छः महीनों से भी ज्यादा लम्बा जान पड़ने लगा। चौथे दिन उसने कल्याणी को कोई नसीहत नहीं दी और

वक्त धीरे-धीरे दिनों की शक्ल में आगे बढ़ता जा रहा था और कौशल्या की यादें अतीत में कहीं पीछे छूटती जा रही थीं। पहले तो वह जब भी कल्याणी के पास एकांत में बैठता तो उसकी बातों में कौशल्या उपस्थित हो जाती थी लेकिन अब वह मनोज को लेकर चिंतित रहता। वह चाहता था कि मनोज के छोटे-छोटे दैनिक कार्यों में कल्याणी उसकी मदद करे ताकि इन छोटी-छोटी बातों से

दोनों के बीच प्यार का पुल बन सके। जबकि मनोज अपने किसी भी काम में कल्याणी की मदद नहीं लेना चाहता था।

कल्याणी का मानना था कि बच्चे का मन कोरे कागज की तरह होता है। उस पर जो लिखा जाएगा वही वह धीरे-धीरे सीख लेगा।

“मौजी, आ मैं तुझे नहला दूं। उसने पानी से भरी बाल्टी उठाते हुए कहा।

“नहीं मैं खुद नहा लूंगा।” वह तौलिया ढूँढने लगा।

“क्यों पहले तो तू अपनी मां से ही नहाता था। अपने सारे कामों के लिए उन्हें तंग करता था। मुझे अम्मा ने सब बता दिया है।”

“पहले मैं छोटा था।” वह तौलिया लेकर जाने लगा तो कल्याणी ने उसकी कलाई पकड़ ली – “इन छः महीनों में ही तू इतना बड़ा हो गया?”

मनोज ने एक झटके से अपनी कलाई छुड़ा ली – “जब मैं आपसे बात नहीं करना चाहता तो आप क्यों मुझे तंग करती हो?”

कल्याणी हतप्रभ—सी उसे देखती रह गई। उसे अपने आप पर ग्लानि

होने लगी। अपनी तरफ से उसने पूरा प्रयास किया था कि मनोज को मां की कमी महसूस ना हो। वह उसका अतिरिक्त ख्याल रखती। परंतु मनोज अपनी ही दुनिया में गुम रहता। शुरू-शुरू में एक-दो बार उसने मनोज के व्यवहार पर वीर प्रताप से चर्चा भी की थी। इस बात पर जब वीर प्रताप ने मनोज को डांट दिया तो उसने उससे मनोज के बारे में कुछ कहना ही बंद कर दिया।

कल्याणी ने अपने व्यवहार से घर में सभी का दिल जीत लिया था परंतु एक मनोज ही था जो यह भूल नहीं पाया था कि कल्याणी उसकी मां नहीं है। कल्याणी को कहता भी वह “नई मां” ही था। एक बार कल्याणी ने उसे टोक दिया – “तू मुझे नई मां क्यों कहता है ...? मां तो मां होती है। क्या मैं तुझे प्यार नहीं करती? तेरा ख्याल नहीं रखती?” ऐसे अवसरों पर मनोज कुछ नहीं बोलता और चुपचाप वहां से चला जाता। प्यार की प्रत्यंचा पर चढ़े ममता के सारे तीर निशाना चूक वापस उसी के सीने में धंस जाते थे।

मनोज को मां के लौट आने की जितनी खुशी हुई थी, वह पहले ही

दिन उसका चेहरा मां जैसा ना होने की वजह से काफूर हो चुकी थी। जब भी कल्याणी उसे अपने पास बुलाती, प्यार करने की कोशिश करती वो “ऊं—ऊं” करता दादी की गोद में बैठ जाता। वे उसे प्यार से समझातीं — “ध्यान से देख बेटा, यही तेरी मां है। तेरे भगवान जी ने शक्ल बदल दी है। देखना थोड़े दिनों में बिल्कुल असली मां जैसी कर देंगे।”

“नहीं करेंगे। भगवान जी ने फिर नाम क्यों बदल दिया। मेरी मां का नाम तो कौशल्या है।”

कौशल्या की मौत पर अम्मां ने बहलाने के ख्याल से मनोज को समझाया था कि मां भगवान से मिलने गई है लेकिन वह तो हर बात में अपने भगवान जी को बीच में ले आता। और जब मासूम मन के प्रश्नों का कोई उपयुक्त उत्तर उन्हें नहीं मिलता तो वे हथियार डाल देतीं।

सुमित्रा निःसंतान थी पर उसने मनोज पर भरपूर ममता लुटाई थी। जब से उसके अंदर शहर में अपने पति के साथ रहने की इच्छा बलवती हुई थी तब से कई बार उसके मन में ऐसे भाव जागे थे कि वह मनोज को भी अपने साथ ही ले

जाए। वहीं पढ़ाए—लिखाए और हमेशा अपने साथ ही रखे। इस भावना के पीछे उसके अवचेतन मन में कहीं ये बात भी थी कि कल्याणी के जब अपने बच्चे हो जाएंगे तो वह तो मां का सुख प्राप्त कर ही लेगी पर वह स्वयं। उसके लिए तो एक मनोज ही था जो उसकी झोली खुशियों से भर सकता था। पर ये सब बातें उसके मन—मस्तिष्क में ही उमड़ती—घुमड़ती रहती थीं। वीर प्रताप या अम्मां से जिक्र करने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी थी। फिलहाल उसे कल्याणी से कोई शिकायत नहीं थी। उसका व्यवहार देखती तो लगता दूसरी कौशल्या आ गई है लेकिन जब कभी मनोज को एक बार भी रोते देख लेती तो उसके अंदर की मां तड़पने लगती और उसका भ्रम टूटने लगता।

एक दिन मनोज दौड़ता—दौड़ता अम्मां के पास आया और पूछने लगा — “दादी, ये सौतेला क्या होता है?” उसकी सांस फूली हुई थी।

“तुझसे किसने कहा?”

“स्कूल से लौटते हुए मैं कुएं पर पानी पीने रुका तो वहां लक्ष्मी दीदी सरोज दीदी को कह रही थी कि इस मनोज की किस्मत फूट

गई ... अब सौतेली मां आ गई है पता नहीं कितने जुल्म करेगी इस पर। फिर मुझसे पूछने लगी — मनोज, सौतेली मां ठीक तरह खाना देती है तुझे कि नहीं ... मारती तो नहीं? मैंने कहा — मेरी तो नई मां है वह मुझे क्यों मारेगी? तो कहने लगी कि तू सौतेला है ना। जब मैंने पूछा कि ये सौतेला क्या होता है तो दोनों हंसने लगीं और बोली — बच्चू कुछ दिनों में ही पता चल जाएगा।

“दादी, बताओ ना ये सौतेला क्या होता है? ... सौतेले बेटे को मां क्यों मारती है?”

मनोज के मुंह से यह सुनते ही अम्मां का पारा सातवें आसमान पर चढ़ गया — “इन कलमुंही छोकरीयों को तो मैं अभी ठीक करके आती हूं। किस तरह जहर भर रही हैं जरा—से बच्चे के मन में।”

मनोज गुस्से में दादी को जाते देखता रहा। पास खड़ी सुमित्रा ने मनोज को गोद में उठा लिया — “जो बच्चे शरारत करते हैं ना ... अपनी मां को तंग करते हैं ... उन्हें सौतेला कहते हैं। तू कहां से हुआ सौतेला ... तू तो बहुत प्यारा बच्चा है।” मनोज को बहलाते हुए

सुमित्रा के कलेजे में भी यह शब्द एक तीर की तरह चुभा। उसे लगा जैसे किसी ने उसे सौतेली मां कह दिया हो।

उस दिन अम्मां ने गांव भर में वो हंगामा किया कि फिर किसी की हिम्मत नहीं हुई कि यह शब्द भी उनकी जुबान पर आए।

जिंदगी की मुंडेर पर बैठा वक्त धीरे-धीरे अपने खाते से एक-दिन कम करता जा रहा था लेकिन कल्याणी के इम्तिहान के दिन बढ़ते ही जा रहे थे। वह जी-जान से प्रयत्न कर रही थी कि एक सगी मां की तरह वह मनोज को स्कूल के लिए तैयार करे, अपने हाथों से खाना खिलाये, लोरियां सुनाए और बाहों में भरकर प्यार करे। पर उसके हाथ लगाते ही कई बार वह रोने लगता। यूं भी वह डरी-सहमी रहती कि कहीं उससे कोई गलती ना हो जाए। उस दिन दूध ज्यादा गर्म नहीं था। उसने स्वयं घूंट भरकर देखा था। पर मनोज ने गिलास मेज पर ऐसे पटका था जैसे उसने खौलता हुआ दूध उसमें डाल दिया हो। तब सुमित्रा ने उसे ऐसी नजरों से देखा था कि वह चुपचाप एक खुला बर्तन लाकर दूध ठंडा करती रही थी।

सुमित्रा का पति छुट्टियों में गांव आया तो उसने बताया कि शहर में रहने के लिए उसे सरकारी क्वार्टर मिल गया है और वह सुमित्रा को अपने साथ ही ले जाएगा। सुमित्रा ने अम्मां-बाबूजी को भी मनोज को उनके साथ भेजने के लिए राजी कर लिया। अम्मा-बाबूजी की भी यही राय थी कि मनोज उनके साथ चला जाए क्योंकि जब कल्याणी के अपने बच्चे होंगे तो वह मनोज पर ध्यान नहीं दे पाएगी। थोड़ी ना-नुकुर के बाद वीर प्रताप भी मान गया। बस कल्याणी से ही इस बारे में पूछने की किसी ने जरूरत नहीं समझी।

रसोईघर के कोने में किसी मूर्ति की भांति बैठी कल्याणी गहन उदासी में कहीं दूर गुम थी। उसकी आंखों में निःशब्द-सी वेदना समाई हुई थी। काफी देर से वह ऐसे ही निश्चल बैठी ना जाने किस चिंता में डूबी हुई थी। मनोज जितना उससे दूर होने की कोशिश करता वह मानसिक और भावनात्मक रूप से उतना ही उससे जुड़ती जा रही थी। प्यार और ममता की कोई शक्ल नहीं होती। निराकार भगवान का जब मन करता है मां

के रूप में वे धरती पर उतर आते हैं।

“तू चला जाएगा मौजी ...?” रात खाना परोसती कल्याणी ने मनोज से पूछा।

“तेरा दिल लग जाएगा वहां ...?”

मनोज ने एक पल के लिए कल्याणी की ओर नजरें उठाकर देखा। अदृश्य हवा की तरह बिना परचाप किए, एक जानी-पहचानी आवाज ने उसके मन के दरवाजे पर हौले-से दस्तक दी। उसे याद आया मां के बीमार होने से पहले जब वह नाना-नानी के घर रहने गया था तो उन्होंने उससे बिल्कुल ऐसे ही कहा था। और नई मां जब स्कूल जाने के लिए सुबह-सुबह नींद से उठाती हैं तो उनकी आवाज बिल्कुल मां जैसी मीठी लगती है। वह सोच में पड़ गया।

“मैं रोकूंगी नहीं तुझे ... तुझे अच्छा लगता है तो जा। परंतु तेरे बिना मुझे यहां बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा।” कल्याणी का गला भर आया।

“मैं सौतेली मां हूं ना तेरी ... अधिकार से रोक भी तो नहीं सकती।” कल्याणी फफक-

फफककर रो दी। हाथ में रखा कौर थाली में वापिस रख मनोज वहां से उठ गया।

दोपहर का वक्त था। मनोज हवेली की छत पर चढ़कर पत्थर मार-मारकर कैरियां तोड़ रहा था। नीचे खड़ा राजू कैरियां समेट रहा था। एक बड़ा-सा पत्थर तभी वहां से गुजर रही कल्याणी के सिर से टकराया। वह वहीं सिर पकड़कर बैठ गई। चोट गहरी थी और सिर से काफी खून बहने लगा था। समेटी गई सारी कैरियां राजू के हाथों से छूटकर जमीन पर बिखर गई और वह डरकर अपने घर भाग गया। मनोज ने जब कल्याणी के सिर से खून बहता देखा तो वह भी सहम गया पर कुछ कहने की उसकी हिम्मत नहीं पड़ी। सारा दिन वह इसी ख्याल से गुमसुम रहा कि अगर नई मां ने उसकी शिकायत लगा दी तो आज उसकी पिटाई जरूर हो जाएगी।

गांव के डॉक्टर को बुलाकर कल्याणी की मरहम-पट्टी करा दी गई। कल्याणी ने सभी को यही बताया कि पैर फिसल जाने से वह गिर पड़ी थी। वह जानती थी कि यदि उसने सच बोल दिया तो वीर

प्रताप मनोज की पिटाई कर देगा। पहले भी वह उसे पत्थर से कैरियां तोड़ने के लिए डांट चुका था।

अगले दिन कल्याणी को तेज बुखार हो गया। डॉक्टर दवा देकर चला गया। लेकिन उसे इतनी कमजोरी आ गई कि वह पलंग से उठ भी नहीं पा रही थी। पता नहीं बुखार सिर पर लगी चोट की वजह से हुआ था या किसी अन्य वजह से। वह खुद नहीं जानती थी। लेकिन मनोज मन ही मन अपने-आपको अपराधी महसूस कर रहा था। उसे लगता कि सिर में लगी चोट से ही नई मां बीमार हुई है। उसकी आंखों के सामने एक धुंधला-सा अक्स उभरा जब उसकी मां भी ऐसे ही पलंग पर बीमार लेटी हुई थी।

सुमित्रा के पति की छुट्टियां समाप्त हो गई थीं और अगले ही दिन उन्हें शहर लौटना था। मनोज का सारा सामान भी उन्होंने पैक कर लिया।

रात कल्याणी की तबियत ज्यादा खराब हो गई। सुमित्रा का कल्याणी को इस तरह बीमार छोड़कर जाने का बिल्कुल मन नहीं

था लेकिन दूसरी ओर मनोज को साथ ले जाने का मोह भी वह छोड़ नहीं पा रही थी। पता नहीं कल को

“मनोज चला गया क्या?” अगली सुबह खटर-पटर की आवाजें सुनकर कल्याणी ने पूछा।

“दस बजे की बस है उनकी।” अम्मा ने बताया। “डाक्टर कहता है ज्यादा चिन्ता की बात नहीं है फिर भी वीर कह रहा था कि पहले भैया-भाभी को विदा कर दें उसके बाद तुझे बड़े अस्पताल ले चलेंगे।”

“मैं अस्पताल जाकर क्या करूंगी अम्मा ... मामूली बुखार ही तो है। यहीं दवाइयां लेती रहूंगी ... कुछ नहीं हुआ है मुझे। मनोज जब जाए तो मुझसे जरूर मिल ले ...।”

बस का वक्त हो चला था और मनोज का कहीं पता नहीं था। आसपास सब जगह स्वयं वीर प्रताप जाकर ढूँढ आया। तभी राजू ने बताया — “मनोज तो वहां मंदिर की सीढ़ियों पर बैठा है।”

वीर प्रताप को बहुत गुस्सा आया — “देख अम्मा! इसे पता है कि जाना है फिर भी मंदिर में खेलने पहुंच

गया। दिन—ब—दिन जिद्दी होता जा रहा है।”

मंदिर पहुंचकर वीर प्रताप ने देखा मनोज आंखें बंद कर भगवान की प्रतिमा के आगे बैठा कुछ बुदबुदा रहा है। झुंझलाहट में उसने एक झटके से बांह पकड़कर उसे उठा दिया — “तू यहां क्या कर रहा है ... ? यहां सब तेरा इंतजार कर रहे हैं।”

अम्मां—बाबूजी बहू—बेटे को हिदायतें देने में व्यस्त थे। वीर प्रताप तांगे में सामान चढ़ा रहा था। खिड़की के पास पलंग पर लेटी कल्याणी चुपचाप सबको जाने की तैयारी करते देख रही थी। अचानक उसने देखा कि कमरे के दरवाजे पर अपराधी मुद्रा में सहमा—सा मनोज खड़ा है। उसे

लगा अम्मां ने ही उसे उससे मिलने भेजा है।

“आ मौजी, मेरे पास आ। देख ध्यान से रहना यहां ... खूब पढ़ना।” कल्याणी की आवाज भर्रा गई।

“अच्छा ये बता अभी कहां चला गया था तू ...? सब कितना परेशान हो रहे थे। अपने दोस्त राजू से मिलने गया था न ...?”

“नहीं ...।” वह वहीं खड़े—खड़े ही बोला।

“फिर ...?”

“पीपल वाले मंदिर में भगवान जी से प्रार्थना करने गया था कि वो आपका बुखार जल्दी ठीक कर दें।” मुंह नीचा किए वह वहीं से बोला।

“मुझे क्या हुआ है ...? थोड़ा बुखार ही तो है। तू यहां अच्छी तरह रहना ... जिद मत करना ...।” कुछ देर कल्याणी भीगी आंखों से उसे देखती रही फिर उसने बाहें फैला दीं —

“आ इधर आ मेरे पास ... यहां दूर क्यों खड़ा है। आ तुझे प्यार कर लूं। पता नहीं फिर कब ...।” कल्याणी की आवाज रुंध गई और आंसुओं का सैलाब उसके चेहरे को भिगोने लगा।

मनोज दौड़कर कल्याणी के सीने से चिपट गया। रोकी गई रूलाई का बांध टूटा तो कल्याणी हतप्रभ रह गई।

“मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा मां ... तुम्हारे पास ही रहूंगा ... नहीं तो भगवान जी तुम्हें अपने घर ले जाएंगे और दोबारा तुम्हारी शक्ल बदल देंगे ...।” कल्याणी के सीने से लग वह हिचकियां ले—लेकर रोने लगा।

कल्याणी ने उसे कसकर अपने सीने से लगा लिया — “हां, तू कहीं नहीं जाएगा मेरे बच्चे ... यहीं रहेगा ... मेरे पास ... अपनी मां के पास।



राजगीर पर्यटन एवं यात्रा वृत्तांत



श्री नीतीश कुमार,
लेखापरीक्षक/हिन्दी अनुभाग
कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा,
मध्य रेल, मुंबई, छ.शि.म.ट.

राजगीर भारत के बिहार राज्य की राजधानी पटना से 100 किमी दक्षिण-पूर्व में नालंदा जिले में स्थित हरी-भरी घाटी और चट्टानी पहाड़ियों से घिरा घने जंगलों, रहस्यमयी गुफाओं और झरनों के बीच प्राकृतिक शांति वाले एक ऐतिहासिक/प्राचीन नगर के साथ-साथ वर्तमान समय में एक सुंदर हेल्थ रिजॉर्ट के रूप में भी पर्यटकों के बीच लोकप्रिय हैं।

इतिहास

राजगीर का प्राचीन नाम राजगृह था। महाभारत के समय से 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व तक मगध साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी, राजगृह का एक अलग ही अपना ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व हैं। गिरिब्रज और कुशग्रपुर के नाम से भी प्रसिद्ध रहे राजगृह (राजाओं का निवास) को आजकल राजगीर के नाम से जाना जाता है। यहीं पर गौतम बुद्ध ने गृधाकुटा (गिद्ध शिखर) के शिखर पर ध्यान करते हुए काफी समय बिताया था। जिसके कारण राजगीर को भगवान बुद्ध की साधना-भूमि भी कही जाती हैं। जैनग्रंथ विविध तीर्थकल्प के अनुसार राजगीर भीम, जरासंध, बुद्ध,

महावीर, बिम्बिसार और अजातशत्रु आदि प्रसिद्ध शासकों का निवास स्थल रहा है। जरासंध ने राजगीर में ही भगवान श्रीकृष्ण को हराकर मथुरा से द्वारिका जाने को विवश किया था। हिन्दु, जैन और बौद्ध तीनों धर्मों का समग्र धार्मिक स्थल राजगीर तीनों धर्मों के पर्यटकों के पर्यटन के लिहाज से अत्यंत रमणीय है। विशेष रूप से बौद्ध धर्म से इसका काफी प्राचीन संबंध है। बुद्ध न केवल कई वर्षों तक यहां ठहरे थे बल्कि कई महत्वपूर्ण उपदेश भी यहाँ की धरती पर दिये थे। बौद्ध धर्म की प्रथम संगीति भी यहीं आयोजित हुई थी।

पर्यटन

पर्यटकों हेतु राजगीर में कई दर्शनीय स्थल हैं। पर्यटन के दृष्टिकोण से यहाँ वर्ष में अक्तूबर से मार्च माह तक का समय सबसे बेहतरीन होता है जिसमें पर्यटकों को विशेष तौर पर अक्तूबर माह में आयोजित राजगीर महोत्सव बिहार के संस्कृति से, शास्त्रीय नृत्य इत्यादि का सुंदर प्रदर्शन से रु-ब-रु करवाता है। राजगीर भ्रमण हेतु पर्यटकों के लिए 2-3 दिन का समय पर्याप्त हैं।

यहाँ स्थित प्रमुख पर्यटन स्थल:

1. विपुलाचल पर्वत:



जैन धर्म के 24 वे तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की प्रथम वाणी इसी विपुलाचल पर्वत से ही घिरी थी, उन्होंने समस्त विश्व को “जिओ और जीने दो” दिव्य सन्देश विपुलाचल पर्वत से दिया था।

2. गिद्ध शिखर:



इसे गिद्धकुटा भी कहा जाता है। यह बौद्धों के लिए महत्वपूर्ण तीर्थ स्थल है। यहाँ गौतम बुद्ध ने कई वर्षों तक उपदेश दिया था।

3. वेलुवन:

राजा बिंबिसार ने भगवान बुद्ध को उनके निवास हेतु वेलुवन दान में दिया था। वर्तमान समय में यहाँ एक खूबसूरत पार्क है। उसमें पर्यटक बांस, फूल और केंद्र



में बुद्ध की छवि वाला एक बड़ा तालाब देख सकते हैं। जो राजगीर में घूमने हेतु अत्यंत खूबसूरत जगह हैं।

4. बिंबिसार का बंदी गृह :



गिद्धकूटा पहाड़ी पर स्थित स्थल जहां अजातशत्रु ने अपने पिता से कारावास की जगह का चयन करने के लिए पूछा था। बिम्बिसार भगवान बुद्ध के अनुयायी थे अतः उन्होंने यही स्थल चुना, वे चाहते थे कि वहाँ से वे भगवान बुद्ध को देख सकें।

5. सप्तपर्णी गुफा —

यह राजगीर की पहाड़ी में स्थित एक गुफा है। यहाँ गरम जल का एक स्रोत है जिसमें स्नान करने से स्वास्थ्य लाभ होता है। यह हिन्दुओं के लिये पवित्र कुण्ड है। यहाँ ही पहली बौद्ध परिषद आयोजित हुई थी।



6. मणियार मठ —

यह एक अष्टकोणी मंदिर है, जिसकी दीवारें गोलाकार हैं। यहाँ परिसर में आप कई राजकुलों की छाप देख सकते हैं, जैसे गुप्त राजकुल का धनुष, आज पुराने राजगीर के बीचों-बीच स्थित है और यह महाभारत में उल्लिखित मणि-नाग का समाधि स्थल माना जाता है।



7. स्वर्ण भंडार —

ऐसा कहा जाता है कि जरासंध एवं राजा बिंबिसार का खजाना अभी भी यहां मौजूद है। और उसको खोलने की कुंजी दीवारों पर शिलालेखों में देखने को मिलती है। परंतु आजतक कोई भी उसको खोल नहीं पाया है।



8. स्तूप —

यह विश्व शांति स्तूप के रूप में प्रसिद्ध हैं। इसे जापानियों ने विश्व शांति के प्रतीक के रूप में स्थापित किया था। यह गिद्धकुटा पहाड़ी के ऊपर स्थित हैं। संगमरमर का यह स्तंभ बुद्ध की चार स्वर्ण प्रतिमाओं को प्रदर्शित करता हैं जो उनके जीवन के विभिन्न चरणों को दर्शाती हैं। जैसे की जन्म, ज्ञान, उपदेश और मृत्यु।



9. मखदूम कुंड —

यह मुस्लिम धर्म के लोगों के लिए एक धार्मिक स्थल हैं। क्योंकि यहाँ मुस्लिम सूफी संत मखदूम शाह की दरगाह है। पर्यटक यहाँ भी तपोधर्म की तरह कुछ गर्म झरनों की यात्रा कर सकते हैं। यह धार्मिक स्थल कई पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता हैं। क्योंकि



यहाँ का खूबसूरत नजारा एक बार जरूर देखने योग्य है।

10. वीरायतन संग्रहालय –

यह एक आकर्षक जैन संग्रहालय है। यह जैन धर्म से संबन्धित कुल 24 जैन तीर्थकरों में से प्रत्येक के इतिहास को प्रदर्शित करता है। इसमें लकड़ी और धातु से बने 3-डी पैनल चित्रण जैसे अलंकृत गुड़ियाघर हैं। साथ ही यहां एक कलाकार अरहर्या श्री द्वारा प्रदर्शित कई अद्भुत कलाओं को भी देख सकते हैं। यह संग्रहालय पर्यटकों हेतु प्रमुख आकर्षण का केंद्र है।



11. घोरा कटोरा एवं पांडु पोखड़ –

घोरा कटोरा राजगीर के सबसे आकर्षित स्थानों में से एक है। यहाँ एक झील है जिसमें एकदम स्वच्छ जल पाई जाती है और यह पिकनिक जैसे गतिविधियों के लिए उपयुक्त जगह है। साथ ही पांडु पोखड़ यहां का एक खूबसूरत प्राकृतिक पार्क है जो पर्यटकों को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। यह जगह राजगीर के राजहारा पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है यहाँ बच्चों और परिवार के साथ आया जा सकता है।



12. राजगीर कुंड –

राजगीर में गर्म पानी का कुंड है। पौराणिक कथाओं/मान्यताओं के अनुसार ब्रह्मा जी के मानस पुत्र राजा बसु ने राजगीर के ब्रह्मकुंड परिसर में एक यज्ञ का



आयोजन कराया था। इस दौरान यहाँ आए देवी देवताओं को एक ही कुंड में स्नान करने से परेशानी होने लगी तभी ब्रह्मा जी ने यहाँ पर 22 कुंड और 52 जलधाराओं का निर्माण करवाया था। यह कुंड वैभवगिरि पर्वत पर स्थित मंदिर के बीच में स्थित हैं। चूंकि इस कुंड का जल हमेशा गर्म रहता है। अतः यहाँ आने वाले पर्यटक सर्दी के मौसम में आते हैं।

13. राजगीर जू सफारी –

यहाँ वाइल्ड लाइफ जू सफारी से सटे नेचर सफारी भी स्थित है जिसका लुप्त पर्यटक उठा सकते हैं। जू सफारी में भ्रमण करने पर खुले में घूमते शेर, भालू, बाघ, आदि जानवर यहीं देखने को मिलते हैं। जिन लोगों को वाइल्ड लाइफ एडवेंचर, फोटोग्राफी पसंद है ऐसे लोगों के लिए यह आकर्षण का केंद्र होता है। वही नेचर सफारी प्राकृतिक वादियों में पर्यटकों हेतु दर्शन स्पॉट बनता जा रहा है।



14. राजगीर टूरिस्ट रोपवे –

बिहार के सबसे खास पर्यटन स्थल के तौर पर राजगीर लगातार आगे बढ़ रहा है। राजगीर के रोपवे



में बैठकर आप राजगीर का नजारा देख सकते हैं। इस रोपवे से आप पहाड़ों में बने विश्व प्रसिद्ध शांति स्तूप तक जा सकते हैं। यहां पर दो अलग-अलग प्रकार के रोपवे बने हुए हैं जो एक पौराणिक समय के हैं और एक का अभी हाल ही में निर्माण हुआ है। इस रोपवे में बैठने के बाद टूरिस्ट प्राकृतिक खूबसूरती को महसूस कर सकते हैं। यह घूमने के दृष्टिकोण से एक शानदार जगह है। सुंदर वादियों-पहाड़ों के बीच इस रोपवे में बैठना अपने आप में ही एक अद्भुत अनुभव है।

15. राजगीर स्थित सीसे का पुल –

विश्व का पहला ग्लास स्काई वॉक चीन में बनाया गया था जबकि अपने देश भारत में सबसे पहला ग्लास स्काई वॉक/शीशे का पुल सिक्किम के पेल्लिंग में स्थित वर्तमान में बिहार में नालंदा जिले के राजगीर में देश का दूसरा ग्लास स्काई वॉक/शीशे का पुल अभी-अभी पिछले वर्ष बनाया गया है। 85 फीट लंबा और 5 फीट चौड़ा यह पुल वैभवगिरि पहाड़ियों के दो चोटियों के बीच बना यह शीशे का पुल एक किस्म का छज्जा है जिस पर खड़े होकर आप ठीक 100 फीट

नीचे गहरे खाई को देख सकेंगे। इस पर चलते हुए मानो आकाश में चलने जैसा महसूस होता है। यह अनुभव पर्यटकों हेतु बेहद रोमांचकारी है।

राजगीर पहुँचने हेतु — बिहार में स्थित राजगीर राजधानी पटना के दक्षिण-पूर्व में लगभग 100 किमी दूर है। पटना दूसरे शहरों के लिए जुड़े उड़ानों के साथ राजगीर का निकटतम हवाई अड्डा है।

— रेलवे मार्ग से राजगीर आने हेतु निकटतम रेलवे स्टेशन राजगीर है, जो पटना, कोलकाता और नई दिल्ली से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। पर्यटक राजगीर के रेलवे स्टेशन से कैब या रिक्शे की सहायता से उसके सभी पर्यटक स्थल को बहुत आसानी से देख सकते हैं।

— राजगीर सड़क मार्ग के साथ पटना, बोधगया और नजदीकी शहरों से बसों से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।

— राजगीर में निवास हेतु काफी सारे अच्छे होटल एवं गेस्ट हाउस इत्यादि उपलब्ध हैं। यहाँ खाने पीने से लेकर सभी प्रकार की सुविधा उपलब्ध है। इस शहर के भोजन की बात करे तो उत्तर भारतीय व्यंजनों के समान हैं। उसके अलावा यहां जापानी, थाई, कोरियाई और चीनी व्यंजन का भी लुत्फ़ उठा सकते हैं। यहाँ बिहारी व्यंजन खाजा मिठाई, खोरमा, लॉन्ग लता, केशर पेड़ा, लिट्टी चोखा, चना घूघनी, लाई, खीर मखाना, तिलकुट, खोया अनारसा, पुड़िया आदि सबसे लोकप्रिय और आसानी से उपलब्ध हैं।



वक्त का तकाजा



धर्मवीर भारती
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
दक्षिण मध्य रेलवे, सिंकदराबाद

खामोश रहकर कितनी ही खताएं कर दी उसने,
हमने जरा सा बोल क्या दिया, गुनाहगार हो गए।
जब तक होती रही जरूरतें पूरी उनकी हम बड़े काम के थे,
जब मतलब निकल गया तो हम बेकार हो गए।
तैयार लिए बैठे थे जो अपने हाथों में खंजर,
आज वे ही उनके सिपहसालार हो गए,
कल तक सुखियां बनी थी जो खबरों की,
आज वे बासी अखबार हो गए,
ऐसे तो भले चंगे थे, दिन भर लगते थे ठहाके,
जब काम का वक्त आया तो, वे बीमार हो गए।
दूर भागते थे जिनसे कभी उनके बुरे वक्त में,
उन्हें दौलत क्या मिली वे करीबियों में शुमार हो गए।
बहुत अरमान था दिल में लड्डंगा गर गलत लिखा कुछ भी
अकेले पड़ गए हम,
बेबस और लाचार हो गए।
फुर्सत न थी जब तक वे नौकरी करते रहे,
अब रिटायर हैं, सभी दिन इतवार हो गए।

चैम्बर से बुलावा



श्याम दत्त मिश्रा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

चैम्बर से बॉस का बुलावा आया
मेरा हाथ पैर थरथराया
दो बार मैं हल्का हो आया
शीशे में अपने बाल
और शर्ट के बटन भी ठीक कर आया

चैम्बर के बाहर थी कुछ भीड़
चेहरे थे सबके कुछ धीर-अधीर
साँसे थी कुछ की रुकी हुई
और कुछ की
कुछ ज्यादा ही तेज थी चल रही

थोड़ी ही देर बाद
आ गया मेरा नंबर
बुलाया गया मुझे अंदर
दरवाजे से ही किया मैंने अभिवादन
पा इशारा ग्रहण किया आसन

अब अपने हर काम की मैं
व्याख्या कर रहा था
पर मेरे हर काम की
बखियाँ उघड़ रही थी
न जाने
कितनी गलतियाँ निकल रही थी
सर मेरा जमीं पर धँसा जा रहा था
हाँ मैं फटकार खा रहा था

कुछ देर बाद –
थके-थके से वे दिखने लगे
फिर, जाने का इशारा किया मुझे

मैं बाहर निकल आया
लटका मुँह ले आया
जैसे ही श्यामलाल ने मुझे देखा

दशा मेरी वह शीघ्र समझ गया
बड़े प्यार से कंधे पर मेरे
रख हाथ उसने थप-थपाया
और पिलाने चाय मुझे ले आया
अब चाय की चुस्की थी
और उसकी दिल छूती बातें थी

कुछ यूँ अब कहने लगा –
बॉस का रवैया कैसा भी हो
प्रशंसा हो या हो फटकार
उनकी प्रशंसा पर
तुम इतराना नहीं
और फटकार पर
मुँह ऐसे लटकाना नहीं
मानता हूँ काम में
ऊँच-नीच हो जाती है
पर मूड-मूड की भी बात होती है
अपना खराब मूड
कई बार

बच्चों पर निकल जाता है
सबकी है अलग-अलग परेशानियाँ
है यहाँ अपनी-अपनी कहानियाँ
हो सकता है
गृह मंत्रालय से उनकी हुई हो लड़ाई
न हो सकी हो पूरी कोई फरमाईश
इसका भी असर दिखता है भाई!
गुस्सा कहीं का कहीं निकल जाता है
पानी ऊपर से नीचे ही आता है
ऐसे उन्हें भी
देना होता है ऊपर जवाब
देना होता है
अपनी जवाबदेही का हिसाब

यार! बॉस की डांट का
बुरा मत माना करो
शर्ट पर जमीं धूल समझ
झाड़ डाला करो
साहब हैं उनका यह काम है
हमें बुरा मानने का कहाँ अधिकार है
और बुरा मान भी लिया
तो क्या करोगे?
बी.पी., डायबिटीज को निमंत्रण दोगे
या इन गोलियों में इजाफा करोगे
एक कहावत नहीं सुनी –
काम करने वालों से ही
होती है गलती और
इन्हीं महापुरुषों को फटकार भी लगती

मैंने कहा यार –
तेरी भी तो हुई है खूब खिंचाई
तू कैसे हँस लेता है भाई

कहा उसने –
मैंने कुछ बेशर्मी की गोली है खाई
मस्त रहने की यही है एक दवाई

चाय की चुस्की
और श्यामलाल की बातों से
मन मेरा हल्का हो गया
थोड़ा बेशर्म क्या बना
सारा तनाव मेरा रफूचक्कर हो गया

पगली-दीवानी



मेहरबान सिंह नेगी
वरिष्ठ प्रशासन अधिकारी (से.नि.)
भूखण्ड 191 (एफ-2), वैशाली,
सेक्टर-4, गाजियाबाद, उ.प्र.

तू ही दीवानी कहता था
तू ही पगली समझता था
चला के दो बाण अपने
यूं ही घायल भी करता था।
तेरे तीरों से हुई घायल मैं,
अलाप प्रलाप करती थी।
ठिठक जाती थी अचानक,
मैं बदनामी से डरती थी।

ले कर डिग्री डॉक्टर की
यूं हर प्रयत्न करता है
तू करता लेप मरहम का
स्वयं आहें भी भरता है।
ना तू दूर है मुझ से —
ना मैं दूर हूं तुझ से।
हकीमत है हकीकत में तो
क्यों दोष दूं किस्मत को।

बादल और धरती का
जो शब्द-चित्र खींचा है
उन्हीं भावों में भर के

रिश्ते को भी सींचा है।
मैं धरती-सी ही पगली हूँ
तू बादल-सा दीवाना हूँ।
मैं पगली हूँ दीवानी हूँ
ये जमाने भर ने जाना है।

लगे पर दो नजर आए
उड़ी फुर्र ऊंचे अम्बर पे
तू बादल रूप धर आया
बाहों का हार संग लाया।
सितारों से भरा पूरा
अजब प्यारा वो अम्बर था।
बादल और धरती का
गजब का वो स्वयंवर था।

ना तुझ से दूर थी माना
न मुझ से दूर था जाना
मैंने जानू कह डाला
देहली वाली हमराज
उस दिलरुबा शहनाज की
इस दिल में बसी सूरत

कभी खण्डकर न होगी
उसका जवां कमसिन
रंग रूप हुस्न सहजता
अप्पन के कफन से
पहले तक काख होगी।
वह बेदाग तो इस जहां में
जहां कहीं हो सलामत रहे
पर्दा नसीं की दिल में बसी
सिर्फ वे जवां हसीं यादें
मेरी आखरी सांस के साथ
जवां ही सुपुर्देखाक होगी।
मेरे जनाजे नमाज का जिक्र कोई
नादां से न करे तो ये
बड़ी इनायत की बात होगी
वरना उस मोहतरमा के नाक-मुख से
निकलती जज़्बाती तरन्नुम के संग
चश्म से अकस्मात ताल मिलती
तपतपाती बरसात होगी
उसके रिहायशी शहर में दिन में
सैलाब आएगा भीगी रात होगी।

गज़ल



रामानन्द शर्मा

76/55 शिप्रा पथ, मानसरोवर,
जयपुर (राजस्थान)–302020

उतर आये हैं आसमां से जमीं पर सितारे
किस्मत चमकी है जैसे खुल गये भाग्य हमारे॥
बज उठी है दुदुंभी गगन में चारों तरफ
पुष्प विमान सज रहे हैं, बज उठे हैं नगाड़े॥
खो गये हैं धरा पर आकर तारे अपना वजूद
आसमां से नाता टूटा, सुध-बुध सभी विसारे॥
सम्पदा सारी बटोर लाये हैं आसमां से
सितारों ने जैसे अपने गहने हो उतारे॥
मणियों से किया श्रृंगार, धरा बदल गई
देवता संग जैसे भगवान हो पधारे॥
सजाया है धरा को स्वर्णिम आभा से
झिलमिल सितारे लगते हैं कितने प्यारे॥
फुलकित हो उठी धरा आगमन से इनके
पर्वत-पर्वत छाई छटा जैसे वृक्ष को सँवारे॥
अब न जाने दूँगा आसमां में दुबारा
कैद कर लूँगा बाँहों में चाहे कितना हाथ-पाँव मारे॥

अपने जीवन की गिनती करें

एन. मोहनाप्रिया
लेखापरीक्षक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.प.-I)
तमिलनाडु, लेखापरीक्षा भवन,
361, अण्णा सलाई, चेन्नै-600018

जिनका कोई रंग नहीं उन्हें रंग की जरूरत है,
जिनके पास रंग हैं उन्हें शिक्षा नहीं है,
जिनके पास पढ़े-लिखे उन्हें नौकरी नहीं है।
जो लोग नौकरीपेशा हैं उनकी शादी नहीं हुई है,
शादीशुदा लोगों के बच्चे नहीं होते हैं।
जिन लोगों के बच्चे हैं उनकी कोई आय नहीं है,
जिनके पास आय है उन्हें कोई खुशी नहीं है,
जिनके पास सुख है, उनमें शारीरिक शक्ति नहीं है,
जिनके पास शारीरिक शक्ति होती है,
उनमें मानसिक शक्ति नहीं होती है,
मजबूत मन के लिए कोई दुख नहीं है,
जीवन में किसी के पास सब कुछ नहीं है,
अपने सच्चे आशीर्वाद को स्वीकार करें और
अपने जीवन की गिनती करें।

आपकी हँसी

गोविन्द कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय
बेंगलूरु-560001

मैं कवि नहीं, फिर भी कविताएं करता हूँ
हर एक चेहरे पर मुस्कान हो,
बस यही दुआएँ करता हूँ।

किसी भी परिस्थिति में,
जब मेरा दिल गुनगुनाएँ,
लोग समझते हैं, नये-नये कवि
धरती पर उतर आये।

आरोप है, हास्य, छायावाद
जैसी कविताएं लिखते हैं,
पर आप समझ ही न सकें,
हम तो बस आपकी
छुपी हँसी ढूँढते हैं।

तसल्ली है,
भावना व्यक्त करने का मेरा
ये अंदाज आप सभी को भाया है,
क्षण भर के लिए ही सही,
आपका दिल तो मुस्कुराया है।
बस इसी मुस्कुराहट के लिए,

एक प्रयास करता हूँ,
गम तो बहुत होते हैं जिंदगी में,
बस खुशियाँ तलाश करता हूँ।

तभी तो, बचपन की यादें,
याद कर आप उछल जाते हैं,
और बच्चों की तोतली तान पर
आप भी तानसेन बन जाते हैं।

इसलिए कहता हूँ,
खुशियों के साथ जीओ,
गम तो आते रहेंगे,
और बीच-बीच में,
हमारे जैसे कवि आकर
आपको गुदगुदाते रहेंगे।

अब अंत में,
बस यही तमन्ना है,
आपके दिलों में थोड़ी सी जगह पायें,
पलभर के लिए ही सही,
आपकी हँसी/खुशी भी ढूँढ लायें।

प्रियतम



जितेन्द्र कुमार गंगवार (जय)
वरिष्ठ लेखापरीक्षक
वित्त एवं संचार लेखापरीक्षा कार्यालय,
ऑडिट भवन, विभूति खण्ड,
गोमती नगर, लखनऊ-226010

पुष्प कहूं या गुल कहूं
तुम तो गुलशन प्यारी हो।
मन्जरी कहूं या लता कहूं
तुम खुद ऐसी फुलवारी हो॥

कुसुम कहूं या प्रसून कहूं
तुम हो उद्यान, तुम क्यारी हो।
डैफोडिल की बगिया हो तुम,
तुम ही 'प्रियतम' हमारी हो॥

चन्दन सी है शीतलता और,
चन्द्रमा सा मुख मण्डल।
मिला है जबसे साथ जो तेरा,
हो गये हैं हम खुद से निर्मल॥

तुमसे मिलकर जाना कि तुम,
उत्तमांश सी न्यारी हो।
डैफोडिल की बगिया हो तुम,
तुम ही 'प्रियतम' हमारी हो॥

'जय' यही दुआ है खुश रहो,
हर घड़ी खुशहाली हो।
गम कभी तुम्हारे पास न आये,
बस खुशियों की हरियाली हो॥

पुष्प कहूं या गुल कहूं
तुम तो गुलशन प्यारी हो।
डैफोडिल की बगिया हो तुम,
तुम ही 'प्रियतम' हमारी हो॥

माँ



सुश्री ज्योति यादव

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. एवं हक.)

361, अण्णा सलाई,

तमिलनाडु, चेन्नै-600018

वैसे तो दुनियाँ की सारी माएँ एक सी हैं,
 पर उनमें से भी मेरी माँ लगती कुछ अलग सी हैं
 उन्होंने हर वक्त मुझे चाहा हैं,
 हार में संभाला और जीत को सराहा हैं।
 खुशियों से लेकर गमों में वो मेरे साथ हैं,
 लगता है वो मेरा दाहिना हाथ हैं।
 मेरी खुशियों में उनकी आँखें डबडबाती हैं,
 तो गमों में वो जीजाबाई बनकर आती हैं।
 हमारे लिए उन्होंने अपना सब कुछ दाँव पर लगाया हैं।
 पर बदले में कुछ लेने का ख्याल भी नहीं आया हैं।
 हमें उदास देखकर वो अपना सब कुछ भूल जाती हैं,
 लेकिन हमारे चेहरे पर मुस्कान देखते ही वो खिलखिलाती हैं।
 हमारे सपनों को ही उन्होंने अपना सपना बनाया हैं,
 फिर उनको पूरा करने के लिए रात को भी दिन बनाया हैं।
 वो मेरी माँ हैं, दोस्त है और है एक सहेली,
 पर कभी-कभी लगती हैं वो एक अजीब सी पहेली।
 उनकी दुनियाँ हमसे ही शुरू है और हम पर ही खत्म,
 हमारे लिए किया उन्होंने अपनी खुशियों को भी सितम।
 हमें देख कर उनकी मुस्कान है खिलती,
 क्योंकि हमारे अन्दर उनकी जान हैं बसती।
 हमारे जन्मदिन पर तो दावत है खिलाई,
 पर, अपना जन्मदिन वो याद ही ना रख पाई।
 लोग कहते हैं कि माँ भगवान का रूप हैं,
 पर मैं तो कहती हूँ कि भगवान ही माँ का रूप हैं।



Google Hindi Input Tools Offline
ट्रांसलेशन यानी कि लिप्यंतरण पर काम करता है, इसका अर्थ होता है कि आप जो भी अक्षर लिखते हैं वह एक भाषा के अक्षर को दूसरी भाषा में कन्वर्ट कर देता है। जब आप यहां Hello लिखते हैं तो वह 'हेलो' में कन्वर्ट हो जाता है।





पंजीकरण सं-2 एल (9)/8747177/87(90)



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक का कार्यालय
9, दीन दयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110124